सुप्रभात
रांची, शनिवार
18.11.2023
* नगर संस्करण । पेज : 12

धरती आबा की ऊर्जावान भूमि से प्रकाशित लोकप्रिय दैनिक

खबर मन्त्र

सबकी बात सबके साथ

khabarmantra.net कार्तिक, शुक्ल पक्ष, पंचमी संवत 2080 मूल्य : ₹ 3 । वर्ष : 11 । अंक : 126

12 अक्षरा सिंह का नया गाना *छठी मईया करिहा दुलार* रिलीज

न्यूज डायरी

मैट्रिक और इंटर की परीक्षाएं 6 फरवरी से

रांची। झारखंड अधिविधि परिषद (जैक) ने राज्य में मैट्रिक और इंटर परीक्षा तिथियों की घोषणा कर दी। जैक बोर्ड की ओर से जारी शेड्यूल के अनुसार ये परीक्षाएं 6 फरवरी से शुरू हो कर 26 फरवरी तक चलेंगी। जैक के अनुसार मैट्रिक में करीब 4 लाख और इंटर में 3 लाख परीक्षार्थी शमिल होंगे।

पोलिंग पार्टी पर हमला आइटीबीपी जवान शहीद

नयी दिल्ली। छत्तीसगढ़ के गरियाबंद जिले में नक्सलियों के आइडी धमाके में पोलिग पार्टी में शामिल आइटीबीपी का एक जवान शहीद हो गया है। बिंद्रानवागढ़ सीट पर मतदान के बाद लौट रही पोलिंग पार्टी पर नक्सलियों ने घात लगा कर यह हमला किया। वहीं दूसरी ओर छत्तीसगढ़ में दूसरे चरण और मध्य प्रदेश की सभी विधानसभा सीटों पर शुक्रवार को क्रमशः 68.15 प्रतिशत और 71.16 प्रतिशत मतदान हुआ।

लातेहार में नक्सली ने किया आत्मसमर्पण

लातेहार। भाकपा माओवादी के एरिया कमांडर जितेंद्र नगेसिया ने शुक्रवार को लातेहार पुलिस के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। डीसी हिमांशु मोहन और एसपी अंजनी अंजन ने जितेंद्र नगेसिया को गुलदस्ता देकर स्वागत किया। गढ़वा के भंडारिया का रहने वाला जितेंद्र नगेसिया पिछले पांच वर्षों से संगठन से जुड़ा हुआ था।

जेल में गूंज रहे छठ के गीत, 6 बंदी कर रहे पर्व

रांची। बिरसा मुंडा केंद्रीय कारागार में भी छह कैदी छठ पर्व कर रहे हैं। जेल प्रशासन पूरी तैयारी करायी है। महापर्व को ले कर रांची जेल में भी पूरा माहौल छठमय हो गया है। जेल में सुबह-शाम छठी मईया के गीत गूंजने लगे हैं।

गहना आभूषण
सोना (बिक्री) : 57,700 रु./10 ग्राम
चांदी : 75,000 रु./प्रति किलो

गोईलकेरा के हाथीबेड़ा में धमाका, एक जवान शहीद

सीआरपीएफ अफसर समेत दो घायल, रांची एयरलिफ्ट

गुमला के थे संतोष उरांव

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची, चाईबासा। झारखंड के पश्चिमी सिंहभूम जिले के गोइलकेरा में आइइडी ब्लास्ट में शुक्रवार को सीआरपीएफ बम निरोधक दस्ता के कॉन्स्टेबल संतोष उरांव शहीद हो गये। वहीं एक अफसर समेत दो अन्य जख्मी हुए हैं। गोइलकेरा थाना क्षेत्र के हाथीबेड़ा जंगल में ये जवान एंटी नक्सल अभियान पर निकले थे। नक्सलियों ने पहले से ही आइइडी बम लगा कर रखा थे। अभियान के तौरान सुरक्षाकर्मी इसकी चपेट में आ गये। धमाके में सीआरपीएफ के

अधिकारी एजेतो तिने और जवान संतोष उरांव और जयंता नाथ घायल हो गये। गंभीर रूप से घायल सीआरपीएफ जवान संतोष उरांव शहीद हो गये।

घायल अधिकारी एजेतो तिने और जवान और दोनों जयंता नाथ को बेहतर इलाज के लिए रांची एयरलिफ्ट कर किया गया है। एक जवान की शहादत पर राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन और मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने गहरा शोक जताया है। (शेष पेज 11 पर)

जंगल से ही एयरलिफ्ट किया गया

इस विस्फोट की सूचना मिलते ही आनन-फानन में सीआरपीएफ के जवानों ने तीनों घायलों को जंगल से सुरक्षित बाहर निकाल कर हेलीपैड तक पहुंचाया। जहां हेलीकॉप्टर के माध्यम से दो सीआरपीएफ जवानों को रांची भेज दिया गया जबकि एक घायल का इलाज चाईबासा में ही किया जा रहा है।

महापर्व छठ शुरू, सीएम ने किया घाटों का दौरा

व्रतियों को कोई परेशानी न हो सभी व्यवस्था चुस्त रखें : हेमंत

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। लोक आस्था और सूर्योपासना का चार दिवसीय छठ महापर्व शुक्रवार को नहाय-खाय के साथ से शुरू हो चुका है। सीएम हेमंत सोरेन ने कांके डैम और हटनिया तालाब समेत कई छठ घाटों निरीक्षण किया और अधिकारियों को साफ-सफाई, सभी छठ घाटों को स्वच्छ और सुरक्षित रखने का निर्देश दिया। सीएम ने कहा कि महापर्व के दौरान व्रतधारियों और श्रद्धालुओं को छठ घाटों पर पूरी सहूलियत और सुविधा मिले। उन्हें किसी तरह की परेशानी नहीं हो इसे हर हाल में सुनिश्चित करें। सुरक्षा के साथ-साथ बिजली की उचित व्यवस्था भी पर्याप्त रहे, इसका ख्याल हर हाल में रखें। सीएम ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि नदी, तालाबों, डैमों और अन्य जलाशयों में जलस्तर और गहराई वाले स्थानों को चिन्हित कर वहां सुरक्षा की विशेष व्यवस्था करें। निरीक्षण के दौरान सीएम के सचिव विनय कुमार चौबे, एसएसपी चंदन कुमार सिन्हा और रांची नगर निगम के प्रशासक अमित कुमार मौजूद थे। (शेष पेज 11 पर)

रामचंद्र सिंह चुने गये बिरसा मुंडा उत्कृष्ट विधायक

22 को विधानसभा स्थापना दिवस पर होंगे सम्मानित

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। मनिका के कांग्रेस विधायक रामचंद्र सिंह बिरसा मुंडा उत्कृष्ट विधायक चुने गये हैं। स्पीकर रविंद्र नाथ महतो के आवास पर शुक्रवार को हुई विधायक उत्कृष्ट पुरस्कार चयन समिति की बैठक में यह फैसला लिया गया। विधानसभा के 23वें स्थापना दिवस समारोह में उन्हें सम्मानित किया जायेगा। बैठक में स्पीकर रविंद्रनाथ महतो, नेता प्रतिपक्ष अमर कुमार बाउरी, संसदीय कार्यमंत्री आलमगीर आलम, विधायक स्टीफन मरांडी,

कमलेश सिंह और पत्रकार आनंद मोहन मौजूद थे।

पांच कर्मी भी चयनित

चयन समिति ने विधानसभा के उत्कृष्ट कर्मियों का भी चयन किया है। जो पांच उत्कृष्ट कर्मी चयनित हुए हैं, इनमें माइका लकड़ा, मिथिलेश कुमार मिश्र, विष्णु पासवान, निलेश कुमार सिंह, नियाज अहमद और तपस कुमार शामिल हैं।

कृषि से राजनीति में आये रामचंद्र सिंह

रामचंद्र सिंह का जन्म लातेहार जिला के बरवाडीह प्रखंड में स्थित मंगरा नामक जगह में हुआ था । पेशे से वे राजनीतिज्ञ है, लेकिन राजनीति में कदम रखने से पहले वे कृषि से जुड़े हुए थे। उनके पिता का नाम गणपत सिंह है। वह पहली बार 1995 में जब झारखंड बिहार से अलग नहीं हुआ था, तब राजद से विधायक निर्वाचित हुए थे। तीन बार विधायक का चुनाव जीते हैं । हली बार 1995 में जीता, दूसरी बार 2005 में जीता और तीसरी बार 2019 में।

दिसंबर में बैंककर्मियों की महाहड़ताल, बढ़ेगी परेशानी

नयी दिल्ली। दिसंबर में बैंकों का कामकाज कई दिनों के लिए बंद रह सकता है क्योंकि अगले महीने कई दिन तक अलग-अलग बैंकों में हड़ताल रहेगी। ऑल इंडिया बैंक एंप्लाई एसोसिएशन ने इस मामले पर एक नोटिफिकेशन जारी करके ये जानकारी दे दी है। संघ ने दिसंबर 2023 में बैंकों में अलग-अलग तारीख पर हड़ताल का ऐलान कर दिया है। यह हड़ताल 4 दिसंबर से शुरू होकर 11 दिसंबर, 2023 के बीच चलेगी। 4 को एसबीआइ, पीएनबी में, 5 को बैंक ऑफ बड़ौदा और बीओआइ में हड़ताल रहेगी। 6 को केनरा बैंक, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया में हड़ताल रहेगी। 7 इंडियन बैंक और यूको बैंक में हड़ताल रहेगी। 8 को यूबीआइ, 9-10 को बैंकों में शनिवार और रविवार की साप्ताहिक छुट्टी। 11 दिसंबर, प्राइवेट बैंकों की हड़ताल रहेगी। प्रस्तावित हड़ताल से ग्राहकों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

मंदिरों में तोड़फोड़ से लोग उत्तेजित

खबर मन्त्र संवाददाता

मांडर। प्रखंड के मुड़मा गांव में चार मंदिरों में तोड़फोड़ और प्रतिमाओं को खंडित करने के खिलाफ गुस्साये ग्रामीणों ने एनएच-39 मुख्य पथ को लगभग 9 घंटे तक जाम कर दिया। सड़क के दोनों ओर वाहनों की लंबी कतार लग गयी। अधिकारियों के काफी समझाने बुझैने के बाद अपराह्न करीब ढाई बजे जाम समाप्त हुआ। घटना की खबर मिलते ही आसपास के कई गांवों से लोग वहां जुट गये। प्रशासनिक अधिकारियों ने तत्काल वहां पहुंच कर स्थिति संभाली। कई थानों के जवानों को वहां तैनात कर दिया गया है। डॉग स्क्वाड, एफएसएल की टीम, कॉल डंप को भी जांच को बुलाया गया। पर अबतक तोड़फोड़ करनेवालों का कोई सुराग नहीं मिल सका है। कई राजनेताओं और संगठनों ने मंदिर में तोड़फोड़ की कड़ी निंदा की है। जानकारी के अनुसार कुछ असामाजिक तत्वों ने मुड़मा गांव में स्थापित बजरंगबली की दो मूर्तियां, शिवलिंग तथा देवी मंडप में स्थापित प्रतिमाओं को तोड़ डाला। एक अन्य स्थान पर नया मंदिर बनाने के लिए गाड़े गये झंडे उखाड़ दिये। शुक्रवार को तड़के इसकी खबर मिलते ही आसपास के लोग उत्तेजित हो गये। विरोध में लोग रांची-मेदिनीनगर मुख्य पथ को जाम कर सड़क पर बैठ गये। जानकारी मिलते ही ग्रामीण एसपी मनीष टोप्पो और सदर एसडीओ दीपक कुमार दुबे अधिकारियों के साथ वहां पहुंचे। ग्रामीण और अधिकारियों के बीच वार्ता हुई, लेकिन वार्ता बेनतीजा रही। करीब दो बजे हिंदूवादी नेता भैरव सिंह घटनास्थल पर पहुंचे और उनकी अगुवाई में प्रशासन को एक मांग पत्र सौंपा गया।

गुस्साये ग्रामीणों ने 9 घंटे तक एनएच जाम रखा

चीफ जस्टिस ने किया जेल का औचक निरीक्षण

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। झारखंड हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस संजय मिश्रा ने शुक्रवार को रांची के बिरसा मुंडा केंद्रीय कारागार का औचक निरीक्षण किया। डालसा के अधिकारियों के साथ मुख्य न्यायाधीश अचानक रांची जेल पहुंचे थे। मुख्य न्यायाधीश ने लगभग एक घंटे तक रांची जेल का निरीक्षण किया। सरप्राइज विजिट पर पहुंचे मुख्य न्यायाधीश संजय मिश्रा ने जेल के अंदर प्रवेश करने के बाद सबसे पहले जेल अस्पताल का निरीक्षण किया। जेल अस्पताल में कैदियों के लिए दवाई उपलब्ध है या नहीं कितने डॉक्टर हैं सब की जानकारी मुख्य न्यायाधीश के द्वारा ली गई। कैदियों के इलाज को लेकर कई निर्देश जेल प्रशासन को मुख्य न्यायाधीश के द्वारा दी गयी। जेल अस्पताल का निरीक्षण करने के बाद मुख्य न्यायाधीश ने जेल रसोई घर का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने देखा कि कैदियों को मिलने वाला खाना हाइजेनिक तरीके से बनता है या नहीं। रसोई घर में साफ सफाई का ध्यान रखा जाता है कि नहीं इसका भी निरीक्षण मुख्य न्यायाधीश के द्वारा किया गया। (शेष पेज 11 पर)

डीप फेक और एआइ एक चुनौती, रोकने का तंत्र जरूरी : पीएम

मेरा ही फेक वीडियो गरबा करते दिखा दिया : मोदी

एजेंसी

नयी दिल्ली। पीएम मोदी ने शुक्रवार को मीडिया जगत से लोगों को 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' (एआइ) और 'डीप फेक' पर लोगों को शिक्षित करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि डीप फेक एक बड़ी चिंता बनता जा रहा है। उन्होंने कहा कि इस तकनीकी का इस्तेमाल कर कोई भी असंतोष की आग बहुत तेजी से फैला सकता है। पीएस नयी दिल् ली में पार्टी मुख्यालय में दिवाली मिलन समारोह में बोल रहे थे।

मुझे भी गरबा करते दिखा दिया

: आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' (एआइ) और 'डीप फेक' की चुनौती के संदर्भ में पीएम ने अपने ऐसे ही एक वीडियो का जिक्र किया, जिसमें वह गरबा खेलते दिख रहे हैं। पीएम ने कहा स्कूल के बाद बाद मुझे कभी गरबा गाने या खेलने का कोई अवसर ही नहीं मिला।

लेकिन एआइ और डीप फेक की मदद से हाल ही में एक वीडियो बनाकर प्रचारित कर दिया गया। इसमें मेरी कॉपी को हू-ब-हू गरबा खेलते हुए देखा जा सकता है। (शेष पेज 11 पर)

पत्रकारों के लिए स्वास्थ्य तंत्र

पीएम ने मीडिया हाउसों से 40 वर्ष से अधिक उम्र के पत्रकारों के लिए स्वास्थ्य देखभाल तंत्र विकसित करने का भी आग्रह किया। छोटी आयु के अनेक पत्रकारों के आकस्मिक निधन पर चिंतायी। साथ ही कहा कि कम से कम 40 वर्ष की आयु के बाद एक नियमित स्वास्थ्य जांच होनी चाहिए। पत्रकारों की तनावपूर्ण और आपाधापी पूर्ण दिनचर्या का हवाला देते हुए मोदी ने कहा कि सरकार और मीडिया हाउस मिलकर ऐसी कोई ऐसी व्यवस्था विकसित कर सकते हैं। मोदी ने भारत को 'विकसित भारत' बनाने के अपने संकल्प का भी जिक्र किया और कहा कि ये केवल शब्द नहीं बल्कि जमीनी हकीकत है। उन्होंने कहा कि 'वोकल फॉर लोकल' के आह्वान को जनता से व्यापक समर्थन मिला है। इस त्योहारी सीजन के एक सप्ताह में 4.5 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा का करोबार हुआ है।

मधुबन होटल में रसोइया की हत्या

गिरिडीह । जैन धर्मावलंबियों के तीर्थ क्षेत्र सम्मेद शिखर मधुबन के होटल शिखर में गुरुवार देर रात होटल के रसोइया राजेश कुमार की हत्या गला काट कर हत्या कर दी गयी। हत्या का आरोप होटलकर्मी रमेश कुमार पर लगा है। मधुबन थाना पुलिस ने आरोपित रमेश कुमार को गिरफ्तार करने के साथ उसके पास रखे चाकू को भी बरामद कर लिया है। घटना की जानकारी मिलते ही डुमरी एसडीपीओ सुमित प्रसाद घटनास्थल पहुंचे और मामले की जांच की। जानकारी के अनुसार राजेश कुमार यूपी का रहने वाला था और नौ नवंबर को मधुबन के होटल में काम करने आया था।

कुलगाम मुठभेड़ में लश्कर के पांच आतंकी मारे गये

खबर मन्त्र संवाददाता

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर के कुलगाम जिले में सुरक्षा बलों के साथ रातभर चली मुठभेड़ में लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) के पांच आतंकवादी मारे गये। पुलिस ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। कुलगाम जिले में 18 घंटे तक चली मुठभेड़ खत्म होने के बाद कश्मीर जोन के पुलिस महानिरीक्षक वीके बिरदी ने बताया, मारे गए आतंकवादियों के शव बरामद किए जा चुके हैं और इलाके में छानबीन की जा रही है। ड्रोन फुटेज के जरिए आतंकवादियों के शवों का पता लगाया गया। मारे गए आतंकवादियों की पहचान समीर अहमद शेख (पीएएफएफ), यासिर बिलाल भट, दानिश अहमद ठोकर, हंजुल्ला याकूब शाह और उबैद अहमद पैडर (सभी टीआरएफ के सदस्य) के रूप में हुई है। बृहस्पतिवार को इलाके में आतंकवादियों की मौजूदगी की सूचना मिलने के बाद सुरक्षा बलों ने कुलगाम के नेहामा गांव में घेराबंदी की और तलाशी अभियान शुरू किया था। सुरक्षाबलों को देखते ही आतंकवादियों ने गोलीबारी शुरू कर दी, जिसके बाद मुठभेड़ शुरू हो गयी। रात के समय इस अभियान को रोकना पड़ा। शुक्रवार तड़के गोलीबारी हुई। जिस घर में आतंकवादी छिपे हुए थे, आज सुबह हुई गोलीबारी में उसमें आग लग गयी जिससे आतंकवादियों को बाहर निकलना पड़ा।

खबर एक नजर में

आदित्य ठाकरे को सीएम ने किया सम्मानित

रांची। मुख्यमंत्री आवासीय कार्यालय में सीएम हेमन्त सोरेन से शुक्रवार को महाराष्ट्र विधानसभा के सदस्य एवं पूर्व मंत्री आदित्य ठाकरे ने शिष्टाचार मुलाकात की। सीएम ने अंगवस्त्र व मोमेंटो देकर उन्हें सम्मानित किया।

13 जिला न्यायाधीशों की हुई सीधी नियुक्ति

रांची। राज्य मंत्रिमंडल के फैसले के बाद राज्य में 13 जिला न्यायाधीशों की नियुक्ति कर दी गयी है। कार्मिक विभाग ने इस संबंध में अधिसूचना जारी कर दी है। झारखंड वरीय न्यायिक सेवा भर्ती, नियुक्ति एवं सेवा शर्त के तहत इन न्यायाधीशों की योगदान की तिथि से सीधी भर्ती की गयी है।

इनकी हुई नियुक्ति : नमिता चंद्रा, पवन कुमार, श्वेता ढींगरा, पारस कुमार सिन्हा, कुमार साकेत, शिवनाथ त्रिपाठी, भू पेश कुमार, आयशा खान, भानू प्रताप सिंह, नीति कुमार, प्राची मिश्रा, पवन कुमार, नरंजन सिंह।

जमीन घोटाला : भरत प्रसाद ने इडी कोर्ट में दाखिल की जमानत याचिका, सुनवाई आज

रांची। जमीन घोटाले के आरोपी भरत प्रसाद ने ईडी की विशेष कोर्ट में जमानत याचिका दाखिल की है। इस मामले में सुनवाई के लिये 18 नवंबर की तिथि निर्धारित की गयी है। सेना के कब्जे वाली भूमि और रांची के चेशायर होम रोड स्थित भूमि की फर्जी कागजात के सहारे जमीन की खरीद-बिक्री करने से जुड़े इस केस में रांची के पूर्व डीसी छवि रंजन, चर्चित व्यवसायी विष्णु अग्रवाल, पावर ब्रोकर प्रेम प्रकाश और राजेश राय समेत कई लोग आरोपी हैं। इस केस के अन्य अभियुक्तों की जमानत याचिका निचली अदालत से खारिज की जा चुकी है।

भाजपा सांसद ने कहा- पीएम के झारखंड आने से जनता में खुशी

पीएम के दौरे से कांग्रेस-झामुमो में हताशा व बेचैनी : आदित्य साहू

आने वाली पीढ़ियां प्रधानमंत्री को युगों तक याद करेगी

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। प्रदेश भाजपा ने राज्य की जनता, विशेषकर आदिवासी समाज के प्रति आभार प्रकट किया है। जिन्होंने लाखों की संख्या में खूंटी पहुंचकर प्रधानमंत्री जी के संबोधन को सुना। भाजपा प्रदेश महामंत्री एवं सांसद आदित्य साहू ने पार्टी मुख्यालय में शुक्रवार को आयोजित प्रेसवार्ता में कहा कि प्रधानमंत्री ने भगवान बिरसा मुंडा की जन्मस्थली पर पहुंचकर श्रद्धा सुमन अर्पित कर जनजातीय गौरव दिवस के उत्साह में इसकी महत्ता में चार चांद लगा दिया। आजादी के 76 वर्षों के इतिहास में नरेंद्र मोदी पहले प्रधानमंत्री हैं, जिन्होंने भगवान बिरसा मुंडा की जन्मस्थली उलिहातू पहुंचकर उन्हें नमन किया। उन्होंने कहा कि राज्य की जनता, जनजातीय समूह उनके इस सम्मान को कभी भूल नहीं पायेगा। आने वाली पीढ़ियां उसे युगों तक याद करेगी। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने भगवान बिरसा मुंडा की जयंती, राज्य स्थापना दिवस और जनजातीय गौरव दिवस के अवसर पर भगवान बिरसा मुंडा की धरती से देश के जनजाति समाज को 24 हजार करोड़ रुपये की पीएम जन मन जनजातीय न्याय महाअभियान का शुभारंभ किया। ये अभियान उन लाखों आदिवासी परिवारों के लिए है, जिनपर अभी तक ध्यान नहीं दिया गया। उन्होंने कहा कि झारखंड के लिए 7200 करोड़ रुपये की परियोजनाओं का उद्‌घाटन और शिलान्यास हुआ। किसान सम्मान निधि के तहत 15वीं किस्त के रूप में 18 हजार करोड़ रुपए किसानों के खाते में भेजे गये।

उन्होंने कहा कि भगवान बिरसा मुंडा की धरती से विकसित भारत संकल्प यात्रा की शुरूआत हुई। प्रधानमंत्री जी के हाथों से इतना बड़ा उपहार पाकर झारखंड की जनता, आदिवासी समाज खुशियां मना रहा है, लोगों में उत्साह है लेकिन राज्य की जनता को ठगने वाले, जल, जंगल, जमीन की लूट मचाने वाले कांग्रेस-झामुमो के नेता हताश और निराश हैं। उन्होंने कहा कि उन्हें कार्यक्रम की सफलता पच नहीं रही है। इसलिये, उल्टी सीधी बातें, अनर्गल और असंवैधानिक बातें कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि इन्हें अपने खिसकते जनाधार को लेकर चिंता सताने लगी है। रात की नींद और दिन में चैन खत्म हो गया है। उन्होंने कहा जिसने राज्य के आंदोलन को बेचा-खरीदा हो उनसे झारखंड के विकास की उम्मीद करना बेमानी है। आदिवासी समाज के होनहार युवक युवतियों की हत्या हो रही सरकार चुप है। इस अवसर पर प्रदेश मीडिया प्रभारी शिवपूजन पाठक, पूर्व विधायक रामकुमार पाहन भी उपस्थित थे।

सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर दर्ज की जा रही गवाही

पूजा सिंघल से जुड़े मामले में अहम गवाही 21 को

मनी लांड्रिंग की आरोपी हैं निलंबित आइएएस अधिकारी पूजा सिंघल

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। मनरेगा घोटाले की राशि का मनी लाउंड्रिंग करने के आरोप में जेल में बंद निलंबित आईएएस अधिकारी पूजा सिंघल से जुड़े मामले में छठ पूजा बाद ईडी दो अहम गवाहों को प्रस्तुत करेगा। यह गवाही सुप्रीम कोर्ट के आदेश के आलोक में ईडी की विशेष अदालत में दर्ज की जायेगी। इसके लिए 21 नवंबर की तारीख निर्धारित की गई है। हालांकि, पूर्व से मामले में साक्ष्य प्रस्तुत करने की तारीख 23 नवंबर निर्धारित है। लेकिन सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर 21 नवंबर को गवाही दर्ज कराई जायेगी। इसको देखते हुए दोनों गवाहों को नये सिरे से समन जारी कर नई तारीख में आने को कहा गया है। गवाहों को समन जारी कर दिया गया है। ईडी ने पूजा सिंघल के मामले में अब तक श्रीराम ट्रांसपोर्ट कंपनी के मैनेजर एवं पल्स बिल्डिंग बनाने वाला ठेकेदार अक्षत कटियार की गवाही दर्ज कराई है। मनी लाउंड्रिंग मामले में पूजा सिंघल, बर्खास्त कनीय अभियंता राम बिनोद प्रसाद सिन्हा, कार्यपालक अभियंता शशि प्रकाश जेल में रहते ट्रायल फेस कर रहे हैं। जबकि पूजा के पति अभिषेक झा का सीए सुमन कुमार को सुप्रीम कोर्ट से जमानत मिल चुकी है। मामले में राम बिनोद 18 जून 2020 से ही जेल में है। पूजा सिंघल 25 मई 2022 से जेल में है। गवाही के बाद पूजा सिंघल की मुश्किलें बढ़ सकती है। सुप्रीम कोर्ट में पूजा सिंघल की जमानत अर्जी पर सुनवाई के लिये एक दिसंबर की तारीख निर्धारित है।

कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता विभाग, झारखण्ड, राँची

झारखण्ड एग्रीकल्चर एण्ड सोएल मैनेजमेंट इन्स्टीच्यूट (जैसमीन)

कार्यालय-मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी, जैसमीन, झारखण्ड, राँची
चतुर्थ तल्ला रूम नं0-405 कृषि भवन, काँके रोड, राँची,
ई-मेल- ceojasmin@gmail.com

आवश्यक सूचना का प्रकाशन

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि जैसमीन अन्तर्गत तीनों प्रशिक्षण केन्द्रों पर मानव बल एवं सुरक्षा प्रहरियों की सेवा उपलब्ध कराने हेतु प्रकाशित ई0 निविदा पी0 आर0 सं0 309078 कृषि (23–24), डी0 को अपरिहार्य कारणवश रद्द कर दिया गया है।

ह0/–
मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी,
PR 311490 Agriculture (23-24)_D जैसमीन, झारखण्ड, राँची

जिला अभियंता का कार्यालय
जिला परिषद, रामगढ़

अल्पकालीन ई–निविदा आमंत्रण सूचना
ई–निविदा सं० :–ZP/RMG/01/2023-24

1. कार्य की विस्तृत विवरणी :– 15वें वित्त आयोग मद अंतर्गत

क्र. सं.	प्रखण्ड	योजना का नाम	प्राक्कलित राशि	अग्रधन की राशि	परिमाण विपत्र का मुल्य (रु०)	कार्य पुर्ण करने की अवधि
1	गोला	बरलंगा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र का निर्माण।	1,42,80,500.00	2,86,000.00	10,000.00	18 माह

2. वेबसाईट में निविदा प्रकाशन की तिथि – दिनांक 30.11.2023
3. ई–निविदा प्राप्ति की अंतिम तिथि एवं समय – दिनांक 05.12.2023 अपराह्न 5:00 बजे तक।
4. निविदा खोलने का स्थान, तिथि एवं समय – जिला अभियंता का कार्यालय, जिला परिषद, रामगढ़, दिनांक – 07.12.2023 को अपराह्न 2 : 00 बजे।
5. निविदा आमंत्रित करने वाले पदाधिकारी का पदनाम एवं पता– जिला अभियंता, जिला परिषद, रामगढ़।
6. ई–निविदा प्रकोष्ट का दुरभाष नं० – 7903046917, 06553–231504
7. परिमाण विपत्र की राशि घट बढ़ सकती है। तदनुसार परिमाण विपत्र की राशि का 02 प्रतिशत राशि अग्रधन की राशि के रूप में जमा करना होगा।
8. निविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि केवल *Online mode* द्वारा स्वीकार्य होगी।
9. निविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि का ई– भुगतान संवेदक द्वारा जिस बैंक खाता से किया जायेगा, उसी खाते मे अग्रधन की राशि वापस होगी। अगर बैंक खाता को बंद कर दिया जाता है। तो उसकी सारी जवाबदेही संवेदक की होगी।
10. विशेष परिस्थिति में बिना कारण बताए निविदा रद्द करने अथवा स्थगित करने का अधिकार अधोहस्ताक्षरी को सुरक्षित होगा। विस्तृत जानकारी के लिए वेबसाईट *Jharkhandtenders.gov.in* एवं कार्यालय के सूचनापट्ट पर देखा जा सकता है।
11. निविदा दो लिफाफा पद्धति में लागु होगा।
12. इस निविदा में जिला परिषद, रामगढ़ के अंतर्गत पंजीकृत समुचित श्रेणी के संवेदक भाग ले सकेंगे।

ह०/–
PR.NO.311517 District(23-24):D जिला अभियंता, जिला परिषद, रामगढ़।

कार्यपालक अभियन्ता का कार्यालय,
ग्रामीण कार्य विभाग, कार्य प्रमण्डल, हजारीबाग

ई–निविदा आमंत्रण सूचना

ई–निविदा सं0 :– 07/2023-24/RWD/EE/HAZARIBAG दिनांक :– 16.11.2023

कार्यपालक अभियंता, ग्रामीण कार्य विभाग, कार्य प्रमण्डल, हजारीबाग द्वारा निम्न विवरण के अनुसार e-procurement पद्धति से निविदा आमंत्रित की जाती है।

1. कार्य की विवरणी :–

क्र० सं०	आईडेन्टी फिकेशन संख्या/पैकेज संख्या	प्रखण्ड	कार्य का नाम	प्राक्कलित राशि (रुपया में) अंक में	प्राक्कलित राशि (रुपया में) अक्षर में	कार्य समाप्ति की अवधि
1	RWD/HAZ/STPKG/09/2023-24	बड़कागाँव	एन०टी०पी०सी० पथ चेपाखुर्द से चेपाकला तक पथ का सुदृढ़ीकरण कार्य (लं0–4.150 कि०मी०)	15,23,93,600/-	पन्द्रह करोड़ तेईस लाख तिरानबे हजार छः सौ रुपये मात्र	9 (नौ) माह
		बड़कागाँव	जुबला से चानो तक पथ का सुदृढ़ीकरण कार्य (लं0–5.900 कि०मी०)			
		बड़कागाँव	हरली शिव मन्दिर से नापोकला पथ होते हुए सतबहिनी पुल तक पथ का सुदृढ़ीकरण कार्य (लं0–5.140 कि०मी०)			
		बड़कागाँव	लुकमा से इन्दरा तक पथ का सुदृढ़ीकरण कार्य (लं0–6.550 कि०मी०)			
		बड़कागाँव	महुदी मध्य विद्यालय से चुम्बागढ़ा तक पथ का सुदृढ़ीकरण कार्य (लं0–3.600 कि०मी०)			
		बड़कागाँव	बड़कागाँव सूर्य मन्दिर से आसहरा तक पथ का सुदृढ़ीकरण कार्य (लं0–4.100 कि०मी०)			
		बड़कागाँव	डोकाटांड से बरबनिया होते हुए मलडीह तक पथ का सुदृढ़ीकरण कार्य (लं0–4.000 कि०मी०)			
2	RWD/HAZ/STPKG/10/2023-24	चुरचू	फुलरी से कजरी तक पथ का सुदृढ़ीकरण कार्य (लं0–2.900 कि०मी०)	17,81,93,200/-	सत्तरह करोड़ एकासी लाख तेरानबे हजार दो सौ रुपये मात्र	9 (नौ) माह
		चुरचू	जोरदाग गाँव से डूमर (चुरचू मुख्य पथ) भाया कोसारी तक पथ का सुदृढ़ीकरण कार्य (लं0–2.990 कि०मी०)			
		दारू	इरगा से बरवार तक पथ का सुदृढ़ीकरण कार्य (लं0–4.460 कि०मी०)			
		दारू	बेलवा मोड़ से ओंगो तक पथ का सुदृढ़ीकरण कार्य (लं0–5.220 कि०मी०)			
		दारू	ओंगो से रहमदगा तक पथ का सुदृढ़ीकरण कार्य (लं0–4.500 कि०मी०)			
		डाडी	खपिया से कोल्हुवाटांड तक पथ का सुदृढ़ीकरण कार्य (लं0–1.000 कि०मी०)			
		केरेडारी	बलेदेवरी से तेलिया बेगवारी तक पथ का सुदृढ़ीकरण कार्य (लं0–3.450 कि०मी०)			
		केरेडारी	गरीखुर्द से बरियातु तक पथ का सुदृढ़ीकरण कार्य (लं0–2.300 कि०मी०)			
		बड़कागाँव	ओंगो आर०ई०ओ० रोड से करमटांड, बधपंजा भाया कोयलंग, सरना, बनाही तक पथ का सुदृढ़ीकरण कार्य (लं0–4.255 कि०मी०)			
		बड़कागाँव	काण्डतरी से बुढ़वा महादेव तक पथ का सुदृढ़ीकरण कार्य (लं0–2.400 कि०मी०)			
		बड़कागाँव	लुकंगा मुख्य पथ से आदिवासी टोला भाया लेटवाटांड, चानो तक पथ का सुदृढ़ीकरण कार्य (लं0–3.450 कि०मी०)			
		बड़कागाँव	नयोखुर्द से असनाटांड तक पथ का सुदृढ़ीकरण कार्य (लं0–2.750 कि०मी०)			
3	RWD/HAZ/STPKG/11/2023-24	केरेडारी	तरवां से हेन्देगीर होते हुए पताल तक पथ सुदृढ़ीकरण कार्य (लं0–19.825 कि०मी०)	18,71,02,200/-	अठारह करोड़ एकहत्तर लाख दो हजार दो सौ रुपये मात्र	9 (नौ) माह

2. वेबसाईट में निविदा प्रकाशन की तिथि :– 24.11.2023
3. ई–निविदा प्राप्ति की अंतिम तिथि एवं समय :–05.12.2023 अपराह्न 5.00 बजे तक ।
4. निविदा खोलने की, तिथि, एवं समय–06.12.2023 पूर्वाह्न 3.30 बजे।
5. निविदा आमंत्रित करने वाले पदाधिकारी का पदनाम एवं पता :–कार्यपालक अभियंता, ग्रामीण कार्य विभाग, कार्य प्रमण्डल, हजारीबाग ।
6. ई–निविदा प्रकोष्ठ का दूरभाष सं0–06546–265286 ।

विस्तृत जानकारी के लिए वेबसाईट jharkhandtenders.gov.in में देखा जा सकता है ।

कार्यपालक अभियंता, ग्रामीण कार्य विभाग, कार्य प्रमण्डल, हजारीबाग
PR 311556 Rural Work Department(23-24)D

विधानसभा अध्यक्ष ने की अधिकारियों के साथ उच्चस्तरीय बैठक, दुरूस्त होगी स्थापना दिवस की व्यवस्था

नक्सली हमले में शहीद जवानों के परिजन और खेल से जुड़े लोग होंगे सम्मानित

22 और 23 नवंबर को होंगे कार्यक्रम

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। झारखंड विधानसभा के स्थापना दिवस के मौके पर 22 व 23 नवंबर को विधानसभा में कार्यक्रम आयोजित की जायेगी। इसको लेकर स्पीकर रविंद्र नाथ महतो ने विभागीय पदाधिकारियों के साथ उच्च स्तरीय बैठक की। बैठक में स्पीकर ने कहा कि 22 नवंबर को नक्सली मुठभेड़ में शहीद जवानों के परिजनों और खेल से जुड़े लोगों को सम्मानित किया जाना है। उन्होंने पदाधिकारियों को निर्देश दिया कि कार्यक्रम के लिए नोडल पदाधिकारी के माध्यम से शहीदों के परिजनों और खिलाड़ियों को कार्यक्रम स्थल तक पहुंचायें। स्थापना दिवस पर चंद्रयान मिशन 3 से जुड़े झारखंड के वैज्ञानिक और टॉपर छात्र-छात्राओं को भी पुरस्कृत किया जाना है। स्पीकर ने रांची प्रशासन के पदाधिकारी को इन सभी की यातायात, सुरक्षा और ठहरने का इंतजाम करने का निर्देश दिया है। बैठक में मुख्य सचिव सुखदेव सिंह, डीजीपी अजय कुमार सिंह, प्रभारी सचिव जावेद हैदर समेत कई अधिकारी थे।

झारखंड की निचली अदालतों में 120 अधिवक्ता हुए नियुक्त

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। झालसा की ओर से सिविल कोर्ट में 120 कानूनी व बचाव अधिवक्ता की नियुक्ति की गयी है। झालसा की ओर से नियुक्त किये गये बचाव अधिवक्ताओं को ट्रेनिंग भी प्रदान की गयी है। एक चीफ एलएडीसी, सहायक एलएडीसी व तीन अन्य सहयोगी अधिवक्ता शामिल हैं। सिविल कोर्ट में इनके लिए कार्यालय सहित अन्य जरूरी संसाधन भी उपलब्ध कराया गया है। बताया जाता है कि बचाव अधिवक्ता के लिए मानदेय तय किया गया है।

दो वर्ष के बाद उनके कार्यों की समीक्षा की जायेगी, जिसके आधार पर उन्हें अवधि विस्तार दिया जा सकेगा। एलएडीसी के पास बड़ी संख्या में आवेदन पहुंच रहे हैं। जेल में बंद बंदियों की ओर से लगभग आवेदन झालसा को प्राप्त हो चुका है। इसे संबंधित जिलों को भेज दिया गया है। उल्लेखनीय है कि जिनकी सालाना आय तीन लाख रुपये हैं, उन्हें भी निःशुल्क वकील की सुविधा उपलब्ध कराने का प्रावधान है। महिला, दिव्यांग, वृद्ध आदि को निःशुल्क वकील मिलेगा, चाहे वह किसी भी वर्ग का क्यों न हो।

मिशन 2024 के तहत जिला कांग्रेस कार्यकर्ताओं को क्षमता का प्रदर्शन करना होगा : डॉ राकेश किरण

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में रांची जिला कांग्रेस कमिटी की बैठक अध्यक्ष डॉ राकेश किरण महतो की अध्यक्षता में शुक्रवार को हुई। बैठक में रांची जिला ग्रामीण के प्रभारी सह प्रदेश कांग्रेस के महासचिव शिवकुमार भगत उपस्थित थे। बैठक में डॉ महतो ने सभी नवनियुक्त प्रखंडों के प्रभारी का स्वागत करते हुए कहा कि आप कांग्रेस पार्टी के जुझारू योद्धाओं में से हैं और आने वाले दिनों में आपको अपनी विशेष कार्य क्षमता का प्रदर्शन करने का अवसर प्राप्त होगा। आप सभी प्रखंड अध्यक्ष एवं मंडल अध्यक्षों के साथ मिलकर आगामी लोकसभा चुनाव 2024 को ध्यान में रखते हुए सभी मंडल एवं पंचायत और बूथ स्तर के तेज तर्रार कार्यकर्ताओं का चयन करें एवं उन्हें महत्वपूर्ण जिम्मेवारी दें। उन्होंने कहा कि कार्यकर्त्ता को जहां उचित लगे वहां काम कर सकते हैं। किसी भी कार्यकर्ता को अतिरिक्त भार नहीं दिया जाएगा परंतु जिसे जो कार्य भार दिया जाएगा वो अपनी जिम्मेवारी को ईमानदारी पूर्वक निभाएं। बैठक में चंद्र रश्मि, एनुल हक, रमेश पांडे, अशोक गोप, मांधो कच्छप, चंदन बैठा, गौरी शंकर महतो, गुलजार अहमद, संजय सैरिया, मंगा उरांव, जफर अंसारी, कल्याण लिंडा, महेश कुमार मनीष, मनीष कुमार, गोपाल उरांव, मिनु सिंह, मो. मुबारक, सरस्वती देवी आदि कार्यकर्ता शामिल थे।

22 नवंबर को इडी ऑफिस में आयेंगे साहिबगंज के एसपी नौशाद आलम

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। साहिबगंज एसपी मो नौशाद की चल अचल संपत्तियों को अर्जित करने के मामले में इडी रडार पर आ गये हैं। 22 नवंबर को उनसे रांची के जोनल ऑफिस में पूछताछ की जायेगी।

22 नवंबर को होनी है नौशाद आलम से पूछताछ : गौरतलब है कि ईडी ने समन जारी कर साहिबगंज एसपी नौशाद आलम को 22 नवम्बर को रांची स्थित ईडी के जोनल कार्यालय पूछताछ के लिए बुलाया है। पूछताछ से पहले ईडी की टीम ने साहिबगंज एसपी नौशाद आलम की कई अचल संपत्तियों और निवेश से जुड़ी जानकारियां जुटायी हैं। मो नौशाद आलम के खिलाफ कई जगहों से इडी को शिकायत भी आई है। ईडी नौशाद आलम को लेकर विस्तृत जानकारियां जुटा रही है। नौशाद आलम की पोस्टिंग जहां भी रही और उनके द्वारा किस तरह की संपत्ति की खरीदी गई इसकी जानकारी भी ईडी जुटा रही है। रांची में ग्रामीण एसपी के पद पर रहने के दौरान भी नौशाद आलम ने कितनी संपत्ति की रजिस्ट्री अपने या परिजनों के नाम पर खरीदी है हर जानकारी जुटाई जा रही है।

छठ पर्व को लेकर अफसर-कर्मियों को मिला नवंबर महीने का वेतन

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के निर्देश पर छठ पर्व को लेकर नवंबर माह का वेतन शुक्रवार को देने का निर्देश दिया। इसके बाद आनन-फानन में सुबह 11 बजे वित्त विभाग ने सभी विभागाध्यक्ष, कोषागार और संबंधित विभाग को निर्देश जारी किया। जारी निर्देश में कहा गया कि छठ पूजा के देखते हुए सरकार ने झारखंड सरकार, राज्यपाल सचिवालय, झारखंड उच्च न्यायालय और विधानसभा सचिवालय के सभी पदाधिकारियों और कर्मियों को नवंबर माह के वेतन का भुगतान 17 नवंबर को ही सुनिश्चित हो। वित्त विभाग के निर्देश और जारी पत्र के बाद शुक्रवार की शाम 4 बजे तक 70 प्रतिशत से अधिक अफसर व कर्मियों के वेतन का भुगतान कर दिया गया। शेष जो बचे हैं, उन्हें भी शनिवार दोपहर तक वेतन भेज दिया जाएगा।

'भाभी जी घर पर हैं' धारावाहिक के मास्टर जी झारखंड के मतदाताओं को करेंगे जागरूक

कलाकार विजय सिंह को निर्वाचन संबंधी जागरूकता के कार्यों के लिए नियुक्त किया जायेगा स्टेट आइकन

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के रवि कुमार से शुक्रवार को छोटे पर्दे के चर्चित टीवी सीरियल भाभी जी घर पर हैं, के कलाकार विजय सिंह ने उनके कार्यालय कक्ष में मुलाकात की। उन्हें जल्द ही मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के रवि कुमार की ओर से राज्य में निर्वाचन संबंधी जागरूकता के कार्यों के लिए स्टेट आइकन नियुक्त किया जायेगा। झारखंड के ही रहने वाले विजय सिंह भाभी जी घर पर हैं धारावाहिक में संस्कारी मास्टर जी की भूमिका में लोगों को संस्कार सिखाते नजर आते हैं। अब जल्द ही वे झारखंड में मतदाता जागरूकता के लिये स्टेट आइकॉन के रूप में सहयोग करेंगे। इस अवसर पर एक्टर विजय सिंह ने कहा कि उन्हें खुशी है कि वे अपने गृह राज्य के लोगों को मतदान के लिये जागरूक करने और राज्य में मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिये काम आ सकेंगे। उन्होंने कहा कि आने वाले लोक सभा चुनाव तक वे अपने आडियो वीडियो संदेशों के माध्यम से लोगों को मतदाता पंजीकरण व मतदान के लिये जागरूक और प्रेरित करते रहेंगे। इस अवसर पर मुख्य निर्वाचन कार्यालय के अवर सचिव देव दास दत्ता, उप निर्वाचन पदाधिकारी मुख्यालय संजय कुमार, मुख्य निर्वाचन कार्यालय के अन्य पदाधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

सीसीएल में जीएम सहित कई पदाधिकारी बदले

रांची। सीसीएल में जीएम सहित कई अफसरों की ट्रांसफर और पोस्टिंग की गई है। ट्रांसफर किए गए अफसरों में विभिन्न संवर्ग के हैं। मुख्यालय में वाशरी कंस्ट्रक्शन डिपार्टमेंट के एचओडी/ जीएम रहे मेराज अहमद को मुख्यालय में ऑपरेशन डिपार्टमेंट का एचओडी बनाया गया है। वहीं मुख्यालय में ऑपरेशन डिपार्टमेंट में एचओडी/ जीएम रहे एसआर तलनकर को मुख्यालय में ही आईईडी का जीएम/एचओडी बनाया गया है। मुख्यालय में जीएम (सीपी) रहे श्यामल घोष को मुख्यालय में वाशरी कंस्ट्रक्शन डिपार्टमेंट का जीएम/एचओडी बनाया गया है। गांधीनगर अस्पताल में स्टाफ अफसर रहे चीफ मैनेजर जोयेश नायक को मुख्यालय के सीएमएस विंग और रामगढ़ केंद्रीय अस्पताल का अतिरिक्त प्रभार मिला है।

संध्या और सुबह के अर्घ्य के समय बनारस की तर्ज पर होगी गंगा आरती

पटना से लाये गये 1 लाख लीटर गंगा जल से शुद्ध होगा रांची का चडरी तालाब, छठ को भव्य बनाने में जुटी पूजा समिति

चडरी सरना छठ पूजा समिति

मुंबई की प्रसिद्ध भजन गायिका कल्पना पटवारी का गायन मुख्य आकर्षण होगा

पिछले साल की तुलना में इस बार और भी भव्यता दिखेगी : जीतेंद्र सिंह

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। राजधानी रांची में छठ पूजा तैयारी को अंतिम रूप दिया जाने लगा है। इसके लिए राजधानी के तालाब की सफाई युद्ध स्तर पर की जा रही है। छठ घाटों पर एक से बढ़कर एक कार्यक्रम आयोजित करने की तैयारी है। इसी कड़ी में चडरी सरना छठ पूजा समिति इस बार भी गंगा जल से चडरी तालाब का शुद्धिकरण करेगा। चडरी सरना पूजा समिति के संरक्षक जेतेंद्र सिंह के अनुसार पिछले सालों की तुलना में इस बार और भी भव्यता यहां दिखेगी। इसके लिए भजन संध्या के साथ साथ बनारस से गंगा आरती के लिए पंडितों की टीम आ रही है जो सुबह-शाम दोनों दिन के अर्घ्य के वक्त गंगा आरती यहां करेंगे। मुंबई की जानीमानी भजन गायिका कल्पना पटवारी का गायन यहां मुख्य आकर्षण होगा। इसके अलावा वैष्णो देवी की गुफा में फूलों का श्रृंगार करने वाले कारीगर भी इस छठ घाट को सजाएंगे। चडरी तालाब में इस बार छठी मैया का आराधना बड़े ही व्यापक ढंग से करने की तैयारी की गई है। करीब 15 हजार छठ व्रती यहां अर्घ्य देती दिखेंगी। चडरी सरना छठ पूजा समिति के पास अब तक सात हजार पवनैती का निबंधन हो चुका है। पिछले वर्ष करीब दस हजार छठ व्रतियों ने यहां अर्घ्य दिया था। इस साल भक्तों के उत्साह को देखते हुए घाटों की तैयारी को अंतिम रुप दिया जा रहा है। आकर्षक लाइटिंग के साथ यहां आनेवाले श्रद्धालुओं को कोई परेशानी ना हो इसका खास ध्यान रखा जा रहा है। चडरी तालाब में पटना से लाया गया एक लाख लीटर गंगा जल यहां प्रवाहित कर इसे शुद्ध किया जाएगा। पूजा समिति से जुड़े रोहित राय ने पटना से गंगा जल मंगाया है। चडरी तालाब राजधानी के बीचोबीच स्थित है। मान्यता है कि इस तालाब में चडरी देवी बसती हैं इस वजह से यह स्थान और भी पवित्र माना जाता है। शहर में होने के बावजूद यह स्थान गांव कहलाता है जहां लोग बड़े ही भक्तिभाव के साथ छठी मैइया का आराधना लंबे समय से करते आ रहे हैं।

महानगर छठ पूजा समिति के सदस्य नगर निगम प्रशासक से मिले

छठ महापर्व के आयोजन में कोई कमी नहीं रहेगी : नगर प्रशासक

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। महानगर छठ पूजा समिति के पदाधिकारियों ने शुक्रवार को रांची नगर निगम प्रशासक से मुलाकात कर उन्हें मांगों से संबंधित एक ज्ञापन सौंपा। नगर निगम प्रशासक अमित कुमार ने महानगर छठ पूजा समिति के माध्यम से राजधानी वासियों को आश्वस्त किया कि छठ महापर्व के आयोजन में कोई कमी नहीं रहेगी। आलोक दूबे ने छठ महापर्व को लेकर राज्य सरकार की तैयारियों की सराहना भी की है, उन्होंने कहा स्वयं मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन एवं वित्त मंत्री डॉ रामेश्वर उरांव छठ महापर्व के आयोजन को लेकर तैयारियों की जानकारी ले रहे हैं, जिसके कारण छठ व्रतियों के मन में संतोष का भाव पैदा करता है।

प्रतिनिधिमंडल में आलोक कुमार दूबे, लाल किशोर नाथ शाहदेव, विनय कुमार सिंह, नंद किशोर सिंह चंदेल, शिल्पी कुमारी, बबलू बर्मा, संजय सोनी, मेंहुल दूबे, पप्पू वर्मा, अर्जुन सिंह, यश वर्मा, आशीष रजक, मोहित राजक मुख्य रुप से उपस्थित थे। इसके बाद आलोक कुमार दूबे के नेतृत्व में महानगर छठ पूजा समिति के सदस्यों ने राजधानी के कई छठ घाटों का निरीक्षण भी किया। इस दौरान रोहित उरांव, अध्यक्ष लाल किशन नाथ शाहदेव, संरक्षक डॉ राजेश गुप्ता छोटू, विनय सिंह, पिया वर्मन, अभिषेक साहू, संजीत यादव, कुमुद रंजन, बबलू वर्मा, शिल्पी कुमारी आदि उपस्थित थे।

सूर्य उपासना और लोक आस्था का महापर्व छठ का आज दूसरा दिन

खरना अनुष्ठान के साथ 36 घंटे का निर्जला उपवास आज से शुरू

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। लोक आस्था और सूर्य उपासना का महापर्व छठ का आज दूसरा दिन है। आज खरना का अनुष्ठान होगा। इससे पहले कल शुक्रवार को पवित्र स्नान के बाद कद्दू की सब्जी, अरवा चावल का भात और चने की दाल आदि तैयार कर प्रसाद के रूप में ग्रहण किया। वहीं तीसरे दिन रविवार को संध्या में अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य देने तथा चौथे दिन सोमवार को सुबह में उदीयमान सूर्य को अर्घ्य देने के बाद व्रती पारण करेंगे। इसके साथ ही छठ का महापर्व समाप्त हो जाएगा। चार दिनों तक चलने वाले छठ महापर्व की अपनी एक अलग महानता है। इस पर्व में सूर्य और छठी मैय्या की पूजा की जाती है। छठ पूजा का यह व्रत मुख्य रूप से संतान की लंबी आयु, पारिवारिक सुख-समृद्धि, अच्छी सेहत और मनोवांछित फल की प्राप्ति के लिए किया जाता है। शनिवार को खरना पूजा के बाद छठ व्रती महिलाएं करीब 36 घंटे का निर्जला व्रत रखेंगी।

नहाय-खाय अनुष्ठान

खरना का शुभ मुहूर्त : पंडित रमाकांत मिश्रा ने बताया कि 18 नवंबर को खरना पूजा की जाएगी। इस दिन का सूर्योदय सुबह 06:46 बजे और सूर्यास्त शाम 5:26 बजे होगा। व्रत करने वाले के घर मे इस दिन मीठा ठेकुआ का प्रसाद तैयार किया जाता है।

भाजपा के सासंद और विधायक ने छठ घाटों का किया निरीक्षण

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। लोक आस्था का महापर्व छठ शुरू हो गया। रविवार को पहला अर्घ्य है इसके मददेनजर भाजपा सांसद संजय सेठ, विधायक सीपी सिंह और समरी लाल ने शहर के जेल तालाब और हटनिया तालाब समेत कई जलाशयों का निरीक्षण किया। इस दौरान उनके साथ रांची नगर निगम की टीम भी थी। तालाबों में गंदगी देख सांसद-विधायक ने नाराजगी जतायी। नगर निगम के पदाधिकारियों को सभी तालाबों को जल्द साफ करने और छठ व्रतियों और श्रद्धालुओं के लिए सभी जरूरी सुविधाएं उपलब्ध कराने का निर्देश दिया।

तुष्टिकरण की नीतियों के कारण तोड़ी जा रही देवी-देवता की मूर्तियां : आदित्य साहू

मुरमा पहुंच कर भाजपा सांसद आदित्य साहू ने ग्रामीणों और एसएसपी से की बात

दोषी गिरफ्तार नहीं हुए तो भाजपा आंदोलन करने को होगी बाध्य

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी के निर्देशानुसार सांसद आदित्य साहू के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने शुक्रवार को मांडर के मुरमा गांव का दौरा किया। उल्लेखनीय है कि मुरमा में बीती रात अज्ञात लोगों ने मंदिर एवं देवी की पिंड सहित शिव लिंग, हनुमान जी की प्रतिमा को क्षतिग्रस्त कर दिया। श्री साहू के साथ पूर्व विधायक रामकुमार पाहन, सुरेंद्र महतो, सन्नी टोप्पो, कमलेश राम, मादी उरांव सहित अन्य शामिल थे। उन्होंने एसएसपी से घटना को अंजाम देने वाले लोगों को चिन्हित कर अविलंब गिरफ्तार करने की मांग की। उन्होंने कहा कि जब से झामुमो के नेतृत्व में सरकार बनी है सनातन संस्कृति पर हमले हो रहे हैं। राज्य में लगातार मंदिर और हिंदू देवी देवताओं की मूर्तियों को तोड़ा जा रहा है। उन्होंने कहा कि यह सब राज्य सरकार की तुष्टिकरण नीति का परिणाम है। उन्होंने कहा इंडी एलायंस की सरकारें सनातन संस्कृति की विरोधी सरकारें हैं। उन्होंने राज्य सरकार से अविलंब अपराधियों को गिरफ्तार करने और कड़ी सजा दिलाने की मांग की। उन्होंने कहा कि कार्रवाई नहीं होने पर भाजपा आंदोलन करेगी।

मूर्ति खंडित करने वाले दोषी को प्रशासन अविलंब गिरफ्तार करे: स्वामी दिव्यानंद

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। धर्मगुरु स्वामी दिव्यानंद महाराज ने घटना पर गहरा दुख और रोष व्यक्त करते अपनी प्रीतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा कि एक ही रात में चार मंदिरों की मूर्तियों को खंडित किया गया, इसके दोषी को पुलिस अभी तक पकड़ नहीं पाई है, धर्मगुरू ने सरकार और प्रशासन से मांग की है कि दोषी को अविलंब गिरफ्तार करे। सरकार और प्रशासन यदि कानून सम्मत कार्रवाई नहीं करती है तो हमें सड़क पर उतरकर आंदोलन करने को विवश होना पड़ेगा।

मंदिर में तोड़-फोड़ की घटना निंदनीय

रांची। मांडर के मंदिर की मूर्ति खंडित देवी-देवताओं की प्रतिमाओं तथा एक मंदिर के महावीर पताकाओं को उखाड़ फेंकने की घटना को लेकर विश्व हिंदू परिषद के प्रांत मंत्री डॉ बिरेन्द्र साहू ने कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि हिंदू अस्थाओं के प्रति भ्रम एवं घृणा फैलाने वाले असामाजिक तत्वों का सुनियोजित कुकृत्य है। घटना में शामिल लोगों का अभी तक न पकड़ना प्रशासन की विफलता है। उन्होंने कहा कि ऐसे आसमाजिक लोगों को शीघ्र प्रशासन गिरफ्तार करे एवं मंदिर में क्षति पहुंचाई गई सभी देवी देवताओं की प्रतिमाओं का विधि-विधान के साथ पुनर्स्थापना की व्यवस्था कराये। उन्होंने कहा कि इस तरह की घटना बढ़ती जा रही है।

सजा छठ बाजार, घाटों की सफाई का काम जोरों पर

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। राजधानी रांची में छठ बाजार सज चुका है। लोग अपनी-अपनी जरूरत के अनुसार छठ पूजा की सामग्री की खरीद कर रहे हैं। सूप, दौरा की खरीदारी शुरू हो चुकी है। वहीं आज और कल फलों और पूजन सामग्री की खरीद होगी। इसके साथ ही अर्घ्य देने के लिए छठ तालाबों और डैम की साफ-सफाई को अंतिम रूप दिया जा रहा है। तालाब और डैम को सजाया जा रहा है। रोशनी और सजाने का काम किया जा रहा है। विभिन्न छठ समितियों के द्वारा अलग-अलग तैयारी की जा रही है। रांची के बड़ा तालाब, कांके डैम, हटनिया तालाब, चड़री तालाब, जेल तालाब, बटन तालाब, हटिया डैम, स्वणरेखा नदी समेत कई जगहों पर अर्घ्य की सुविधा प्रदान की जा रही है।

जितनी जगह में 10 व्रती देंगे अर्घ्य, उतनी सिर्फ एक साहब के लिए घेरी गयी जगह

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। जितनी जगह में दस से अधिक छठ व्रती अर्घ्य देंगी, उतनी जगह में अकेले एक साहब के लिए जगह घेरकर उसपर सुरक्षाकर्मी पहरा बैठा दिया गया है। जगह को कपड़ा से घेरा गया है। बात कर रहे हैं राजधानी के नक्षत्र वन तालाब की। उतनी जगह घेरने पर पूजा समिति को भी आपत्ति है, लेकिन कोई खुलकर बोलने को तैयार नहीं है। हालांकि नक्षत्र वन पूजा समिति के पदधारियों ने निरीक्षण के लिए पहुंचे सांसद और विधायक को अवगत करा दिया है। बताया जा रहा है कि रांची पुलिस के एक सीनियर साहब के घर छठ पर्व हो रहा है और उनके लिए ही जगह सुरक्षित किया गया है।

प्रकाश पर्व को लेकर निकाली प्रभात फेरी

रांची। प्रकाश पर्व को लेकर शुक्रवार को प्रभात फेरी निकाली गयी। गुरुद्वारा साहिब की प्रभात फेरी थड़पकना स्थित हरजीत सिंह होड़ा, भाई मनोहर लाल, स्व गंगा दास, राजेश कालरा के घर से होकर कुलदीप सिंह होड़ा से होकर गुरुद्वारा साहिब पहुंची। मनप्रीत सिंह निशान साहिब की सेवा कर रहे थे। स्टेशन रोड की प्रभात फेरी होटल सम्राट से शुरू होकर राज स्वीट्स के समीप गुरुद्वारा कडरू की प्रभात फेरी के साथ पी पी कंपाउंड स्तिथ डॉ. देवेन्द्र सिंह दलबीर कौर के ऑफिस में पहुंचकर गुरबाणी का गायन कर सांगत को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस प्रभात फेरी में त्रिलोचन सिंह, ध्यान सिंह, किरपाल सिंह, मिलकियत सिंह, सुरजीत सिंह सलूजा, रणप्रीत सिंह, डॉ. हरमिंदर बीर सिंह, हरजीत सिंह होड़ा, मोहन सिंह, गुरुचरण सिंह, इकबाल सिंह, तविंदर सिंह, प्रीतम सिंह, गोपी, केशर सिंह, हरपाल सिंह, मनमीत सिंह, जातिविंदर कौर, संध्या रानी, सरबजीत कौर, चरणजीत कौर, सोनिया आदि लोग शामिल थे।

लीजेंड्स लीग ऑफ क्रिकेट सीजन-2 के लिए भीलवाड़ा किंग्स ने की शानदार तैयारी

आज से शुरू हो रही प्रतियोगिता

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। लीजेंड्स लीग क्रिकेट सीजन 2 के लिए भीलवाड़ा किंग्स ने जबरदस्त तैयारी की है। पिछले सीज़न की रनर-अप इस फ्रेंचाइजी का स्वामी विभिन्न व्यवसायों में संलग्न एलएनजे भीलवाड़ा ग्रुप है। इस बार के फ्रेंचाइज़ी सीज़न में 19 मैच होने की उम्मीद है और ये 18 नवंबर से 9 दिसंबर तक चलेंगे। मैच रांची, जम्मू, देहरादून, विशाखापत्तनम और सूरत जैसे विभिन्न भारतीय शहरों में होंगे। भीलवाड़ा किंग्स का मुकाबला गुजरात जाइंट्स, इंडिया कैपिटल्स, मणिपाल टाइगर्स के साथ-साथ सदर्न सुपर स्टार्स और अर्बन राइजर्स हैदराबाद से होगा। इस टीम में इरफ़ान पठान, यूसुफ़ पठान और तिलकरत्ने दिलशान जैसे दिग्गज हैं इसलिए यह टीम जीत की प्रबल दावेदार है। हाल

में हुई नीलामी में 200 से अधिक खिलाड़ियों से 12 चुनिंदा खिलाड़ियों को लेकर भीलवाड़ा किंग्स और भी दमदार टीम बन गई है। अपनी टीम को लेकर उत्साहित भीलवाड़ा किंग्स के तिलकरत्ने दिलशान ने कहा कि लीजेंड्स लीग अफ क्रिकेट सीज़न 2 में दिग्गज खिलाड़ियों, सटीक रणनीतियों और खेल कौशल देखने का रोमांचक अनुभव मिलेगा। एलएनजे भीलवाड़ा ग्रुप मैदान और उसके बाहर भी सामाजिक योगदान देने के लिए प्रतिबद्ध रहा है। भारतीय क्रिकेट खिलाड़ी राहुल शर्मा ने कहा कि भारत के पूर्व क्रिकेट कप्तान महेन्द्र सिंह धौनी के शहर में क्रिकेट खेलने आया हूं। खेल के बीच दो तीन दिन का गैप है अगर धौनी अपने शहर में होंगे तो उनसे मिलने की कोशिश करूंगा।

भीलवाड़ा किंग्स के सीईओ गुरप्रीत सरीन ने कहा कि जैसा कि मुझे विश्वास है कि हमारी टीम की सूक्ष्म संरचना उत्कृष्टता के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाती है। गुरप्रीत सरीन ने कहा कि इस लीग से जुड़ कर यह ग्रुप खेल को बड़े बदलाव का माध्यम बनाना चाहता है। यह ग्रुप जवाहर फाउंडेशन के माध्यम से स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, जल और पर्यावरण, खाद्य सुरक्षा और रोजगार सभी क्षेत्रों में प्रगति के लिए लघु से मध्यम अवधि की परियोजनाएं चला रहा है। वर्तमान में फाउंडेशन का 'स्वाभिमान भोज' नामक एक विशिष्ट खाद्य सुरक्षा कार्यक्रम है, जिसके तहत 1 रुपये में भोजन करने की सुविधा है और अब तक 14,30,063 लाख से अधिक मील परोसे गए हैं। रिजु झुनझुनवाला जो आरएसडब्ल्यूएम लिमिटेड (एलएनजे भीलवाड़ा समूह का कपड़ा उद्यम) के अयक्ष और प्रबंध निदेशक हैं उन्होंने कहा, ग्रुप में हम सभी उत्ष्टता और टीम वर्क को महत्व देते हैं। पिछले सीज़न का उपविजेता होने का हमें गर्व है। इस सीज़न भी हमारे चाहने वालों को बेजोड़ खेल देखने का अवसर और याद्गार अनुभव देंगे। हम यह लीग जीतने को लेकर उत्साहित हैं। लगातार दूसरे सीज़न लीजेंड्स लीग ऑफ क्रिकेट में भाग लेकर हम बहुत खुश हैं।

परीक्षा समय पर कराने के लिए सभी शिक्षा जिला पदाधिकारियों को निर्देश जारी

झारखंड अधिविद्य परिषद् ने जारी किया शेड्यूल छह फरवरी से शुरू होगी मैट्रिक-इंटर की परीक्षा

आठवीं, नौवीं और 11वीं की परीक्षा जनवरी और फरवरी में होगी आयोजित

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। झारखंड एकेडमिक काउंसिल जैक की ओर से आयोजित मैट्रिक और इंटरमीडिएट की परीक्षा छह फरवरी 2024 शुरू होगी। परीक्षा 26 फरवरी तक आयोजित की जाएगी। इसे लेकर जैक ने तैयारी शुरू कर दी है। इस बार परीक्षा समय पर आयोजित करने की दिशा में सभी जिलों के शिक्षा पदाधिकारियों को भी सूचित किया गया है। साथ ही परीक्षा कदाचार मुक्त हो इसे लेकर हर स्तर से तैयारी करने का निर्देश दिया गया है। सभी परीक्षा केंद्रों में सीसीटीवी कैमरे दुरुस्त करने से लेकर अन्य तैयारियों को पूरा करने को कहा गया है।

जैक अध्यक्ष अनिल कुमार महतो ने बताया कि परीक्षा समय से ही शुरू होगी। आठवीं, नौवीं और 11वीं की परीक्षा जनवरी व फरवरी माह में आयोजित की जाएगी। इस बार मैट्रिक-इंटर में करीब सात लाख परीक्षार्थियों के शामिल होने की संभावना है।

7 लाख परीक्षार्थी मैट्रिक-इंटर की देंगे परीक्षा

मुख्यमंत्री मेधा छात्रवृति परीक्षा का अलग से नहीं निकलेगा फार्म : इस बार से मुख्यमंत्री मेधा छात्रवृत्ति परीक्षा का अलग से आवेदन नहीं लिया जाएगा। इसके लिए अलग से कोई पोर्टल नहीं होगा। नए नियम के अनुसार अब आठवीं कक्षा के फार्म के साथ ही मुख्यमंत्री मेधा छात्रवृत्ति परीक्षा का आवेदन उपलब्ध होगा। जिसे साथ में ही भरा जा सकेगा। दोनों परीक्षा का आवेदन एक साथ जैक को ऑनलाइन के माध्यम से भेजा जा सकेगा। साथ ही जिला शिक्षा पदाधिकारी के द्वारा अनुमोदित विद्यालय के ही छात्र-छात्राएं आठवीं कक्षा की परीक्षा में शामिल हो सकेंगे। जिला शिक्षा पदाधिकारी इसकी पूरी जानकारी विद्यालयों को उपलब्ध कराएंगे। साथ ही छात्रवृति परीक्षा का आवेदन विद्यालय द्वारा ऑनलाइन भरा जाएगा।

जैक ने बोर्ड परीक्षा को लेकर शुरू किया निबंधन

दसवीं बोर्ड की परीक्षा को लेकर ऑनलाइन निबंधन शुरू हो गया है। जैक ने इस संबंध में अधिसूचना जारी करते हुए बताया है कि आवेदन भरने की अंतिम तिथि दो दिसंबर तक है। परीक्षा शुल्क जमा करने की अंतिम तिथि छह दिसंबर है। छात्र चालान के माध्यम से इसे जमा कर सकते हैं। विलंब शुल्क के साथ परीक्षा फार्म भरने की तिथि तीन दिसंबर से नौ दिसंबर तक है। बैंक चालान से शुल्क जमा करने की अंतिम तिथि 12 दिसंबर निर्धारित है।

आठवीं के लिए फार्म भरने की तिथि घोषित : आठवीं कक्षा के लिए ऑनलाइन परीक्षा फार्म भरने की तिथि भी घोषित कर दी गई है। आवेदन 28 नवंबर से 28 दिसंबर तक भरा जा सकेगा। वहीं, जिला शिक्षा पदाधिकारी उन विद्यालयों को अनुमोदित करेंगे जो अभी तक नहीं हो पाया है। इसके लिए जैक ने 23 नवंबर से 23 दिसंबर तक का समय दिया है ताकि वे आनलाइन यह प्रक्रिया पूरी कर सके।

इंटर व्यवसायिक कोर्स के निबंधन 23 नवंबर से : इंटर व्यवसायिक परीक्षा का निबंधन 23 नवंबर से 12 दिसंबर तक किया जा सकेगा। जैक ने अधिसूचना जारी कर दी है। जिसमें बताया गया है कि इस तिथि के बाद विलंब शुल्क के साथ 13 से 15 दिसंबर तक जमा किया जा सकता है। साथ ही परीक्षा शुल्क संबंधित जानकारी भी दे दी गई है। साथ ही यह स्पष्ट कहा गया है कि निर्धारित तिथि के बाद किसी भी रूप में आवेदन स्वीकार नहीं किया जाएगा।

आज का राशिफल 18-11-2023

विक्रम संवत 2080 शक संवत 1945, ऋतु : हेमंत। सूर्य दक्षिणायन। मास : कार्तिक, पक्ष : शुक्ल, तिथि : पंचमी 09:19 बजे समाप्त। नक्षत्र : उत्तराषाढ़ा 00:07 बजे रात्रि में समाप्त। योग : गंड 02:17 बजे रात्रि में समाप्त। करण : बालव 09:19 बजे तक, तदनंतर कौलव 20:22 बजे समाप्त। चंद्रायु 04.6 घंटे। दिशाशूल : पूर्व।

मेष : समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश सफल होगी। कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होगा। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। शुभांक-3-5-7

वृष : नवीन जिम्मेदारी बढ़ने के आसार रहेंगे। यात्रा शुभ रहेगी। अपने काम को प्राथमिकता से करें। कारोबारी काम में बाधा उभरने से मानसिक अशांति बनी रहेगी। मान-सम्मान बढ़ेगा। कामकाज की बाधा दूर होगी। शुभांक-2-5-7

मिथुन : सुविधा और समन्वय बना रहने से कामकाज में प्रगति बन जाएगी। आर्थिक हित के काम को साधनों में मदद मिल जाएगी। यात्रा शुभ रहेगी। अपने काम पर पैनी नजर रखें। शुभांक-2-5-6

कर्क : समय पक्ष का बना रहेगा। कारोबारी काम में प्रगति बनती रहेगी। लेन-देन में आ रही बाधा दूर करने के प्रयास सफल होंगे। परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। आलस्य का त्याग करें। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभांक-1-4-8

सिंह : यार-दोस्तों के साथ साझे में किए जा रहे काम में लाभ मिल जाएगा। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। जोखिम से दूर रहना ही बुद्धिमानी होगी। स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। व्यापार में वृद्धि होगी। सहयोगियों का सहयोग प्राप्त होगा। शुभांक-2-6-8

कन्या : शिक्षा में आशानुकूल कार्य होने में संदेह होगा। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। नौकरी में पदोन्नति की संभावना है। मित्रों से सावधानी रखें तो ज्यादा उत्तम है। शारीरिक सुख के लिए व्यसनों का त्याग करें। संतान पक्ष की समस्या समाप्त होगी। शुभांक-3-5-8

तुला : खान-पान में सावधानी रखें। कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। मान-सम्मान में वृद्धि व अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। अपने हित के काम सुबह-सवेरे ही निपटा लें। शुभांक-3-5-8

वृश्चिक : समाज में मान-सम्मान मिलेगा। कई प्रकार के हर्ष उल्लास के बीच मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे। आमोद-प्रमोद का दिन होगा और व्यावसायिक प्रगति भी होगी। स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार होगा। ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि होगी और सज्जनों का साथ भी रहेगा। शुभांक-1-3-5

धनु : कुछ कार्य भी सिद्ध होंगे। व्यर्थ की भाग-दौड़ से यदि बचा ही जाए तो अच्छा है। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। अवरुद्ध कार्य संपन्न हो जाएंगे। महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें। संतान की उन्नति के योग हैं। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभांक-5-7-9

मकर : आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। सभा-गोष्ठियों में मान-सम्मान बढ़ेगा। धार्मिक आस्थाएं फलीभूत होंगी। अल्प-परिश्रम से ही लाभ होगा। कामकाज में आ रही अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। शुभांक-1-6-8

कुंभ : सुख-आनंददायी समय है। लाभदायक कार्यों की चेष्टाएं प्रबल होंगी। सक्रियता से अल्प लाभ का हर्ष होगा। कुछ महत्वपूर्ण कार्य के लिए समय अच्छा रहेगा। सुखद समय की अनुभूतियां प्रबल होंगी। मनोविनोद बढ़ेंगे। व्यायाधिक्य का अवसर आ सकता है। ज्ञानार्जन का वातावरण बनेगा। शुभांक-1-3-8

मीन : शुभ कार्यों का लाभदायक परिणाम होगा। कामकाज की अधिकता रहेगी। लाभ भी होगा और पुराने मित्रों से समागम होगा। व्यवसायिक अभ्युदय भी होगा और प्रसन्नताएं भी बढ़ेंगी। कामकाज की व्यस्तता से सुख-आराम प्रभावित होगा। धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। सभा-गोष्ठियों में मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभांक-5-7-9

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक में बोले सीसीएल सीएमडी

लक्ष्य को अवश्य प्राप्त करेंगे

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक शुक्रवार को सीसीएल सीएमडी डॉ. बी वीरा रेड्डी की अध्यक्षता में मुख्यालय के कन्वेशन सेंटर के तीसरे तल पर अवस्थित सभागार में हुई। बैठक में सीएमडी ने राजभाषा विभाग को सतर्कता जागरूकता अभियान के समापन समारोह में सफल कवि सम्मलेन तथा राजभाषा पखवाड़ा के लिए बधाई दी।

डॉ. रेड्डी ने उपस्थित सभी को संबोधित करते हुए कहा, मुझे आशा है कि गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के दिये गये लक्ष्य को हम अवश्य प्राप्त करेंगे।

बैठक में निदेशक (कार्मिक) हर्ष नाथ मिश्र ने कहा कि राजभाषा कार्यान्वयन अत्यंत महत्वपूर्ण है। राजभाषा कार्यान्वयन में सभी विभागों के दृष्टिकोण प्रगतिशील होने चाहिए। उन्होंने सीसीएल द्वारा संसदीय समिति की तीसरी उपसमिति को दिये गये सुझावों पर त्वरित कार्रवाई का निर्देश दिया।

विभागाध्यक्ष (राजभाषा) संजय कुमार ने सभी का स्वागत करते हुए राजभाषा विभाग द्वारा किये गये संबंधित विषयों पर प्रकाश डाला। उन्होंने आगे राजभाषा संबंधी गतिविधियों से सबको अवगत कराया। इस मौके पर राजभाषा में विगत तिमाही के दौरान उत्कृष्ट कार्य करने वाले सुरक्षा विभाग तथा नगर प्रशासन विभाग सहित रजरप्पा क्षेत्र को शील्ड दे कर सम्मानित किया गया।

बैठक में सीसीएल, मुख्यालय के विभागाध्यक्ष / महाप्रबंधक एवं राजभाषा नोडल अधिकारी सहित सीसीएल के क्षेत्रों से आये प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में राजभाषा एवं विभागों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

केंद्रीय पर्यावरण राज्य मंत्री अश्विनी चौबे ने किया गोड्डा में अदाणी पावर प्लांट का दौरा

खबर मन्त्र संवाददाता

गोड्डा/रांची। विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम के लिए गोड्डा आये केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री अश्विनी कुमार चौबे ने शुक्रवार को गोड्डा स्थित अदाणी पावर प्लांट का दौरा किया। बांका से होकर गोड्डा आते हुए श्री चौबे तकरीबन साढ़े बारह बजे पावर प्लांट परिसर पहुंचे, जहां स्टेशन हेड रमेश झा, ओएंडएम हेड प्रसून चक्रवर्ती व एचआर हेड अमित कुमार ने पुष्पगुच्छ देकर उनका स्वागत किया।

पावर प्लांट के एडमिन बिल्डिंग में उन्होंने अदाणी पावर प्लांट व लललमटिया कोलफील्ड के वरीय पदाधिकारियों के साथ पर्यावरणीय संबंधी मुद्दों पर बैठक करके पावर प्लांट में किये गये पर्यावरण प्रबंधन का जायजा लिया। इस बैठक में उप वनमहानिदेशक (एकीकृत क्षेत्रीय कार्यालय, रांची) के प्रतिनिधि, केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के रीजनल डायरेक्टर केके विश्वास, प्रभागीय वन पदाधिकारी संजय कुमार, एसडीओ गोड्डा बैजनाथ उरांव, सीओ गोड्डा के अलावा गोड्डा के विधायक अमित मंडल, भाजपा जिलाध्यक्ष राजीव मेहता व महागामा के पूर्व विधायक अशोक भगत तथा अदाणी पावर के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे। केंद्रीय मंत्री श्री चौबे को पावर प्लांट के अधिकारी ने पावर प्लांट परिसर में पर्यावरण प्रबंधन के लिए लगाये गये उच्च तकनीक के संयंत्रों की जानकारी दी। साथ ही, उन्हें सुरक्षा से संबंधित नियमों और सीएसआर के कामों के बारे में भी जानकारी दी गयी। केंद्रीय मंत्री ने क्षेत्रीय पर्यावरण नियंत्रण बोर्ड के अधिकारी राजीव सिन्हा से पावर प्लांट के प्रबंधन के बारे जानकारी ली, जिसपर श्री सिन्हा ने अपनी संतुष्टि जतायी। केंद्रीय मंत्री ने बैठक के दौरान पावर प्लांट परिसर समेत पूरे गोड्डा के पर्यावरण संरक्षण को लेकर और अधिक पौधरोपण का सुझाव भी दिया। श्री चौबे ने लललमटिया कोलफील्ड के जीएम अरूपनंदा नायक और ओम प्रकाश चौबे से भी कोलफील्ड के पर्यावरण नियंत्रण से लेकर अन्य कई मुद्दों पर चर्चा की। श्री चौबे प्लांट परिसर में करीब एक घंटा रुके। उन्होंने प्लांट परिसर में पौधरोपण भी किया और पर्यावरण संरक्षण के लिए अधिक से अधिक पेड़ लगाने का संदेश दिया।

खूंटी के सायको में बुजुर्ग को पीट-पीटकर मार डाला

झाड़-फूंक में हत्या की आशंका

खबर मन्त्र संवाददाता

खूंटी। जिले की सायको थाना क्षेत्र पुलिस ने शुक्रवार को एक बुजुर्ग का शव खेत से बरामद किया है। शव की पहचान सायको थाना क्षेत्र के कूड़ापूर्ति के टुउ टोला निवासी 60 वर्षीय मंगरा पाहन के रूप में हुई है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

मंगरा पाहन अपने घर में नतिनी के साथ रहता था लेकिन दीवाली के मौके पर नतिनी अपने घर तमाड़ गई थी। शुक्रवार को जब मंगरा की नतिनी लौटी तो देखा कि घर मे उसका नाना नहीं है। खोजबीन करते हुए खेत में शव पड़े होने की जानकारी मिली। नतिनी ने ग्रामीण की मदद से पुलिस को घटना की जानकारी दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को बरामद कर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल भेज दिया और जांच में जुट गई।

मृतक वृद्ध मंगरा पाहन कूड़ापूर्ति स्थित अपने घर पर बड़ी बेटी के बेटी के साथ रहता था और भगत (झाड़ फूंक) का काम किया करता था। बताया जा रहा है कि मृतक के झाड़ फूंक से कई लोग ठीक हो जाया करता था। जिसके कारण लोग उसे बुलाने दूर दूर से उनके पास आना जाना किया करते थे। आशंका जताई जा रही है कि झाड़ फूंक के कारण ही किसी अज्ञात अपराधियों ने उसकी हत्या कर दी होगी। घर से 20 मीटर की दूरी पर खाली पड़े खेत से शव बरामद किया गया। अपराधियों ने उसे घर से घसीट कर खेत ले गये और खटिया की पटिया से बेरहमी से पिटाई की जिसके कारण उनका दाहिना हाथ और एक आंख पूरी तरह जख्मी कर दिया, आशंका जताई जा रही है अधिक पिटाई के कारण ही उसकी मौत हो गयी।

शिक्षकों को भी मिले एमएसीपी का लाभ

रांची। झारखंड प्राथमिक शिक्षक संघ ने राज्य में सेवारत सभी कर्मियों की भांति प्रारंभिक विद्यालयों के शिक्षकों को भी एमएसीपपी का लाभ प्रदान करने की मांग की है। संघ के प्रदेश प्रवक्ता चितरंजन कुमार एवं मो अतीकुज्जमा ने कहा है कि राज्य में सेवारत सभी कर्मियों को अपने सम्पूर्ण सेवा अवधि में 10, 20 एवं 30 वर्ष की सेवा पूर्ण होने पर क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वित्तीय उन्नयन का लाभ दिया जाता है। लेकिन एमएसीपी के लाभ से राजकीयकृत प्रारंभिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को वंचित रखा गया है। जबकि बिहार सरकार ने प्रारम्भिक शिक्षकों के लिए एमएसीपी के तहत प्रत्येक 10 वर्ष की सेवा के पश्चात सुनिश्चित वेतन के उन्नयन का निर्णय पारित किया है। इसकी विवेचना के लिए एमएसीपी से संबंधित विवरणों की मांग विभागीय सचिव ने समकक्ष अधिकारी से की थी। संभवतः उपरोक्त विवरणी राज्य सरकार को प्राप्त हो गई होगी।

कोल ब्लॉक की नीलामी का 8वां चरण शुरू

केंद्रीय मंत्री प्रहलाद जोशी ने 2030 तक भूमिगत खदानों से 100 एमटी उत्पादन पर दिया जोर

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची/नयी दिल्ली। कोयला मंत्रालय ने वाणिज्यिक कोयला खदानों की नीलामी प्रक्रिया के आठवें चरण की शुरुआत कर दी है। कुल 39 कोयला खदानें ऑफर पर हैं। वर्चुअल तौर पर नीलामी का शुभारंभ करते हुए, केंद्रीय कोयला, खान और संसदीय कार्य मंत्री प्रहलाद जोशी ने कहा कि 2025-26 तक कोयला आयात को रोकने के लिए सभी प्रयास जारी हैं। उन्होंने यह भी कहा कि बड़े पैमाने पर उत्पादन तकनीक का इस्तेमाल करके भूमिगत खदानों (यूजी) से कोयला उत्पादन को 2030 तक 100 मिलियन टन (एमटी) तक बढ़ाया जाएगा।

ज्ञात हो कि नीलाम की जा रही खदानें कोयला उत्पादक राज्यों झारखंड, ओडिशा, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल और बिहार में फैली हुई हैं। ये खदानें सीएमएसपी एक्ट और एमएमडीआर एक्ट के अंतर्गत आती हैं। 39 कोयला खदानों में से, चार खदानों को सीएमएसपी/एमएमडीआर अधिनियम के तहत 7वें चरण के दूसरे प्रयास के तहत ऑफर किया जा रहा है, जहां पहले प्रयास में एकल बोली प्राप्त हुई थी। 8वें चरण के तहत पेश की जा रही 35 कोयला खदानों में से 16 कोयला खदानें नई हैं और 19 खदानें पहले की किश्तों से ली जा रही हैं।

कोयला मंत्रालय ने यह सुनिश्चित करने के लिए कई सुधार किए हैं कि कोयला क्षेत्र तीव्र गति से बढ़े और देश की बढ़ती ऊर्जा मांग को पूरा करने में सक्षम हो। 8वें दौर के लिए भी, संरक्षित क्षेत्रों, वन्यजीव अभयारण्यों, महत्वपूर्ण आवासों, 40 प्रतिशत से अधिक वन क्षेत्र, भारी निर्मित क्षेत्र आदि के अंतर्गत आने वाली खदानों को बाहर रखा गया है। कुछ कोयला खदानों की ब्लॉक सीमाएं जहां घनी आबादी, उच्च हरित आवरण या महत्वपूर्ण बुनियादी ढाँचा आदि मौजूद था, कोयला खदान के प्रारंभिक विकास के लिए संशोधित किया गया है।

समारोह को संबोधित करते हुए कोयला मंत्रालय के सचिव अमृत लाल मीणा ने कहा कि कैप्टिव/वाणिज्यिक कोयला खदानें समग्र उत्पादन में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। उन्होंने कहा कि 39 खदानों को नीलामी के लिए पेश करने से पहले व्यवस्थित सर्वेक्षण किया गया है। श्री मीणा ने कहा कि खदानों से कोयले की त्वरित निकासी के लिए रेल कनेक्टिविटी को बढ़ाया और बढ़ाया जा रहा है।

इससे पहले, मेहमानों और संभावित बोलीदाताओं का स्वागत करते हुए, मंत्रालय के अपर सचिव और नामित प्राधिकारी, एम नागराजू ने घरेलू कोयला उत्पादन को और बढ़ाने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि मंत्रालय द्वारा हाल ही में सुधारों की एक श्रृंखला शुरू की गई है। आने वाले दशकों में घरेलू कोयले की मांग भी बढ़ेगी। उन्होंने कहा, इसलिए कोयला क्षेत्र में निवेश से अच्छा रिटर्न मिलता है।

नीलामी के लिए निविदा दस्तावेज की बिक्री की शुरूआत 15 नवंबर, 2023 से शुरू हो गयी है। खदानों, नीलामी की शर्तों, समयसीमा आदि का विवरण एमएसटीसी नीलामी मंच पर देखा जा सकता है। नीलामी प्रतिशत राजस्व हिस्सेदारी के आधार पर पारदर्शी दो चरणीय प्रक्रिया के माध्यम से ऑनलाइन आयोजित की जाएगी। वाणिज्यिक कोयला खदान की नीलामी के लिए कोयला मंत्रालय का एकमात्र लेनदेन सलाहकार एसबीआई कैपिटल मार्केट्स लिमिटेड नीलामी प्रक्रिया के संचालन में मंत्रालय की सहायता कर रहा है।

झारखंड पवेलियन में खूब पसंद किया जा रहा पारंपरिक परिधान

दिल्ली अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। नयी दिल्ली के प्रगति मैदान में हर साल की तरह प्रगति मैदान का भारतीय अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला अपने शीर्ष पर है। मेले में आने वाले लोग प्रदर्शनी देखने के साथ-साथ खरीदारी का भी खूब लुत्फ उठा रहे है।

झारखंड पवेलियन में लगे ट्राइबल परिधान लोगो को खूब पसंद आ रहे है। झारखंड में तसर सिल्क बहुत मात्रा में उत्पादित किया जाता है। ऐसे में पवेलियन में सिल्क की साड़ियां और सूट के स्टाल पर खासी भीड़ दिखी। ट्राइबल लोगो की अपनी अलग ही संस्कृति होती है। जिसकी झलक उनके कपड़ो पर देखी जाती है। यहां मिलने वाली साड़ियों पर ट्राइबल आर्ट का ही प्रिंट देखा जा रहा है। ट्राइबल परिधान की बिक्री कर रहे दामु बोदरा ने बताया कि उनके स्टाल पर सिल्क और कॉटन की पारम्परिक साड़ियां है। जिसकी कीमत 1000 से 3500 है। उन्होंने बताया कि हम अपने कपड़ो पर प्राकृतिक रंगो द्वारा अपने ही कारीगरों द्वारा पेंटिंग या कढ़ाई करवाते है। इससे की पहनने वाले को उसके नेचुरल लुक का आभास होता है। साथ ही, हमारी कोशिश है की हम अपनी लोक संस्कृति को अपने काम के माध्यम से लोगो तक पहुचाये। इसमे ट्राइबल डांस, इंस्ट्रूमेंट, प्रकृति की झलक मिलती है। ट्राइबल महिलायें शादी के पहले हरे रंग की साड़ी और शादी के बाद लाल रंग की साड़ी पहनती है, जिसकी बिक्री यहां की जा रही है।

जोहार ग्राम के नाम से झारखंड के पारम्परिक परिधानों को बेचने वाले आशीष सत्यव्रत साहू ने बताया कि उनके पारम्परिक और ओर्गानिक है। ये कपडे झारखंड के आदिवासी समुदाय जैसे खड़िया, मुड़ा, उरांव आदि उपयोग करते हैं। पवेलियन में झारखंड की पिनदना साडी, जो की प्रदेश महिलाये विशेष अवसरों पर पहनती है। वीरू गमछा पुरुषो के लिये और कुरखना शाल, जो की मोटा कपडा होता है। इसके अलावां उनके पास जैकेट, ओवरकोट, शर्ट, टोपी, मास्क और बेतरा लुगा, जिसे महिलायें बच्चो को साथ लेने के लिये उपयोग करती है। उपलब्ध है। उनकी पैकिंग भी झारखंड के स्टेट ट्री सखुआ के पत्तो के साथ किया जाता है।

उन्होंने बताया कि इसकी शुरूआत मार्च 2019 में जिला उद्योग केंद्र के प्रोजेक्ट पास होने के बाद शुरू की थी। जिसमे बाद उन्हें सरकार की तरफ से 15 प्रतिशत की सब्सिडी भी मुहैया कराइ गई थी। वर्तमान में वे सभी कपडे स्थानीय बुनकरों से खरीदते है। जिससे उनके संस्थान के साथ लगभग 30 बुनकर परिवारों को भी रोजगार मिलता है।

मां काली की प्रतिमा का हुआ विसर्जन

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। श्री डोरंडा बाजार काली पूजा समिति, डोरंडा द्वारा आयोजित माँ भवानी की 73 वीं पूजनोतसव का समापन शुक्रवार को माँ काली की प्रतिमा विसर्जन के साथ संपन्न हुआ। संध्या पांच बजे पूजा प्रांगण से विर्शजन शोभा यात्रा निकाली गयी जो झंडा चौक,काली मंदिर रोड हाथी खाना चौक, भवानीपुर, एजी मोड़ होते हुए बटम तालाब पहुंची जहाँ विधि विधान के साथ माँ काली की पूजा व आरती की गयी और प्रतिमा विर्शजन किया गया।

विसर्जन शोभा यात्रा में समिति के अध्यक्ष राजू चौरसिया सचिव जयदेव घोष के अलावे प्रदीप पांडेय, प्रदीप कुमार, मुन्ना मुकेश ठाकुर, राजेश वर्मा ,निर्मल गुप्ता ,सुनील सिन्हा ,प्रकाश मामा, अभिषेक ठाकुर चंदन सिंह, कुंदन कुमार, कमल गुप्ता, विजय सिन्हा ,शामिल घोष, संजय घोष, विश्वनाथ राम, त्रिपुरारी सिंह, विवेक सहाय, संजीव प्रसाद उमेश बर्मन, राकेश पाल, विजय सिन्हा,अशोक घोष अशोक पासवान, शंकर घोष सहित बड़ी संख्या में समिति सदस्य उपस्थित थे। यह जानकारी समिति के मीडिया प्रभारी मनोज वर्मा ने दी।

झारखंड पार्टी के केंद्रीय सचिव अंशु लकड़ा ने किया श्रद्धासुमन अर्पित

रांची। झारखंड पार्टी के केंद्रीय सचिव सह प्रवक्ता अंशु लकड़ा एक्का ने माउंट हेरा स्कूल इरबा के निदेशक सह इरबा मरकज अंजुमन कमिटी के नायब सदर आफताब आलम उर्फ बबलू के इंतकाल होने पर मृतक के पार्थिव शरीर को नमन कर श्रद्धांजलि दी। झापा की खिजरी विधानसभा प्रभारी अंशु लकडा एक्का के साथ शोकित परिवारजनों को ढांढस देने के लिए एसटी मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष बचन उरांव, युवा मोर्चा के जिला अध्यक्ष योगेश भगत, महिला मोर्चा रांची जिला उपाध्यक्ष बिनीता टोप्पो, ओरमांझी प्रखंड प्रभारी रानी देवी उपस्थित थे।

बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए जरूरी है बाल अधिकार

इस विश्व बाल दिवस पर, हर बच्चे के अधिकार की रक्षा पर नए सिरे से बल देना महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह सभी लड़कों एवं लड़कियों के लिए सुरक्षित तथा निष्पक्ष भविष्य की हमारी सामूहिक जिम्मेदारी का अहसास कराता है। विश्व बाल दिवस हर वर्ष 20 नवंबर को संयुक्त राष्ट्र द्वारा बाल अधिकार समझौता को अंगीकार किए जाने की वर्षगांठ के अवसर पर मनाया जाता है।

यह दिवस समाज के लिए एक अवसर है, जिसका उपयोग बच्चों के बेहतर भविष्य को लेकर एजेंडा तय करने और बाल अधिकारों की सार्वभौमिकता के लिए आवाज बुलंद करने के लिए किया जा सकता है। प्रत्येक बच्चे के लिए बाल अधिकार को निर्धारित किया गया है, चाहे उनकी उम्र, जाति, धर्म या लिंग कुछ भी क्यों न हो। संयुक्त राष्ट्र बाल अधिकार समझौता के तहत बच्चों के अधिकारों को रेखांकित किया गया है, जिसमें प्रत्येक बच्चे के लिए सुरक्षित जीवन, शिक्षा, समग्र विकास, निर्णयों में भागीदारी, पहचान और विकास के लिए एक समावेशी वातावरण को बढ़ावा देने जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों को शामिल किया गया है, बाल अधिकार बुनियादी मानव अधिकार है और एक समृद्ध और न्यायपूर्ण समाज का महत्वपूर्ण आधार है। दुर्भाग्य से, दुनिया भर में बहुत से बच्चों को इन अधिकारों से वंचित किया जा रहा है।

विश्व बाल दिवस बच्चों के अधिकारों की रक्षा करने और उन्हें फलने व फुलने के बेहतर अवसर प्रदान करने हेतु जागरूकता पैदा करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है।

सभी लड़कियों को समान अवसर मिलना चाहिए : हालांकि, लैंगिक

आस्था अलंग।

डॉ कनीनिका मित्रा।

भेदभाव अभी भी हर बच्चे के लिए एक समान वातावरण सुनिश्चित करने में एक बड़ी बाधा है। यह न केवल भारत में, बल्कि विश्व स्तर पर भी बाल अधिकारों की प्राप्ति में बाधा उत्पन्न करता है, जिसका लड़कों एवं लड़कियों दोनों पर अलग-अलग प्रभाव पड़ता है। समाज में व्याप्त भेदभावपूर्ण वातावरण के कारण लड़कों को अक्सर अधिक स्वतंत्रता दी जाती है, जबकि लड़कियों को प्रतिबंधों और दूसरी अन्य बाधाओं का सामना करना पड़ता है, जो उनकी योग्यता और निर्णय लेने की क्षमता को प्रभावित करता है। इसके कारण, लड़कियों की शिक्षा और विवाह सहित अन्य दूसरी पहलुए भी प्रभावित होती है और उन्हें बाल विवाह, किशोरावस्था में गर्भावस्था, बाल श्रम और जीवन में उनकी योग्यता और निर्णय लेने की क्षमता को प्रभावित करता है। इसके कारण, लड़कियों की शिक्षा और विवाह सहित अन्य दूसरी पहलुएं भी प्रभावित होती हैं और उन्हें बाल विवाह, किशोरावस्था में गर्भावस्था, बाल श्रम और जीवन में अवसरों की कमी जैसी सामाजिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है लैंगिक भेदभाव को समाप्त करने को लेकर लड़कों को भी प्रशिक्षित किया जाना चाहिए, ताकि वे लड़कियों के मुद्दों को उठाने में अपनी भूमिका अदा कर सकें। झारखंड में यूनिसेफ के कार्यक्रमों में से एक बाल पत्रकार कार्यक्रम लड़कों एवं लड़कियों दोनों के साथ काम करता है।

उज्ज्वल भविष्य के लिए बच्चों एवं किशोरों को सशक्त बनाएं : बाल अधिकारों को सुनिश्चित करने के लिए बच्चों एवं किशोर-किशोरियों को सशक्त बनाना आवश्यक है। किशोरावस्था बच्चों के जीवन में एक महत्वपूर्ण पड़ाव है, जिसमें किशोर-किशोरियों का तेजी से शारीरिक एवं मानसिक विकास के साथ-साथ भावनात्मक एवं व्यवहार परिवर्तन होता है और वे सामाजिक मानदंडों तथा लैंगिक भेदभाव आदि को लेकर गंभीर बनते हैं।

इस महत्वपूर्ण पड़ाव पर उनके अधिकारों को कायम रखना आवश्यक है, जिससे उन्हें बिना किसी भेदभाव के कार्य करने में सक्षम बनाया जा सके और पूर्वाग्रह मुक्त वातावरण को बढ़ावा दिया जा सके। उनकी क्षमताओं को सही दिशा प्रदान करने से सभी बच्चों के लिए खासकर कमजोर बच्चों के लिए एक समावेशी और न्यायपूर्ण दुनिया बनाने में सहायता मिलती है।

– डॉ कनीनिका मित्रा एवं आस्था अलंग, यूनिसेफ।

नगड़ी में स्पोर्ट्स माह के समापन पर बच्चे सम्मानित

खबर मन्त्र संवाददाता

पिस्का नगड़ी। सबशीला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में निःशुल्क शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों के बीच चिल्ड्रेंस डे और भगवान बिरसा मुंडा की जन्मदिवस के अवसर पर एक महीने से चल रहे स्पोर्ट्स माह का समापन हुआ। कुल 16 खेल व प्रतियोगिता कराए गए। जिसमे चेस, चमच गोटी रेस, बोरा रेस, एक पैर दौड़, दो पैर दौड़, तीन पैर दौड़, म्यूजिकल चेयर, बैलून फोड़, कैंडल बर्न, मैथ्स स्पीड टेस्ट, जी के टेस्ट, डांस प्रतियोगिता, संगीत और चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें विजेताओं को मेडल, प्राइज, गिफ्ट और सर्टिफिकेट दे कर सम्मानित किया गया। सभी बच्चों ने केक काट कर बाल दिवस मनाया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए शिक्षक रंजीत कुमार ने कहा कि हमें भगवान बिरसा मुंडा से सीखना चाहिए जिन्होंने मात्र 25 वर्ष की आयु में अंग्रेजों को पानी पिला दिया और भगवान की उपाधि प्राप्त कर ली।

स्पीड न्यूज

रातू बीडीओ ने सीओ का अतिरिक्त प्रभार संभाला

रातू। जिले के अपर समाहर्ता राजेश बरवार के निर्देश पर बीडीओ हरिशंकर बारिक ने 17 नवंबर की दोपहर सीओ का अतिरिक्त प्रभार संभाल लिया। उनके योगदान देते ही क्षेत्र के पंचायत प्रतिनिधि और ग्रामीणों ने खुशी का इजहार करते हुये उन्हें बधाई दी है। मौके पर अंचलकर्मी आदि मौजूद थे। बताते चलें कि 9 नवंबर को सीओ प्रदीप कुमार समेत राजस्व कर्मचारी सुनिल सिंह और दलाल जाफर अंसारी को एसीबी ने सेना के एक जवान से जमीन की दाखिल.खारिज मामले में 25 हजार रिश्वत लेते रंगेहाथ पकड़ा और गिरफ्तार कर जेल भेजा दिया है।

दो बाइक की भिड़ंत में एक की मौत, दो घायल

बुंडू। बुंडू थाना अंतर्गत रांची टाटा राष्ट्रीय राजमार्ग 33 के डामारी मोड़ के पास दो बाइक की आमने सामने भिड़ंत हो जाने से सवार 35 वर्षीय दीपक मुंडा पिता सुखलाल मुंडा ग्राम ईड़ीसेरेंग थाना राहे की घटना स्थल में ही मौत हो गई। जबकि दूसरी बाइक पर सवार सोनाहातू थाना क्षेत्र के चौकाहातू निवासी रमेश गौंझू उम्र 18वर्ष एवं पलटू गौंझू उम्र 20 वर्ष घायल हो गए। घायलों में रमेश गौंझू की हालत गंभीर बताई जाती है, जिन्हें बुंडू अनुमंडलीय अस्पताल में प्राथमिक ईलाज के बाद रिम्स रांची भेज दिया गया है। बुंडू पुलिस ने दोनों वाहनों को जब्त कर लिया है। शव को शनिवार को पोस्टमार्टम के लिए रिम्स भेजा जाएगा।

नौकरी के नाम पर ठगी करने वाला गिरफ्तार

इटकी। नौकरी दिलाने के नाम पर लाखों रुपये की ठगी करने के आरोपी को इटकी पुलिस ने रामगढ़ जिले के कुजू से गिरफ्तार कर मुख्य न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया। इस संबंध में इटकी थाना क्षेत्र के इटकी मोड़ निवासी प्रभा एक्का ने इटकी थाना में ठगी का मामला दर्ज कराया था। दर्ज प्राथमिकी में बताया गया है कि रामगढ़ जिले के कुजू निवासी असगर अंसारीए पिता नूरुद्दीन अंसारी ने नौकरी लगा देने के नाम पर अलग अलग किस्तों में करीब 40 लाख की ठगी कर ली।

साइकिल को बचाने में बस-कार में टक्कर

ओरमांझी। पालू के पास दो बास व एक कार के बीच आपस में टक्कर हो गई। शुक्रवार को सुबह 10:30 बजे हुई दुर्घटना के संबंध में बताया गया कि तीनों वाहन रामगढ़ की ओर से रांची जा रहे थें। पालू के पास कोयला लेकर जा रहे साइकिल ने भैरवी नदी पुल पार करने के बाद सड़क की बांए ओर रूक गया। पीछे से जा रही एक बस ने दाएं से जा रहे टेलर के कारण आगे नही जा सका और साइकिल को बचाने के लिए ब्रेक लगा दिया। उसके पीछे जा रहे कार ने बस के पीछे जैसे ही रूका तेज गति से जा रहे कार को जारदार टक्कर मार दिया। बाद में साइकिल सवार सहित तीनों वाहनों में समझौता कराकर सभी को छोड़ दिया गया। दुर्घटना में किसी को चोट नही लगी है।

मांडर के मुड़मा गांव में असामाजिक तत्वों ने चार मंदिरों की प्रतिमाओं को तोड़ा

ग्रामीणों ने मंदिरों की सुरक्षा के लिए प्रशासन को दिया अल्टीमेटम

खबर मन्त्र संवाददाता

मांडर। प्रखंड के मुड़मा गांव में चार मंदिरों में तोड़फोड़ और प्रतिमाओं को खंडित करने के खिलाफ उत्तेजित ग्रामीणों ने मंदिरों की सुरक्षा को लेकर प्रशासन को अल्टीमेटम दिया है। एक ज्ञापन सौंप कर मांग की गयी है कि मंदिर परिसर के नहीं बनने तक उसकी सुरक्षा प्रशासन करे। मांग पत्र में 24 घंटे के अंदर अपराधियों की गिरफ्तारी नहीं होने पर मांडर थाने में जेल भरो आंदोलन चलाने, साथ ही सड़क जाम पर बैठे किसी भी व्यक्ति पर प्राथमिक की दर्ज नहीं करने की मांगें शामिल है।

वहीं इस घटना की जानकारी तेजी से क्षेत्र में फैली और आसपास के कई प्रखंडों से लोग मुड़मा पहुंचने लगे। देखते ही देखते सैकड़ों की संख्या में वहां लोगों का जमावड़ा लग गया। इसमें सबसे खास बात यह थी कि मुस्लिम समुदाय के लोगों ने भी इस घटना की निंदा करते हुए वे भी जामकर्ताओं के साथ स्थल पर बैठ गए। सभी लोग आरोपियों की तत्काल रफ्तारी की मांग कर रहे थे। इधर लोगों के आक्रोश को देखते हुए एसडीओ व ग्रामीण एसपी द्वारा महिला पुलिस बल जिला पुलिस बल जैप और रैफ के जवानों के साथ वाटर केनन को भी घटनास्थल पर बुला लिया गया था। इनके अतिरिक्त बीरो डीएसपी राजत मणि बकाला, खलारी डीएसपी अंकित राय, सिल्ली डीएसपी सहित मांडर इंस्पेक्टर अवधेश ठाकुर, मांडर थाना, चान्हो थाना, रातू थाना, बेड़ो थाना, ठाकुरगांव थाना, बुढ़मू थाना, मैकलुस्कीगंज थाना प्रभारी दलबल के साथ हालात पर नियंत्रण पाने के लिए वहां मौजूद थे। वहीं दूसरी ओर प्रशासन द्वारा डॉग स्क्वाड, एफएसएल की टीम, कॉल डंप को भी जांच को बुलाया गया। ऑफिशियल टीम ने सैंपल जमा कर अपने साथ लेते गई। वहीं डॉग स्क्वायड की टीम द्वारा कोई नतीजा नहीं निकला।

सड़कों पर लग गयी वाहनों की लंबी कतार

जाम के कारण सड़क के दोनों और वाहनों की लंबी कतार लग गई थी। जिन-जिन प्रखंडों में लोगों को इस घटना की सूचना मिली वहां भी कई स्थानों पर जाम किया गया। रांची-मेदिनीनगर मुख्य पथ को बरामदे चौक, मांडर चौक, हेशमी मोड़, कॉलेज गेट, बीजूपाड़ा, चोरेया मोड़ सहित कई अन्य स्थानों पर जाम कर दिया गया था। जाम के कारण कई निजी स्कूलों ने अपने यहां छुट्टी घोषित कर दी। वहीं दूसरी ओर जाम के कारण यात्रियों को भी भारी असुविधा का सामना करना पड़ा। घटना के विरोध में मुड़मा चौक सहित आसपास के जगहों पर अपनी दुकानों को भी बंद रखा।

बंधु तिर्की ने की घटना की घोर निंदा

कांग्रेस नेता और मांडर के पूर्व विधायक बंधु तिर्की ने इस घटना को शर्मनाक बताया। उन्होंने कहा है कि अपराधी समाज में खटास पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने सद्भाव बिगाड़ने की कोशिश की हौ मुड़मा में धार्मिक स्थल को नुकसान पहुंचाने एवं उसकी पवित्रता को खंडित करने की इस घटना की वह निंदा करते हैं। उन्होंने मांग की है कि इसकी उच्चस्तरीय जांच हो और दोषियों को चिह्नित कर जेल भेजा जाए। बंधु तिर्की ने कहा कि मैं सभी धर्म, जाति और समुदाय के लोगों से आह्वान करता हूं कि वे ऐसी घटना के खिलाफ मुखरता से खड़े हों।

प्रतिमा तोड़ने पर इटकी में विरोध-प्रदर्शन

इटकी। इटकी के दरहाटांड़ में शुक्रवार की शाम मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन का पुतला दहन कर लोगो ने मांडर के मुड़मा के मंदिरों में स्थापित देवी-देवताओ की प्रतिमाओं को असामाजिक तत्वों द्वारा तोड़े जाने पर कड़ा विरोध जताया है। इसके पूर्व दर्जनों लोग मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन का पुतला लेकर दरहाटांड़ चौक पहुंचे। इस दौरान आक्रोशित लोग प्रशासन होश में आओ के नारा लगा रहे थे। वक्ताओं ने ऐसी घृणित कार्य करने वाले दोषियों को जल्द गिरफ्तार करने की मांग करते हुए प्रशासन को चेताया है कि समय सीमा पर दोषियों को अगर गिरफ्तारी नही की जाती है तो उग्र आदोलन किया जायेगा।

शिवदास गोस्वामी बने कांग्रेस जिला महासचिव

अनगड़ा। प्रखंड के गेतलसूद निवासी शिवदास गोस्वामी को रांची जिला कांग्रेस अध्यक्ष डॉ राकेश किरण महतो ने जिला कांग्रेस कमेटी का महासचिव मनोनित किया है । साथ ही लोकसभा चुनाव 2024 के लिए राहे प्रखड का प्रभारी नियुक्त किया गया है। महासचिव मनोनित किए जाने तथा रहे प्रखंड का प्रभारी नियुक्त किए जाने पर पूर्व केन्द्रीय मंत्री सुबोध कांत सहाय अमूल निरज खलखी सतीश पॉल मुंजनी काके प्रमूख सोमनाथ मुन्डा अनगड़ा प्रमूख दीपा उरांव राजेन्द्र मुन्डा श्रवण मुन्डा फारूक खान शफीउल्ला अन्सारी तुलसी खरवार जितेन्द्र महतो आमाल अन्सारी साकीर अन्सारी छोटेलाल महतो जॉन तिग्गा माधो कच्छप शफीक अन्सारी ने उन्हे बधाई दी है।

नहाय-खाय के साथ छठ महापर्व शुरू

खबर मन्त्र संवाददाता

खलारी। चार दिनों तक चलने वाली लोक आस्था का महापर्व छठ शुक्रवार से पूरे विधि विधान से नहाए खाए के साथ शुरू हो गया। छठ व्रतियों ने नदी तालाब में स्नान कर भगवान सूर्य को जल देने के बाद कद्दू भात का सेवन कर इस महापर्व की शरुआत की। छठ के महाप्रसाद के लिए गेहूं धोकर सूखाने का भी काम किया गया। कोयलांचल के हर तरफ छठ गीतों से पूरा भक्तिमयी गुंजायमान हो रहा है।

छठ व्रतियों ने कद्दू-भात का चढ़ाया प्रसाद

तमाड़। छठ व्रतियों ने पूरी शुद्धता से कद्दू.भात का प्रसाद बनाया। इसको लेकर सभी छठ व्रतियों ने सुबह से ही स्नान-ध्यान कर शुद्ध मन से कद्दू की सब्जी, चावल और चने की दाल का प्रसाद बनाकर प्रसाद के रूप में ग्रहण किया।

छठ व्रती आज करेंगे खरना

रातू। शनिवार को हजारों व्रती खरना पूजा करेंगे। रविवार की शाम अस्ताचलगामी और सोमवार की सुबह उदयीमान सूर्य को अर्ध्य दिये जायेंगे। काठीटांड़, झखराटांड़, कमड़े, चट्टी, दलादिली, रवि स्टील व मलमाडु आदि चौक-चौराहे में पूजा सामग्री की दुकानें सजी हैं। फन कैशल पार्क स्थित महाराजा तालाब, हुरहुरी, फेटा, चिलदाग टीपूटोली, तारूप, उषामातु, पिर्रा, पुरियो, टिकराटोली, मलमाडू, जाड़ी, कन्नौज, काटू, मुरगू, मखमंदरो, लहना, पाली, पंडरा, बिजुलिया, तिगरा, बाजपुर, हिंसरी, अगड़ू, गुड़ू, सिमलिया, गायत्री नगर, नयाटोली, गुटूटोली, तिलता, कमड़े, झिरी, चटकपुर, सोसो, नवांसोसो और दलादिली में छठ घाट बनाये गये हैं। वहीं श्री साईं स्वयंसेवी संस्था और छठ पूजा समिति की ओर से लाइटिंग और रंग.बिरंगी विद्युत सजावट की गयी है। विभिन्न संगठन की ओर से 19 नवंबर को पूजा सामग्री बांटी जायेगी। अगली सुबह भक्तों के लिये दूधए शुद्ध पेयजल और चाय की व्यवस्था है।

पूर्व विधायक ने दिवड़ी मंदिर में टेका मत्था

तमाड़। रांची-टाटा राजमार्ग तमाड़ स्तिथ प्रसिद्ध प्राचीनकालीन दिउड़ी मंदिर में शुक्रवार की सिल्ली के पूर्व विधायक अमित महतो ने माता के दरबार में मत्था टेक पूजा अर्चना किए। मंदिर के पूजारी ने उनका पूजा अर्चना करायी। पूर्व विधायक अमित महतो अपनी विवाह के वर्षगांठ में पत्नी पूर्व विधायक सीमा महतो और सपरिवार माता के दर्शन करने पहुंचे।

जिप अध्यक्ष और आजसू नेता जर्जर आरइओ पथ का करा रहे मरम्मत

रातू। सरकार व जन प्रतिनिधियों की कथित उदासीनता के मद्दे नजर जिला परिषद अध्यक्ष निर्मला भगत और आजसू के हटिया विधानसभा प्रभारी भरत कांसी ने क्षेत्र में विकास का बीड़ा उठाया है। छठ महापर्व में व्रती परिवारों की कठिनाइयों को देखते हुये वह संगम रेस्तरां स्थित राष्ट्रीय राजमार्ग से मां काली मंदिर तक वर्षों से जर्जर आरईओ पथ का मरम्मत करा रहे हैं। इससे न केवल रानी बगीचा के लोगए बल्कि राहगीरों ने श्रीमती भगत व श्री कांसी के प्रति आभार प्रकट किया है। इससे पहले भी निजी खर्च से दोनों सड़कों की मरम्मत करायी जा चुकी है।

शपथ - पत्र

1. मैं ध्वज राम धोबी पिता स्वर्गीय बद्दू लाल निवासी पूणार्डीह कॉलोनी धमधामिया, पोस्ट तुमाग, पुलिस स्टेशन मैक्लुस्कीगंज जिला रांची का निवासी हूं।
2. मैं दिनांक 21/07/2023 को कार्यपालक दंडाधिकारी सदर रांची द्वारा शपथ पत्र संख्या 24 11 द्वारा घोषणा किया हूं की मेरा बेटा जिसका पुकारू नाम राहुल कुमार एवं बेटी रिद्धि कुमारी मेरा सेवापुस्तिका में अंकित है मैट्रिक सर्टिफिकेट एवं आधार कार्ड मे बेटा का नाम राहुल कुमार बरेठ एवं रिद्धि बरेठ है जो सही है।
3. आज दिनांक 21/07/2023 से राहुल कुमार बरेठ एवं रिद्धि बरेठ के नाम से जानी पहचानी जायेगी।
4. किसी भी दस्तावेज में राहुल कुमार एवं रिद्धि कुमारी है उसे संशोधित कर राहुल कुमार बरेठ एवं रिद्धि बरेठ किया जाए।

शपथ- पत्र

मैं हरेंद्र राम पुत्री अनिता कुमारी ग्राम सरहू, पोस्ट : झरगाड़ा हुसैनाबाद जिला पलामू शपथ करते हैं कि
1. अनिता कुमारी एवं गुड़िया देवी दोनों नाम का मैं ही एक महिला हूं।
2. यह कि झारखंड अधिविद्य परिषद रांची द्वारा प्राप्त प्रवेश पत्र संख्या 3115841 है जिसमें मेरा नाम अनिता कुमारी दर्ज है।
3. यह कि ड्गारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण द्वारा निर्गत आधार कार्ड संख्या 7074 9547 7684 में मेरा नाम गुड़िया देवी दर्ज है।
4. यह कि आज से मैं अनिता कुमारी के नाम से जानी एवं पहचानी हूं तथा मेरा जन्म तिथि 10-05-1991 है।
5. यह कि यह शपथ पत्र आधार कार्ड में अपना नाम अनिता कुमारी दर्ज कराने एवं सूचना पत्राचार में दर्ज कराने हेतू दे रही हूं।

ओरमांझी : सीपीआर से बचायी गयी नर्सिंग के छात्र की जान

खबर मन्त्र संवाददाता

ओरमांझी। सीपीआर एक जीवनरक्षक तकनीक है। जिनकी सांसे नही चल ही है, उसे समय रहते सीपीआर देकर जान बचाई जा सकती है। इसे शाइन नर्सिंग कॉलेज के छात्रों ने प्रमाणित भी कर दिया। 15 नवंबर की रात में कॉलेज के हॉस्टल में फांसी लगाने वाले शाइन नर्सिंग कॉलेज के छात्र 22 वर्षीय शुभम कुमार को उसके साथी छात्रों द्वारा सीपीआर देकर ही उसकी जान बचा ली है। हालकि छात्र अभी भी मेदंत हॉस्पिटल में भर्ती है। जहां उसका उपचार चल हा है। बताय गया कि घटना के बाद छात्रों ने ही दरवाज तोड़ कर अंदर गए। फांसी में लटका छात्रा को निचे उतार कर देखा तो उसकी सांसे थम चूकी थी। जिसके बाद छात्रों ने तत्काल सीपीआर दिया। जिससे छात्र की सांसे लौट आई, जिसके बाद तत्काल उसे हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया। साथी छात्रों ने बताया कि नर्सिंग की प्रषिक्षण के दौरान ही उन्हे सीपीआर देने की तकनिक भी बताई गई थी। जो आज अपने साथी को बचाने में काम आई। बताया गया कि सभी छात्र सीपीआर देने के साथ इसका महत्व को जानते थें। रात में भर्ती करने के बाद छात्र दूसरे दिन शाम तक बोल नही पा रहा था। बताया गया कि छात्र अब बोलना शुरू भी कर दिया है। लेकिन एक ही बात को बार-बार दुहरा रहा था। इस संबंध में उपचार कर रहे चिकित्सकों का कहना है कि दवा की असर के कारण ऐसा हो रहा है। वहीं घटना की सूचना मिलने के बाद बिहार से पहुंचे मां पिंकी देवी, पिता पप्पु सिंह व स्वजनों को भी उम्मीद है कि अब उसके बेटे की जान बच जाएगी।

दीदी नीलम आनंद स्मृति फुटबॉल टूर्नामेंट 28 से

खबर मन्त्र संवाददाता

ओरमांझी। शिव शिष्य हरिद्रानंद फाउंडेशन एवं शिव शिष्य परिवार के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित होने वाले दीदी नीलम आनंद स्मृति फुटबॉल प्रतियोगिता 28 नवंबर से शुरू होगी। गुरगांई बुढ़ीबागी मैदान ओरमांझी में होने वाले इस प्रतियोगिता का मुख्य संरक्षक अर्चित आनंद को बनाया गया है। इसकी जानकारी देते हुए आयोजन समिति के बिनोद महतो ने बताया कि इस प्रतियोगिता में ओरमांझी सहित अन्य प्रखंड के 16 टीमों को इंट्री दिया गया है। युवा पावर फुटबॉल क्लब गुरगांई की सहयोग से तीन दिवसीय प्रतियोगिता का फाइन मैच 30 नवंबर को होगा। विजेता टीम को 31000 व उपविजेता टीम को 21000 हजार रूपए के अलावा शील्ड दिया जाएगा। वहीं सेमीफाइनल खेलने वाले अन्य दोनो टीम को 5100-5100 हजार व फुटबाल दिया जाएगा।

कार्यालय नगर पंचायत कोडरमा

अति अल्पकालिन ई – निविदा आमंत्रण सूचना संख्या – 06/2023–24 दिनांक 17.11.2023

क0 सं0	वार्ड सं0	कार्य का नाम	निविदा की राशि	अग्रधन की राशि	परिमाण विपत्र का मूल्य	कार्य पूर्ण करने की अवधि
1	03	Construction of RCC Drain with slab from the front side of the house of Asgar Khan to kids school, Baherwatand in ward no-03, Under Nagar Panchayat Koderma	3889988.00	**78000.00**	**5000.00**	03 Months
2	11	Construction of PCC Road, Guardwall and Culvert from Shiv Mandir, Dudhimati to the Land of Rajesh Yadav Via Land of Sharda Press & Land of Raju Yadav in Ward No-11, Under Nagar Panchayat Koderma.	3785700.00	**76000.00**	**5000.00**	03 Months
3	15	Construction of RCC Drain with slab from the house of Mahanand lal to the Culvert of PWD Road in ward no-15, Under Nagar Panchayat Koderma.	3590985.00	**72000.00**	**5000.00**	03 Months
A	Date of Publication of Tender on website			**21-11-2023**		
B	Last Date / Time for receipt bid on online			**28-11-2023**		
C	Date of opening Tender			**30-11-2023**		
D	Name & Address of office inviting tender			**Executive Officer Nagar Panchayat Koderma**		
E	Helpline No.			+91-8434850985		

Note :-
- Only E-Tenders will be accepted.
- Further details can be seen on website- http://jharkhandtenders.gov.in
- E-procurement में Tender Fee एवं EMD की राशि ऑनलाईन सूचना प्रौधोगिकी एवं ई–गवर्नेस विभाग, झारखण्ड, रॉची का आदेश ज्ञापांक – 120 दिनांक – 03.10.2023 एवं नगर विकास एवं आवास विभाग, झारखण्ड रॉची का पत्रांक 05/विविध (e-tender)–12/2023/न0वि0–4847 (अनु0) दिनांक – 11.10.2023 के तहत् ली जायेगी।

ह0/–
प्रशासक
नगर पंचायत कोडरमा

PR 311539 Urban Development (23-24)_D

लोक आस्था के महापर्व की सर्वत्र मची धूम

इंग्लैंड में भारतीयों ने किया नहाय खाय आज करेंगे खरना

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। छठ महापर्व हमारी लोक आस्था का पर्व है। भारतवंशी चाहे जिस भी देश में हों अपनी परंपरा और आस्थाओं को नहीं छोड़ते हैं। कुछ इसी तरह इंग्लैंड में भी छठ महापर्व को लेकर पूरा माहौल भक्तिमय हो गया है। इंग्लैंड के भारत वंशी लोग एकजुट होकर पूरे भक्तिभाव से 17 नवंबर को नहाय खाय किये। इसके साथ ही इंग्लैंड में भी छठ महापर्व की धूम मच गई। इस आयोजन को सुचारू ढंग से संचालित करने में बिहारी कनेक्ट नामक संस्था अपना पूरा सहयोग प्रदान कर रही है। संस्था के अध्यक्ष डॉ उद्धेश्वर कुमार सिंह और सचिव कैप्टन ओमप्रकाश सहित 57 स्वयंसेवियों के सहयोग से यह पूरा आयोजन अपना भव्य स्वरूप दिखा रहा है और दिन प्रतिदिन लोगों की आस्था जुड़ती ही जा रही है।

नहाय खाय के बाद प्रसाद का वितरण

17 नवंबर को सभी व्रतियों ने नहाय खाय का अनुष्ठान पूरा कर छठ महापर्व उत्सव का शुभारंभ किये हैं। इस मौके पर व्रतियों ने कद्दू-भात पहले भुवन भास्कर को समर्पित किये। इसके बाद प्रसाद के रूप में स्वयं ग्रहण कर अपने सगे-संबंधितों सहित आसपास के लोगों को वितरित किये। इसके साथ ही छठ महपर्व की शुरूआत हो गई। इस सांस्कृतिक उत्सव के पीछे बिहारी कनेक्ट यूके का विशेष सहयोग है। इस वर्ष 1200 उत्साही व्यक्तियों ने इस महापर्व के लिए संस्था में अपना पंजीकरण कराया है। एक रिसोर्ट पर जुटकर सभी भारतवंशी एक साथ छठ महापर्व मनाते हैं। विगत वर्ष 600 लोग मिलकर एक साथ छठ महापर्व मनाये थे।

लंदन और मिडलैंड के निकट स्थित इस समारोह को अगस्त में एक डोनेशन अभियान के तहत संभव बनाया गया। इस आयोजन के लिए 18 हजार की राशि जुटाने का लक्ष्य रखा गया था, जिसमें व्रतियों के आवास, भारत से पूजा सामग्री का आयात, सभी मेहमानों के लिए भोजन, नाश्ता, दोपहर का भोजन और रात के खाना की व्यवस्था की गई है। इसके साथ ही दो हजार लोगों के लिए प्रसाद की तैयारी की गई है। इसके लिए दस हजार ठेकुआ तैयार किया जाएगा।

सभ्यता-संस्कृति को बचाने का संकल्प

इस आयोजन को सफल बनाने के लिए बिहारी कनेक्ट संस्था के 57 स्वयंसेवकों ने तन-मन से दिन-रात एक कर सहयोग प्रदान किया है। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य ही यह है कि हमें अपनी संस्कृति को नहीं भूलना है। अपनी संस्कृति को बचाये रखने के लिए संस्था के सदस्य अनवरत लगे हुए हैं।

समाहरणालय कोडरमा, (विशेष भू-अर्जन शाखा)
प्रपत्र-VI 'क'
झारखण्ड सरकार, समाहर्ता या समुचित सरकार

प्रारंभिक अधिसूचना

(अधिनियम–30/2013 धारा–11 (1) के अधीन)।

अधिसूचना संख्या 273/ भू–अर्जन दिनांक :– 10/11/2023

चूंकि झारखण्ड सरकार/समाहर्ता को यह प्रतीत होता है कि ग्राम– मरकच्चो, थाना मरकच्चो, थाना नं०–141, अंचल कोडरमा, जिला कोड़रमा में सार्वजनिक परियोजनार्थ यथा पंचखेरो जलाशय योजना अन्तर्गत, डूबा क्षेत्र (अतिरिक्त) के लिए भूमि ली जानी अपेक्षित है। राजस्व निबंधन एवं भूमि सुधार विभाग, झारखण्ड रांची के पत्रांक 376/नि०/दिनांक 06.07.2018 में संलग्न विधि (विधान) विभाग के गजट संख्या–628, दिनांक 26.06.2018 में प्रकाशित अभिसूचना के द्वारा भू–अर्जन पुनर्वासन और पूर्नव्यवस्थापन में उचित प्रतिकर और पारदर्शिता अधिकार (झारखण्ड संशोधन) अधिनियम–2017 के अनुसार सिंचाई परियोजना अन्तर्गत सामाजिक समाघात मूल्यांकन अध्ययन S. I. A. की कार्यवाई से छूट प्रदान की गयी है। फलस्वरूप वर्तमान अर्जन S. I. A. से प्रभावित नहीं होगा। प्रभावित परिवारों पूनर्वासन एवं पूर्नव्यवस्थापन के प्रयोजनार्थ अपर समाहर्ता अथवा नियम 2 (1) (ख) के तहत नियुक्त पदाधिकारी प्रशासक के रूप में नियुक्त किये गये हैं। अतएव अधिसूचित किया जाता है कि ग्राम– मरकच्चो, थाना मरकच्चो, थाना नं०–141, अंचल कोडरमा, जिला कोड़रमा में उपर्युक्त कथित परियोजना के लिए कमोवेश 0.07 एकड़ मानक माप का भूखण्ड जिसका विस्तृत विवरण निम्नलिखित है अर्जनाधीन है।

क्रमांक	खाता सं0	खेसरा सं0	स्वामित्व का प्रकार	भूमि का प्रकार	अर्जनाधिन रकवा एकड़	रैयत का नाम	सीमा भूखण्ड			
							उ0	द0	पू0	प0
1	1657	36	टाँड़		0.07	मो0 अफजल शेख पिता स्व0 तबारक शेख, निवासी नि0 ग्राम।	36 अंश	15089	रास्ता	37

यह अधिसूचना भू– अर्जन पुनर्वासन और पुनर्व्यवस्थापन में उचित प्रतिकर एवं पारदर्शिता का अधिकार अधिनियम 2013 (अधिनियम सं० 30/2013) की धारा 11 (1) के उपबंधों के अधीन सभी सम्बंधित व्यक्तियों के लिए जारी की जाती है।

योजना से सम्बंधित अर्जनाधीन भूमि का निरीक्षण विशेष भू–अर्जन पदाधिकारी हजारीबाग के कार्यालय में किसी कार्य दिवस को कार्यावधि में किया जा सकेगा। झारखण्ड सरकार/समाहर्ता सह समुचित सरकार उक्त अधिनियम की धारा 12 में यथा उपबंधित एवं यथाविनिदिष्ट कार्यों के समुचित निष्पादन हेतु उपेक्षित किसी भूमि का सर्वेक्षण एवं उनकी प्रविष्टि करने, किसी भूमि के किसी स्तर को मापने के लिए अवभूमि खोदने या भू–वेधन–छिद्र करने सहित सभी अन्य कार्यों के संचालन करने हेतू विशेष भू–अर्जन पदाधिकारी, हजारीबाग और उनके कर्मचारी को प्राधिकृत करती है।

अधिनियम की धारा 11(4) के अधीन कोई व्यक्ति जिला– समाहर्ता के प्रर्विक अनुमोदन के बिना इस अधिसूचना के प्रकाशन की तिथि से प्रारंभिक अधिसूचना में विनिर्दिष्टि भूमि का कोई अंतरण यथा क्रय विक्रय नहीं करेगा या ऐसा कोई अंतरण नहीं करवायेगा या ऐसी भूमि पर कोई अवभार नहीं उत्पन्न करेगा। अधिनियम की धारा 15 के अधीन यथाउपबंधित इस अधिसूचना के प्रकाशन की तिथि से 60 (साठ) दिनों के अन्तर्गत भू–अर्जन की बाबत किसी प्रकार की आपत्तियाँ हितबद्ध व्यक्ति द्वारा विशेष भू–अर्जन पदाधिकारी, हजारीबाग के समक्ष दर्ज की जा सकती है।

ह0/–
विशेष भू–अर्जन पदाधिकारी,
तेनुघाट परियोजना, हजारीबाग।

ह0/–
अपर समाहर्ता
कोड़रमा।

ह0/–
उपायुक्त, कोड़रमा सह
समुचित सरकार, झारखण्ड।

PR.NO.311584 Water Resource(23-24):D

खबर मन्त्र

रांची. शनिवार.18 नवंबर 2023

अभिव्यक्ति

epaper.khabarmantra.net

उदासीनता पर सवाल

लोक कल्याणकारी नीतियां बनाना हर सरकार का प्राथमिक दायित्व होता है। मोदी सरकार ने ऐसी अनेक लोक कल्याणकारी योजनाओं को लागू किया है। प्रांतों में राजस्थान में अशोक गहलोत ने तो मध्य प्रदेश में शिवराज सिंह सरकार ने भी ऐसी अनेक लोक कल्याणकारी योजनाएं चुनाव सन्निकट आते देखकर शुरू की है, जिन्हें हम लोककल्याण से अधिक मुफ्त की रेवड़ियां कह सकते हैं। मतदाताओं को जागरूक करने के लिये अणुव्रत विश्व भारती एवं भारतीय मतदाता संगठन ने मतदाता जागरूकता अभियान चला रखा है। जिसका उद्देश्य है कि मतदाता को सोचने को विवश करना कि अपराधी हमारा वोट कैसे पा लेते हैं? राष्ट्र की धन-सम्पदा से खिलवाड़ करने वाले भ्रष्टाचारी हमारे आदर्श कैसे बन जाते है? क्यों हम भ्रष्टाचारियों, अवसरवादियों और अपराधियों को वोट देते हैं और फिर वे हम पर राज करते हैं? हम इन स्थितियों को चुपचाप स्वीकार किए रहते हैं। लेकिन आखिर कब तक? कब तक हम ठगे जाते रहेंगे? कब तक मूक दर्शक बनकर राष्ट्र को लूटता हुआ देखते रहेंगे? व्यक्ति और व्यवस्था के समवेत सुधार से ही समाज में बदलाव आ सकता है। व्यवस्था को संचालित करने वाले हाथ जब तक पवित्र नहीं होंगे, तब तक व्यवस्था को बदलना भी अपर्याप्त होगा। लोकतन्त्र को मजबूत बनाने के लिए योग्य प्रत्याशी का चयन जरूरी है। जिस तरह विभिन्न परीक्षाओं में मापदंड जरूरी होता है, उसी तरह राजनीति में भी योग्यता का मापदंड निश्चित होना चाहिए। वोट उसी को दें, जो ईमानदार हो, नाशमुक्त हो, जातिवादी जुनून और सांप्रदायिक कट्टरता से दूर हो तथा राष्ट्रीय एकता, मानवीय मूल्यों और सामाजिक सौहार्द में जिसका विश्वास हो। व्यक्ति जिस तरह अपनी बेटी का हाथ थमाते समय विचार करता है उसी प्रकार वोट देते समय भी विचार कर ही अपना वोट देना चाहिए।

बढ़ता संकट

दइंस्टीट्यूट फॉर इकोनॉमिक्स एंड पीस यानी आईईपी की हालिया रिपोर्ट गंभीर चिंता का विषय है। रिपोर्ट में व्यापक अध्ययन के बाद कहा गया है कि पांचवें दशक तक दुनिया के 2.8 अरब लोगों को पारिस्थितिकी खतरे वाले क्षेत्रों में रहना पड़ेगा। यद्यपि मौजूदा समय में भी 1.8 अरब लोग गंभीर पारिस्थितिकी खतरों से जूझ रहे हैं। दरअसल, आईईपी ने 221 देशों और 3594 उप-राष्ट्रीय क्षेत्रों में विभाजित स्वतंत्र क्षेत्रों को अपने अध्ययन में शामिल किया है, जहां दुनिया की 99.99 प्रतिशत आबादी निवास करती है। इसमें से करीब 66 देशों को कम से कम एक गंभीर पारिस्थितिकी खतरे का फिलहाल सामना करना पड़ रहा है। इसमें तीन देश हॉटस्पॉट बनने से उनका अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया। दरअसल, जल, वायु, ध्वनि व मिट्टी प्रदूषण के अलावा खाद्य आपूर्ति श्रृंखला का बाधित होना, जनसंख्या वृद्धि तथा प्रतिकूल कुदरती परिस्थितियों के कारण होने वाला विस्थापन आदि पारिस्थितिकी संकट के मूल में हैं। वर्ष 2050 तक 2.8 अरब से अधिक लोग संकटग्रस्त इलाकों में रहने को बाध्य होंगे। मौजूदा हालात इतने खराब होते जा रहे हैं कि गंभीर संकट से जूझते देशों की संख्या बीते साल तीन से बढ़कर तीस हो गई है। इतना ही नहीं, गंभीर परिस्थितियों के चलते तीन देश पारिस्थितिकी संकट के चलते हॉटस्पॉट बनकर उभरे हैं और उनका अस्तित्व ही संकट में पड़ता नजर आ रहा है। इन तीन देशों में हमारा पड़ोसी म्यांमार व नाइजर तथा इथियोपिया सम्मिलित हैं। इन देशों में आंतरिक अशांति व अकुशल शासनतंत्र के चलते पर्यावरणीय चिंताएं हाशिये पर चली जाती हैं, जिसके चलते मानवीय त्रासदी लगातार भयावह होती जा रही है। मौसम की तल्खी के चलते जहां फसलों के उत्पादन पर प्रतिकूल असर पड़ा है, वहीं बाढ़ व भूस्खलन जैसी आपदाओं ने संकट को और गहरा किया है।

गंगा की निर्मलता से ही सांस्कृतिक विकास

गंगा नदी में प्रदूषण को कम करने के लिए 1985 में गंगा कार्य योजना (जीएपी) का शुभारंभ किया गया था। इसके जल के बिना सनातन धर्म के किसी अनुष्ठान की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। गंगा नदी अपनी सहायक नदियों के साथ 10 लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल के अति विशाल उपजाऊ मैदान की रचना करती है। सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से उर्वर यह मैदान अपनी घनी जनसंख्या के कारण भी जाना जाता है। लगभग 3 किलोमीटर चौड़ी और 100 फीट यानी 31 मीटर की अधिकतम गहराई वाली यह नदी भारत में बेहद पवित्र मानी जाती है तथा इसकी उपासना मां और देवी के रूप में की जाती है।

हिंदू धर्म में कहा जाता है कि यह नदी श्रंगा नदी की प्रधान शाखा भागीरथी है, जो उत्तराखंड स्थित कुमायूं में हिमालय के गोमुख नामक स्थान पर गंगोत्री हिमनदी से निकलती है। इस नदी की तुलना मिस्र की नील नदी के महत्व से की जाती है।

इस पवित्र पावन नदी में मछलियों तथा सर्पों की अनेक प्रजातियां पाई ही जाती हैं। मीठे पानी वाले दुर्लभ डॉल्फिन भी यहां पाए जाते हैं। यह कृषि, पर्यटन, खेल तथा उद्योगों-कारोबारों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है। लेकिन इसकी पहचान दुनिया की सबसे अधिक प्रदूषित नदियों में से एक के रूप में की गई है। उदाहरणतया, हरिद्वार में गंगा जल में 55 सौ से अधिक कोलिफॉर्म है, जबकि कृषि के लिए माने डी श्रेणी के लिए मानक 5000 से कम कोलिफॉर्म हैं।

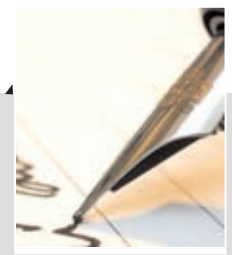

-अशोक कुमार

इस पवित्र पावन नदी में मछलियों तथा सर्पों की अनेक प्रजातियां पाई ही जाती हैं। मीठे पानी वाले दुर्लभ डॉल्फिन भी यहां पाए जाते हैं। यह कृषि, पर्यटन, खेल तथा उद्योगों-कारोबारों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है। लेकिन इसकी पहचान दुनिया की सबसे अधिक प्रदूषित नदियों में से एक के रूप में की गई है। उदाहरणतया, हरिद्वार में गंगा जल में 55 सौ से अधिक कोलिफॉर्म है, जबकि कृषि के लिए माने डी श्रेणी के लिए मानक 5000 से कम कोलिफॉर्म हैं।

भारत की सबसे पावन नगरी वाराणसी में कोलिफॉर्म जीवाणु गणना, संयुक्त राष्ट्र संघ नियंत्रित विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा स्थापित सुरक्षित मानक से, कम से कम 3000 गुना अधिक है। पर्यावरण जीव विज्ञान प्रयोगशाला, प्राणी विज्ञान विभाग, पटना विश्वविद्यालय द्वारा किये गए एक अध्ययन में वाराणसी शहर में गंगा नदी में पारे की उपस्थिति पाई गई है। यहां नदी के पानी में पारे की वार्षिक सघनता 0.00023 पीपीएम थी। इन सबका असर यह है कि भारत के सबसे मूल्यवान संसाधनों में से एक गंगा नदी की क्रमिक हत्या हो रही है। इस योजना के अंतर्गत 200 योजनाएं पूरी हो चुकी हैं। फिर भी प्रदूषण स्तर कम करने में अब तक कोई ठोस प्रगति नहीं हुई है। जानकारी के मुताबिक, दिसंबर 2019 में गंगा नदी की सफाई के लिए विश्व बैंक एक अरब डॉलर उधार देने पर सहमत हुआ। यह धन भारत सरकार की 2020 तक गंगा में उपस्थित अवशिष्ट का अंत करने की पहल का हिस्सा है। सर्वप्रथम, हमें यह तय करना होगा कि किसी भी कीमत पर मलजल और उद्योगों का गंदा पानी गंगा में नहीं जा पाए। इसके लिए कानपुर, इलाहाबाद, बनारस, पटना, भागलपुर इत्यादि बड़े शहरों में बड़ा ड्रेन बनाया जाए, जिसमें वाहित मल और औद्योगिक कचरा युक्त जल का ट्रीटमेंट व रिसाइकिल कर उस जल को कृषि कार्य के उपयोग में लाया जाए।

तीसरा, प्रत्येक स्नान घाट के किनारे शौचालय और चेंजिंग रूम की व्यवस्था होनी चाहिए और उसकी साफ-सफाई का पूर्ण ध्यान रखा जाना चाहिए। चतुर्थ, हरिद्वार से लेकर हल्दिया तक गंगा की चौड़ाई कहीं भी 3 किलोमीटर से कम नहीं रहे, इस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। इस 3 किलोमीटर की चौड़ाई में बीच का 1 किलोमीटर जहाज आदि के आवागमन के लिए शिपिंग कारपोरेशन ऑफ इंडिया को सौंपा जाए, जिससे कानपुर से हल्दिया तक वाटर ट्रांसपोर्टेशन का मार्ग प्रशस्त हो सके। पांचवां, गंगा की चौड़ाई के दोनों ओर कम से कम फोरलेन सड़क का निर्माण किया जाए, जिससे हरिद्वार से हल्दिया तक एक नया कॉरिडोर, जो काफी उपयोगी होगा और आवागमन को आसान करेगा।

छठा, उत्तर प्रदेश और बिहार में गंगा का पानी की गहराई इतनी अवश्य होनी चाहिए कि युद्ध आदि विशेष परिस्थितियों में बोइंग विमान आदि इस पर उतारा जा सके। वहीं, गंगा के स्ट्रेच की चौड़ाई ज्यादा होने से टाल क्षेत्र की समस्या भी अपने आप दूर हो जाएगी।

सातवां, बिहार में बक्सर के टेल पॉइंट से सोन, गंडक आदि नदियों को जोड़कर दक्षिण-उत्तर बिहार अर्थात भभुआ, सासाराम, औरंगाबाद, गया, नवादा की ओर एक अलग चैनल बना दिया जाए तो इन जिलों में पटवन का एक बड़ा साधन विकसित किया जा सकता है। इस चैनल को कोसी, कमला, बागमती और बूढ़ी गंडक नदी से जोड़ देने पर खगड़िया और दक्षिण-पूर्व बिहार के कई हिस्सों को पटवन आदि का साधन सहज ही मुहैया कराया जा सकता है।

आठवां, गंगा के तट पर विकसित धार्मिक स्थल और तीर्थ भारतीय सामाजिक व्यवस्था के विशेष अंग हैं। गंगा आरती भारतीय संस्कृति का प्रतीक है। अतः उन सभी प्राचीन नगरों और शहरों यथा वाराणसी, बक्सर, पटना, सुल्तानगंज, भागलपुर आदि में नियमित रूप से गंगा आरती का कार्यक्रम आयोजित किया जाना चाहिए। इससे क्षेत्रीय पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा।

नवम, गंगा की घाटी में एक ऐसी सभ्यता का उद्भव और विकास हुआ, जिसका प्राचीन इतिहास अत्यंत गौरवमयी और वैभवशाली है। जहां ज्ञान, धर्म, अध्यात्म एवं सभ्यता-संस्कृति की ऐसी किरण प्रस्फुटित हुई, जिससे न केवल भारत बल्कि समस्त संसार आलोकित हुआ। इसी घाटी में रामायण और महाभारत कालीन युग का उद्भव और विकास हुआ। प्राचीन मगध महाजनपद का उद्भव गंगा घाटी में ही हुआ, जहां से गणराज्यों की परंपरा विश्व में पहली बार प्रारंभ हुई। यहीं भारत का स्वर्ण युग विकसित हुआ, जब मौर्य और गुप्त वंश के राजाओं ने यहां पर शासन किया।

दशम, और सबसे अंतिम प्रयास के रूप में गंगा सफाई अभियान को न केवल सरकारी योजना के रूप में प्रचारित किया जाए बल्कि इसे जन-आंदोलन का व्यापक रूप दिया जाए। इसमें जनता के साथ-साथ राजनेताओं और अधिकारियों को आवश्यक रूप से जोड़ा जाए। मुझे उम्मीद है कि समन्वित प्रयास से ही गंगा को भागीरथी के पुरातन रूप में पाया जा सकता है।

(लेखक बिहार सरकार के पूर्व नगर विकास एवं आवास मंत्री हैं।)

खास बात

किसानों की समस्या और आंदोलन

नीलम महेन्द्र

देखा जाए तो ब्रिटिश शासन काल से लेकर आजादी के बाद आज तक हमारे देश की आधी से ज्यादा आबादी कृषि पर निर्भर होने के बावजूद हमारे देश में किसानों की हालत दयनीय है। कर्ज में डूबे किसानों की आत्महत्या के आंकड़े खुद इस तथ्य की सच्चाई बयाँ करते हैं। यही कारण है कि वो कांग्रेस जब 70 सालों बाद देश से अपने लिए वोट मांगती है तो सरकार बनने के 100 दिनों के भीतर किसानों की कर्जमाफी का वादा करती है।

प्रश्न यह उठता है कि इतने सालों तक उसने सत्ता में रहते हुए किसानों की स्थिति में सुधार लाने के लिए कोई ठोस कदम क्यों नहीं उठाए। उससे भी बड़ा प्रश्न यह कि आज जब कोई सरकार किसानों की स्थिति में सुधार लाने के लिए कोई कदम उठा रही है तो वो उसका साथ देने के बजाए विरोध क्यों कर रही है? अगर उसे इन नए कानूनों में कोई खामियां दिख रही थीं तो जब संसद के दोनों सदनों में उसके पास मौका था उसने इन कानूनों की कमियां देश के सामने क्यों नहीं रखीं?

आखिर देश की जनता ने उन्हें किसी विश्वास से चुन कर संसद में पहुंचाया था। वो किसानों का पक्ष रख कर उनके हितों के हिसाब से कानून में बदलाव करवाने के प्रयास करने की बजाए संसद की कार्यवाही को बाधित करने का कार्य किया और संसद में बिल और रूल बुक की प्रति फाड़ कर या सभापति के माइक को तोड़कर कौन-से संविधान की रक्षा करता है? वो विपक्ष जो लगातार देश में लोकतंत्र पर खतरा बताता है वो विपक्ष संसद में अपने अलोकतांत्रिक आचरण के कारण संसद से निलंबित होकर कौन-से लोकतंत्र की रक्षा करता है?

यही कारण है कि उचित तर्कों के अभाव में जो लड़ाई विपक्ष संसद में हार गया उसे वो भोले भाले लोगों को गुमराह करके सड़कों पर जीतने का प्रयास कर रहा है। ये तीनों ही कानून निःसंदेह किसानों को मजबूत करने वाले हैं। इतना ही नहीं बल्कि वह आधुनिक तकनीक का उपयोग करके अपनी फसल को ऑनलाइन भी बेच सकता है। इस प्रयोग के सफल होने के संभावना अधिक हैं।

अद्धितीय योगेश्वर

धर्म-प्रवाह

डॉ. कृष्णगोपाल मिश्र

राजनीतिक जीवन से जुड़े व्यक्ति की यह नीति-निपुणता उसकी स्वतंत्रता और स्वायत्तता के संरक्षण का उत्तम उपकरण बनती है। भूतकाल की स्मृति और भविष्य पर दृष्टि रखने में कृष्ण अद्वितीय हैं। अत्याचारी सत्ता अपने हितों के संरक्षण और स्थायित्व के लिए किस सीमा तक पतित हो सकती है, निर्दोष प्रतिपक्ष को कहां तक प्रताड़ित कर सकती है- इसका व्यावहारिक ज्ञान कंस के अत्याचारों की अतीतकालीन स्मृति के रूप में कृष्ण के मन पटल पर भलीभांति अंकित है।

इसीलिए पांडवों के साथ किए गए कौरवों के अत्याचारों और अन्यायों पर उन्हें आश्चर्य नहीं होता। अतीत की यह कड़वी तीखी स्मृतियां उन्हें यह भी सिखाती हैं कि अत्याचारी सत्ता किसी भी सत्याग्रह को नहीं मानती। उसका अहंकार सहनशीलता से नहीं पिघलता; वह विनम्रता को कायरता समझती है और उसका उपहास करती है। इसलिए श्रीकृष्ण आततायी के हृदय-परिवर्तन की किसी भी कोमल-कल्पना से भ्रमित नहीं होते और उसका समूल नाश करने के लिए सतत सन्नद्ध मिलते हैं। वे जानते हैं कि अतीत के जीर्णशीर्ण खंडेरों पर भविष्य के सौधशिखरों की नींव नहीं रखी जा सकती।

उन्हें ढहाये बिना, भूमि को समतल किए बिना नये निर्माण का स्वप्न साकार नहीं किया जा सकता। पुराने भ्रान्त-सिद्धांतों के संकेत नए सृजन-पथ के निर्देश नहीं बन सकते, अतः उनका परिहार-निवारण अपरिहार्य है।

आपके ट्वीट

उत्तर प्रदेश में माताओं-बहनों के सम्मान-स्वाभिमान को क्षति पहुंचाने का विचार मात्र रखने वालों का समूल नाश सुनिश्चित है।

इन्हें ऐसा दंड मिलेगा जो भविष्य में उदाहरण प्रस्तुत करेगा।

- योगी आदित्यनाथ, सीएम यूपी

सिंगरेनी कोयला खदान के मजदूरों से मिल कर पता चला, उनका शोषण बड़ी साज़िश का हिस्सा है। भारतीय खदानों का निजीकरण, विदेश से महंगा कोयला लाना, फिर बिजली का बिल बढ़ा कर जनता की जेब काटना।

- राहुल गांधी

जब आप एक फूल को 'पसंद' करते हैं तो आप उसे अपने लिये तोड़ लेते हैं; लेकिन जब आप एक फूल से 'प्यार' करते हैं, तो उसे प्रति दिन सींचते है पानी से !!!

- अमिताभ बच्चन

वैश्विक स्तर पर खादी की बढ़ती लोकप्रियता

सामयिक

सतीश सिंह

खादी के एक से एक डिजाइनर पर्स भी बाजार में बिक रहे हैं। खादी के जूते भी बाजार में उतारे गए हैं। ऐसे जूतों को हाथ से काते व सिले जाते हैं। डिजाइनरों के मुताबिक खादी के पारंपरिक परिधानों को पहनने के प्रति लोगों की ललक बढ़ रही है।

महात्मा गांधी ने कुटीर उद्योग के माध्यम से देश की आर्थिक समृद्धि का जो सपना देखा था, उसे पूरा करने के लिए केंद्रीय सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय (एमएसएमई) के अधीनस्थ खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग एवं अन्य माध्यमों से लगातार प्रयास कर रहा है। आयोग गर्मियों के लिए सिली-सिलाई कुर्तियां, कमीजें, सलवार-कमीज,कुर्ता-पायजामा, साड़ियां तथा सर्दियों के लिए जैकेट, डिजाइनर परिधान,बंडी आदि का निर्माण एवं उनके देश भर में विपणन के लिए कोशिश कर रहा है। आजादी की प्रतीक मानी जाने वाली खादी को वर्तमान में फैशनेबल भी बनाया जा रहा है। मिनी व लॉन्ग स्कर्ट सहित आज खादी में फैशन के सारे विकल्प उपलब्ध हैं।

खादी के एक से एक डिजाइनर पर्स भी बाजार में बिक रहे हैं। खादी के जूते भी बाजार में उतारे गए हैं। ऐसे जूतों को हाथ से काते व सिले जाते हैं। डिजाइनरों के मुताबिक खादी के पारंपरिक परिधानों को पहनने के प्रति लोगों की ललक बढ़ रही है।

मौजूदा समय में फैशन डिजाइनर रितु कुमार,वेंडेल रोड्रिक्स, राहुल मिश्रा,आनंद काबरा,सब्यसाची मुखर्जी, गौरंग शाह ने खादी के परिधानों को लोकप्रिय बनाने का काम कर रहे हैं। वे अपने संग्रह में खादी के कपड़े का प्रयोग कर रहे हैं। अब खादी के कुर्ते ही नहीं बल्कि वेस्टर्न कपड़े भी बाजार में मौजूद हैं।

अब शादी से जुड़े कलेक्शन से लेकर पारंपरिक साड़ियां और जरी के काम वाले कपड़े भी खादी में उपलब्ध कराए जा रहे हैं। इन प्रयासों से खादी के उत्पादों की बिक्री में 100 प्रतिशत से भी ज्यादा का इजाफा हुआ है। खादी की बढ़ती लोकप्रियता के बारे में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आकाशवाणी पर प्रसारित कार्यक्रम 'मन की बात' में की है। प्रधानमंत्री मोदी खुद भी नई पीढ़ी से खादी के कपड़ों का इस्तेमाल करने की अपील की है।

खादी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिये सोशल मीडिया पर प्रचार अभियान चलाया जा रहा है। खादी का देश में उपभोग बढ़े, इसके लिए देश के राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के आधिकारिक विमान एयर इंडिया वन के केबिन क्रू के सदस्य खादी से बने परिधान पहन रहे हैं।

खादी निश्चित रूप से रोजगार का साधन बन सकता है, लेकिन इसके लिए खादी के कपड़ों के विपणन, ब्रांडिंग, प्रचार-प्रसार, खादी के प्रति लोगों की स्वीकार्यता बढ़ाने आदि से इसके दिन बेहतर हो सकते हैं। खादी के बलबूते सभी को रोजगार उपलब्ध कराया जा सकता है। इसके लिए खादी के निर्माण को एक आंदोलन का रूप देने की जरूरत है। ऐसे में जब गांव के सभी लोग खादी के निर्माण एवं विपणन में सहयोगी बन जाएंगे तो ग्रामीण अर्थव्यवस्था को स्वाभाविक रूप से मजबूती मिलेगी, जिससे देश में समावेशी विकास का मार्ग प्रशस्त होगा। इस क्रम में घर-घर में खादी के कपड़ों के निर्माण को बढ़ावा, युवाओं को इसके उपयोग के प्रति आकर्षित करने आदि की कोशिश करनी चाहिए। आम आदमी को भी इस दिशा में सकारात्मक कदम उठाने की जरूरत है, तभी खादी एवं बुनकरों की अस्मिता बच सकती है।

आज पूरी दुनिया में खादी की मांग है आवश्यकता है कि हम इसकी ब्रांडिग सही ढंग से कर सके।

कॉटूनवर्ल्ड डॉट कॉम

लेटर टू एडिटर

प्राथमिकता से परहेज

किसान बिल से सब वाकिफ हो गए हैं लेकिन टीवी चैनलों को फिलहाल ड्रग्स मामला सुलझाने से फुर्सत नहीं मिल रही। बिहार चुनाव को लेकर कई चैनलों ने अब अपना रुख बिहार की ओर कर लिया है लेकिन बॉलीवुड से बिहार जाते कहीं भी किसान बीच में नहीं आया। किसान आज इस बिल के खिलाफ है। सरकार कह रही है कि एमएसपी खत्म नहीं होगी।

- श्वेता चौहान, जमशेदपुर

घोर लापरवाही

कोरोना वायरस के चलते डॉक्टरों की मानवीय सेवा सराहनीय है। वहीं राज्य में बिना मास्क के दुकानदार बेखबर अपना व्यापार करते देखे जा सकते हैं। मास्क लगाने वाले लोगों का कुछ ही प्रतिशत है। ऐसे में संक्रमण चेन का टूटना असंभव-सा लग रहा है। मास्क लगाने की प्रक्रिया का पालन नहीं किए जाने पर कड़ी कार्रवाई की दरकार है। जो अभी नहीं हो रही है। **- संजय वर्मा, हजारीबाग**

सैन्य बलों को अत्याधुनिक बनाने का प्रयास

रक्षा सेवा

योगेश कुमार गोयल

भारत और चीन के बीच बढ़ रहे तनाव के दौर में अत्याधुनिक तकनीकों से लैस पांच अत्याधुनिक राफेल विमान भारतीय वायुसेना में विधिवत शामिल हो चुके हैं। शीघ्र ही रूस से एस-400 मिसाइल प्रणाली भी भारत को मिलने वाली है। भारत इजरायल से स्पाइक मिसाइलों के अलावा कुछ और अत्याधुनिक मिसाइलें भी खरीद रहा है। ऐसे में भारतीय सेना की ताकत आने वाले दिनों में कई गुना बढ़ जाएगी और हमारी सेना इनके जरिये दुश्मन को आसानी से धूल चटाने में सफल हो सकेगी। सेना के तीनों अंगों की जरूरतों को पूरा करने के लिए न केवल अमेरिका, रूस, फ्रांस इत्यादि देशों के साथ अत्याधुनिक तकनीकों से लैस हथियारों के सौदे हो रहे हैं बल्कि मेक इन इंडिया मुहिम के तहत भी सेनाओं को मजबूत करने की कोशिशें निरन्तर जारी हैं।

दरअसल चीन-पाकिस्तान जैसे धूर्त पड़ोसी देशों से मिल रही चुनौतियों के इस दौर में भारत द्वारा अपनी तीनों सेनाओं को मजबूत किया जाना बेहद जरूरी हो गया है। इसी मिशन के तहत सेना के तीनों अंगों को अत्याधुनिक सैन्य साजो-सामान से सुसज्जित किए जाने के प्रयास निरन्तर जारी हैं। हाल ही में हाइपरसोनिक मिसाइल तकनीक के क्षेत्र में भी भारत ने बहुत लंबी छलांग लगाई है और अब हमारे पास बगैर विदेशी मदद के हाइपरसोनिक मिसाइल विकसित करने की क्षमता हो गई है। उम्मीद है कि आगामी पांच वर्षों में भारत स्क्रैमजेट इंजन के साथ हाइपरसोनिक मिसाइल तैयार कर सकता है। स्वदेश निर्मित ब्रह्मोस जैसी खतरनाक मिसाइलें पहले से ही सेना का मजबूत हथियार हैं।

पिछले दिनों रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन द्वारा निर्मित एंटी टैंक गाइडेड मिसाइल 'ध्रुवास्त्र' मिसाइल का भी सफल परीक्षण किया गया। पलक झपकते ही दुश्मन के ठिकानों को ध्वस्त कर देने की विलक्षण क्षमता रखने वाली यह मिसाइल भी पूरी तरह स्वदेश निर्मित है। 'ध्रुवास्त्र' पलभर में ही दुश्मन के टैंकों के परखच्चे उड़ा सकती है। उड़ीसा के चांदीपुर स्थित समेकित परीक्षण केन्द्र से ध्रुवास्त्र के सीधा निशाना लगाते हुए तीन सफल परीक्षण किए गए थे और डायरेक्ट तथा टॉप मोड दोनों में सभी परीक्षण सफल रहे। परीक्षण के दौरान मिसाइल ने अपने टारगेट पर बिल्कुल सटीक निशाना लगाया। जमीन से लांचर से दागकर एंटी टैंक गाइडेड इस मिसाइल के कई महत्वपूर्ण पैरामीटर की जांच की गई और मिसाइल हर कसौटी पर खरी उतरी। 'फायर एंड फॉरगेट' सिस्टम पर कार्य करने वाली 'ध्रुवास्त्र' भारत की पुरानी मिसाइल 'नाग हेलीना' का हेलीकॉप्टर संस्करण है, जिसमें कई नई तकनीकों का समावेश करते हुए इसे आज की जरूरतों के हिसाब से तैयार किया गया है।

रक्षा विशेषज्ञों के मुताबिक इस मिसाइल प्रणाली में डीआरडीओ द्वारा एक से बढ़कर एक आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल किया गया है। ध्रुवास्त्र को आसमान से सीधे दागकर दुश्मन के बंकर, बख्तरबंद गाड़ियों और टैंकों को पलभर में ही नष्ट किया जा सकता है। यह मिसाइल दुनिया के सबसे आधुनिक एंटी-टैंक हथियारों में से एक है और इसे हेलीकॉप्टर से लांच किया जा सकता है। डीआरडीओ के मुताबिक ध्रुवास्त्र तीसरी पीढ़ी की दागो और भूल जाओ किस्म की टैंक रोधी मिसाइल प्रणाली है, जिसे आधुनिक हल्के हेलीकॉप्टर पर स्थापित किया गया है।

संस्थापक
स्व. डॉ अभय कुमार सिंह

वृन्दा मीडिया पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक, प्रकाशक
मंजू सिंह

द्वारा चिरौंदी, बोड़ेया रोड, रांची (झारखंड) से मुद्रित एवं प्रकाशित।
संपादक
अविनाश ठाकुर*
फोन : 95708-48433
पिनः -834006
e-mail
khabarmantra.city@gmail.com

R.N.I No.
JHAHIN/2013/51797

*पीआरबी एक्ट के अंतर्गत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी। प्रकाशित खबरों से संबंधित किसी भी विवाद का निपटारा रांची न्यायालय में ही होगा।

स्पीड न्यूज

गुरु सिंह सभा गुरुद्वारा भुरकुंडा के पूर्व प्रधान मुख्तार सिंह का निधन

भुरकुंडा (रामगढ़)। जवाहर नगर भुरकुंडा निवासी सांसद प्रतिनिधि जगतार सिंह के बड़े भाई सह गुरु सिंह सभा गुरुद्वारा भुरकुंडा के पूर्व प्रधान सह समाजसेवी मुख्तार सिंह का दिल्ली में इलाज के दौरान गुरूवार की रात सात बजे निधन हो गया। उनके निधन से भुरकुंडा कोयलांचल सहित आसपास के क्षेत्रों में शोक की लहर है। मुख्तार सिंह लिवर कैंसर से ग्रस्त थे। शुक्रवार को दिल्ली में ही उनका अंतिम संस्कार किया गया। उनके निधन पर सिख समाज सहित भुरकुंडा कोयलांचल के समाजसेवी, बुद्धिजीवी व जनप्रतिनिधियों ने शोक संवदेना व्यक्त करते हुए उनकी आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। शोक व्यक्त करने वालो में परमजीत सिंह धामी, भुपेंद्र सिंह सैनी उर्फ जीबू, भुरकुंडा गुरूद्वारा के प्रधान लाल सिंह रंधावा उर्फ रिंकु, अंग्रेज सिंह, सोनू, जसपाल सिंह, राजू सिंह, गोल्डी सिंह, निशांत सिंह, सहित दर्जनों लोग शामिल हैं।

एसडीओ ने घाट का किया निरीक्षण

मांडू। एसडीओ शीलवंत कुमार भट्ट सहित डीएसपी किशोर कुमार रजक,बीडीओ संजय कुमार कौनगाड़ी और मांडू थाना प्रभारी अवधेश कुमार ने शुक्रवार को मांडू क्षेत्र के छठ घाटों का निरीक्षण कर छठ के दौरान व्रतियों को कोई परेशानी नही हो इसका ध्यान रखने का निर्देश दिया। इस दौरान मांडू डी मुखिया बैजनाथ राम सहित रमेश कुमार, नवरत्न कुमार,अमित राम,जयहिंद साव, धारेश्वर साव,वीरेंद्र पांडे, प्रदीप साव,कृष्णा साव, भीम कुमार,रोहित कुमार, नवीन कुमार,पवन कुमार, दिलीप कुमार आदि उपस्थित थे।

श्रीश्री छठ पूजा नवयुवक संघ की बैठक

भुरकुंडा (रामगढ़)। श्रीश्री छठ पूजा नवयुवक संघ की बैठक शुक्रवार को भुरकुंडा हॉस्पीटल कॉलोनी स्थित शिव मंदिर प्रांगण में हुई। बैठक की अध्यक्षता पूर्व मुखिया प्रदीप मांझी व संचालन संजय यादव ने किया। बैठक में क्षेत्र की साफ-सफाई, सड़कों पर पानी की सफाई, पार्किंग व मेडिकल व्यवस्था सहित पूजा की सफलता को लेकर विस्तार पूर्वक चर्चा की गई। बैठक में सर्वसम्मति से इस वर्ष भी बाजार में लाइट की व्यवस्था लगाने का निर्णय लिया गया। कहा गया की हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी छठ महापर्व के दौरान बाजार में साफ-सफाई और संकट मोचन मंदिर से भुरकुंडा थाना चैक तक लाइट की व्यवस्था करने आदि मुद्दों पर चर्चा हुई। मौके पर रॉबिन मुखर्जी, संजय होरो, प्रकाश गुप्ता, चंदन साव, मनोज सिंह, जितेंद्र सिन्हा, राजेश ठाकुर, बबन राम, विक्की एंथोनी, अखिलेश सिंह सहित संघ के दर्जनों लोग मौजूद थे।

थाना प्रभारी ने घाट का लिया जायजा

रजरप्पा। लोक आस्था का महापर्व छठ पूजा को लेकर शुक्रवार को रजरप्पा थाना प्रभारी हरिनंदन सिंह द्वारा कई छठ घाटों का निरीक्षण किया गया व सफाई भी करवाई। उन्होंने रजरप्पा आवासीय कॉलोनी के समीप भैरवी नदी स्थित बम्हनधारा छठ घाट में पूजा समिति द्वारा कराए जा रहे घाट निर्माण का जायजा लेते हुए समिति को कई निर्देश दिए। मौके पर उन्होंने कहा कि घाट प्रक्षेत्र में सुरक्षा का व्यापक व्यवस्था रहेगा। उन्होंने कहा कि पुलिस प्रशासन की ओर से छठ व्रतियों को उचित व्यवस्था दिया जाएगा। मौके पर छठ समिति के जगदीश महतो, देवेंद्र सिंह समेत अन्य सदस्य मौजूद थे।

अंग्रेजी पुस्तक को ले हाइकोर्ट में पीआइएल

भुरकुंडा (रामगढ़)। झारखंड सरकारी विद्यालय छात्र संघ ने जेसीइआरटी द्वारा कक्षा एक से दसवीं तक में सीधे अंग्रेजी पाठ्य पुस्तक की पढाई को लेकर हाई कोर्ट में पीआईएल दायर किया है। संघ की ओर से अधिवक्ता सरवेंद्र कुमार और राहुल राजा ने जनहित याचिका दायर की है। गुरूवार को संघ के पदाधिकारियों ने बताया कि झारखंड क प्राथमिक और माध्यमिक सरकारी विद्यालय में जेसीइआरटी द्वारा कक्षा एक से दसवीं तक के छात्र-छात्राओं को सीधे अंग्रेजी भाषा की पाठ्य पुस्तक को पढ़ने के लिये दे दिया जाता है। जिसमें कहानी और पोयम भरा रहता है। पुस्तक में बड़ा-छोटा अल्फा वेट और ना ही हिन्दी स्वर व्यंजनो को अंगेजी भाषा के किसी पाठ में नही दिया रहता है। पुस्तक में ना ही किसी प्रकार का हिन्दी-अंग्रेजी शब्द कोष और ना ही हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवाद ज्ञान का पाठ रहता है। कहा गया कि झारखंड सरकार द्वारा अंग्रेजी भाषा के बेसिक एंव व्याकरण का पाठ्य पुस्तक भी छात्रों को नही दिया जाता है। जिसके कारण छात्रों को अंग्रेजी भाषा को सीखने में काफी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

बीडीओ व सीओ ने घाट का किया निरीक्षण कहा- व्रतियों का रखें ख्याल

भुरकुंडा (रामगढ़)। लोक आस्था का छठ महापर्व के दौरान विधि-व्यवस्था बनाए रखने व छठव्रतियों के सुविधाओं को लेकर पतरातू प्रखंड के बीडीओ मनोज कुमार गुप्ता और सीओ शिव शंकर पांडेय प्रखंड के विभिन्न छठ-घाटों का निरीक्षण कर रहे हैं। इसी क्रम में शुक्रवार को बीडीओ मनोज कुमार गुप्ता और सीओ शिव शंकर पांडेय छठ घाट का निरीक्षण करने सौंदा डी-भुरकुंडा नकारी नदी तट पहुंचे। यहां उन्होंने विधि-व्यवस्था व छठ घाटों का जायजा लिया। बीडीओ और सीओ ने छठ पूजा समिति को आवश्यक दिशा-निर्देश देते हुए पर्व के दौरान छठव्रतियों व श्रद्धालुओं के सुविधाओं का पूरा ख्याल रखने की बात पूजा समिति से कही। ताकि आवागमन सहित पूजा के दौरान छठव्रतियों को किसी प्रकार की दिक्कत न हो। साथ ही पार्किंग की भी उचित व्यवस्था करने की बात कही। ताकि छठव्रतियों को छठ घाट तक पहुंचने में परेशानी न हो। मौके पर भुरकुंडा पंचायत के मुखिया अजय पासवान, पूर्व जिप उपाध्यक्ष मनोज राम, शिवा भुंइया, संजय मिश्रा, संजीत राम, संजय वर्मा, अमृत सागर, शिव कुमार, भोला कुमार, भोलू, अन्नू सहित कई लोग मौजूद थे।

नहाय खाय के साथ लोक आस्था का महापर्व छठ शुरू

गीतों से गूंजा पूरा क्षेत्र

खबर मन्त्र संवाददाता

हजारीबाग/चरही/दारू। आस्था का छह दिवसीय महापर्व छठ कार्तिक मास शुक्लपक्ष के चतुर्थी को नहाय खाय के साथ आज से प्रारम्भ हो गया है।छठ व्रतियों ने शुक्रवार को विभिन्न - विभिन्न जलाशयों में जाकर स्नान किया। उसके बाद विधिवत भगवान भास्कर नमन करते हुए पूजा-अर्चना किया।व्रती गण घर पहुंचकरअरवा चावल के भात,चना दाल और कदू के बने सब्जी को प्रसाद के रूप में ग्रहण किया। चरही तथा कोयलांचल क्षेत्र में अवस्थित विभिन्न तालाबों को साफ-सफाई किया गया।

बरसात के दिनों में टूटे-फूटे रास्तों को मशीन के द्वारा मरम्मत किया गया। रास्तों के दोनों ओर बिजली लगाया से सजाया जा रहा है। छठ गीतों से पूरा क्षेत्र गुंज रहा है।घर-घर में गीत गया जा रहा है। नहाय खाय के रस्म को संपन्न होते ही छठ व्रती खरना के तैयारी में जुट गए हैं।

प्रसाद ग्रहण करने व्रतियों के घर पहुंचे लोग : दारू में छठ महापर्व कार्तिक मास शुक्लपक्ष के चतुर्थी को नहाय खाय के साथ हुआ प्रारम्भ। छठव्रती अपने आस पास के कुआँ, नदी, तालाब जाकर स्नान कर सात्विक भोजन ग्रहण की। आस पास के लोग पूरे भक्तिभाव के साथ प्रसाद ग्रहण करने छठव्रतियों के घर पहुंचे। छठव्रति छठ के दूसरे दिन पंचमी को यानी आज खरना करेंगी। इधर छठ के अवसर पर दारू थाना प्रभारी अमित कुमार के तरफ से पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी आम की लकड़ी सभी छठव्रतियों के लिए उपलब्ध करवाया गया। आम की लकड़ी का इस पूजा में बहुत अधिक महत्व होता है, प्रसाद आम के लकड़ी से ही बनाई जाती है। थाना प्रभारी को पूरे ग्रामीणों ने दिल से धन्यवाद देते हुए कहा कि आम की लकड़ी उपलब्ध होने में हमेशा बहुत परेशानी होती है, जिसे थाना प्रभारी ने दूर किया। सदर विधायक मनीष जायसवाल छठ महापर्व को लेकर महारथियों के बीच पूजन साड़ी वितरण अभियान में युद्धस्तर से जुड़े हुए है। शुक्रवार को सदर विधायक मनीष जायसवाल के सौजन्य से दारू प्रखंड क्षेत्र के दारू पंचायत में छठव्रतियों के बीच पूजन साड़ी का वितरण किया गया। वर्तमान वर्ष में कुल 10000 पूजन साड़ी का वितरण कार्य निर्बाध रूप से जारी है। छठव्रतियों ने विधायक मनीष जायसवाल को आशीर्वाद देते हुए उनकी दीघार्यु की कामना की। मौके पर विधायक प्रतिनिधि बालदेव बाबू, राजन सिन्हा, अशोक कुशवाहा, रौशन सिन्हा सहित अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहे।

विधायक मनीष जायसवाल ने छठ व्रतियों को दी साड़ी

हजारीबाग में पूजा सामग्री केंद्र खुला

खबर मन्त्र संवाददाता

हजारीबाग। छठ पूजा फल वितरण केंद्रीय समिति की ओर से लगाए जाने वाले फल बाजार का विधिवत उद्घाटन हिंदू स्कूल प्रांगण में किया गया। इसका उद्घाटन विधायक मनीष जायसवाल, श्रद्धानंद सिंह, धीरज कुमार, भैया अभिमन्यु प्रसाद, मनोज गुप्ता, हर्ष अजमेरा, सुमेर सेठी,ठेकलाल प्रसाद,राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत शारीरिक प्रमुख कुणाल समेत कई गणमान्य लोगों ने सामूहिक रूप से किया। इस बाजार में छठ पर्व को देखते हुए लागत मूल्य पर ही फल बाजार में मुहैया कराया जाता है। बाजार में कोई व्यवसायी नहीं होता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सदस्य, शिक्षक,अधिवक्ता, पत्रकार और समाजसेवी बजार का संचालन किया जाता हैं। केला,सेब, नारंगी,डंभा,गन्ना, नारियल, घी, रिफाइन, पूजन सामग्री समिति खरीद

दाम में उपलब्ध करायी जा रही है।

सूर्य षष्ठी छठ पूजा वितरण केंद्रीय समिति के अध्यक्ष चंदन मेहता ने बताया कि इस बार 50 लाख रुपया का फल की खरीदारी की गई है। पैसा समाज के लोगों से सहयोग के रूप में लिया गया है। लागत मूल्य पर फल बेचकर पैसा उन्हें छठ पूजा के दो दिनों के बाद वापस भी किया जाता है। पिछले 9 सालों से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बैनर तले सेवा हजारीबाग वासियों को दी जा रही है।

इन स्थानों पर होगा वितरण

1. प्लस टू हिंदू स्कूल, हजारीबाग, 2. विष्णुगढ़ प्लस टू उच्च विद्यालय, विष्णुगढ़, 3. कृषि बाजार समिति प्रांगण केरेडारी, 4. दुर्गा मंडप चरही बाजार, चरही, 5. थाना मैदान, कटकमदाग, 6. काली मंडप छड़वा, कटकमसांडी, 7. मालवीय मार्ग, नाला के समीप, हजारीबाग, 8. दुर्गा मंडप, अस्पताल रोड,कटकमसांडी

राजद विधायक ऋषि कुमार ने पतरातू डैम का किया भ्रमण

भुरकुंडा (रामगढ़)। बिहार के ओबरा के राजद विधायक ऋषि कुमार झारखंड सहित पतरातू प्रखंड के दौरा के क्रम में पतरातू डैम का भ्रमण कर खूब आनंदित दिखे। उन्होंने पतरातू डैम के खुबसूरत वादियों की जमकर सराहना करते हुए कहा कि सुकुन का पल बिताने के लिए सबों को एक बार पतरातू डैम का भ्रमण जरूर करना चाहिए। डैम के आसपास की खुबसूरती वादियां व मनमोहक दृश्य बर्बस लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती है। यहां का नजारा की जितनी प्रशंसा की जाए कम है। शुक्रवार को ओबरा विधायक ऋषि कुमार रिभर साईड भुरकुंडा स्थित राजद के झारखंड प्रदेश उपाध्यक्ष संतोष यादव के आवास पहुंचे। इस दौरान विधायक ऋषि कुमार ने संतोष यादव के साथ संगठन की मजबुती पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि राजद को और मजबूत बनाने के लिए अधिक से अधिक नवयुवकों को संगठन में जोड़ें। विधायक श्री कुमार ने कहा कि राजद किसी भी पार्टी से कमजोर नहीं है।

बरकट्ठा में सांसद और विधायक ने किया तीन सड़कों का शिलान्यास

खबर मन्त्र संवाददाता

बरकट्ठा। विकास से लोंगो को जोड़ना, उन्हें सहूलियत देना सांसद, विधायक का दायित्व है। इसी सिलसिले में बरकट्ठा विधानसभा क्षेत्र के 79 पंचायत के सभी गांवों को एक दूसरे गांव तक सड़क बनाया जा रहा है। उक्त बातें कोडरमा सांसद सह केंद्रीय शिक्षा राज्य मंत्री और केंद्रीय शिक्षा राज्यमंत्री अनपूर्णा देवी ने कही। हमारा उदेश्य क्षेत्र का सवार्गीण विकास है।

बरकट्ठा में सांसद अन्नपूर्णा देवी और विधायक अमित कुमार यादव ने तीन महत्वपूर्ण सड़क का शिलान्यास किया। जिसमें बरवां से तुईयो भाया मासीपीढ़ी, किमनिया से पंचफेडी चौक भाया बसरिया और एनएच 2 से गंगतिहाई तक सड़क निर्माण शामिल है। विधायक ने कहा कि बरकट्ठा विधानसभा के हर पंचायत में विकास के कार्य किए जा रहे है। ग्रामीणों और लोगो को को आवागमन की बेहतर सुविधा मिले इसके लिए हमारा प्रयास जारी है।

इस अवसर पर जिप सदस्य कुमकुम देवी,प्रमुख रेणु देवी,सुनील मेहता,उपप्रमुख सुरजी देवी,मुखिया कमलेश प्रसाद,पंसस सरिता देवी,टुकलाल नायक,पंसस मंजू देवी,इंद्रदेव प्रसाद,समन ठाकुर,जीवन यादव,दौलत प्रसाद,पूर्व मुखिया भीम प्रसाद,सुमन कुमार,कुलदीप प्रसाद, रामेश्वर पांडेय समेत कई लोग शामिल थे।

रामगढ़ के डीसी ने किया कई छठ घाटों का निरीक्षण

रामगढ़। छठ को लेकर शुक्रवार को उपायुक्त चंदन कुमार ने विभिन्न छठ घाटों का निरीक्षण किया। मौके पर उपायुक्त ने छठ घाटों में साफ सफाई का जायजा लेते हुए श्रद्धालुओं के आने जाने के मार्ग, घाट पर पब्लिक एड्रेस सिस्टम सहित अन्य सुविधाओं की जानकारी ली। उपायुक्त ने संबंधित घाटों के छठ पूजा समिति के सदस्यों से उनके द्वारा की जा रही तैयारी की जानकारी ली। उपायुक्त ने सभी से पर्व के दौरान सुरक्षा पर विशेष ध्यान देने एवं वॉलिंटियर्स के माध्यम से सफलतापूर्वक पर्व संपन्न कराने को लेकर आवश्यक निर्देश दिया। उन्होंने पर्व के दौरान सभी से किसी भी प्रकार की कोई अफवाह सामने आने पर त्वरित इसकी जानकारी जिला प्रशासन अथवा नजदीकी थाना को देने की अपील की। पर्व के दौरान बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के घाट तक आने को लेकर उपायुक्त ने योजनाबद्ध तरीके से ट्रैफिक प्रबंधन करने को लेकर आवश्यक निर्देश दिया। उपायुक्त ने सभी घाटों पर पर्याप्त संख्या में गोताखोरों, नौका की व्यवस्था रखने का निर्देश दिया। उपायुक्त ने नदियों तथा अन्य जलाशयों में बैलून आदि के माध्यम से सुरक्षा जोन की बेरीकेटिंग करने के संबंध में आवश्यक निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान उपस्थित अधिकारियों को उपायुक्त ने पूरे पर्व के दौरान उनके उनके क्षेत्र में हर गतिविधि पर पैनी नजर रखने का निर्देश दिया ।

छठमय हुआ भुरकुंडा, भदानीनगर और बासल

भुरकुंडा (रामगढ़)। भुरकुंडा कोयलांचल का वातावरण छठमय भक्तिमय हो गया है। भुरकुंडा कोयलांचल, भदानीनगर, बासल सहित आसपास ग्रामीण क्षेत्रों में चार दिवसीय कार्तिक छठ पूजा का शुभारंभ शुक्रवार से नहाय-खाय के साथ हुआ। छठ महापर्व को ले छठ घाट सहित आवागमन रास्ते की सफाई का कार्य जोरशोर से चल रहा है। गुरूवार व शुक्रवार को पतरातू प्रखंड के उपप्रमुख रमाशंकर पांडेय उर्फ नूनू पांडेय ने रिभर साईड के कॉलोनी में जमे कचरे की जेसीबी के माध्यम से साफ-सफाई कराई। ताकि छठव्रतियों को किसी तरह की परेशानी न हो। मौके पर रमाशंकर पांडेय ने कहा कि छठव्रतियों सहित श्रद्धालुओं को आवागमन में किसी प्रकार की दिक्कत नहीं होगी। उन्होंने कहा कि छठव्रतियों की सुविधाओं का पूरा ख्याल रखा जायेगा। पांडेय ने छठ महापर्व की बधाई भी दी। छठ महापर्व को ले पूरा क्षेत्र भक्तिमय हो गया। साथ ही छठ गीतों से पूरा क्षेत्र गूंज रहा है। श्रद्धा भक्ति आस्था का महापर्व कार्तिक छठ के दूसरे दिन शनिवार को छठव्रती

गीतों से गूंजा क्षेत्र, खरना आज

नियम पूर्वक खरना करेंगी। इस दौरान छठव्रति दिनभर निर्जला उपवास रख शाम में गाय के दूध में शुद्ध रूप से खीर का प्रसाद बनाएंगे और पूजा-अर्चना के बाद खीर के प्रसाद को सेवन करेंगी। खरना के पश्चात भक्तों के बीच खरना के प्रसाद का वितरण किया जायेगा। साथ ही कार्तिक छठ पर्व के तीसरे दिन रविवार को दिन-रात छठव्रती निर्जला उपवास पर रहेंगी। वहीं अपराहन में सूप दउरा में फल-फूल पूजा सामग्रियों को सजाकर घाटों पर पहुंच छठव्रतियों भक्तों द्वारा अस्ताचलगामी भगवान सूर्य को प्रथम अर्घ्य अर्पित किया जाएगा। इसी प्रकार छठ महापर्व के चैथे दिन सोमवार को तड़के सुबह पुनः छठ घाटों पर पहुंचेंगे और उदयीमान भगवान सूर्य को अर्घ्य अर्पित करेंगे।

एक नजर में

उप प्रमुख व मुखिया ने बच्चों को दिया स्वेटर

इचाक। आंगनबाड़ी केंद्र रूद में सरकार द्वारा उपलब्ध कराये गये स्वेटर का वितरण शुक्रवार को उप प्रमुख सत्येंद्र मेहता , मुखिया सह अध्यक्ष जिला मुखिया संघ के रंजीत मेहता ने बच्चों के बीच किया । उन्होंने कहा सरकार ने बढ़ती ठंड को देखते हुए बच्चों को मुफ्त में स्वेटर मुहैया करा रही है, ताकि सभी बच्चे पढ़ाई से वंचित नहीं रहे। मौके पर वार्ड सदस्य अर्जुन प्रसाद, पूनम देवी, सूदन साव, गीता देवी, शांति देवी के अलावा कई लोग शामिल थे।

बैग फैक्ट्री पर बिजली चोरी का मामला दर्ज

चरही। विद्युत विभाग के विशिष्ट पदाधिकारी के आदेशानुसार विद्युत ऊर्जा की चोरी के विरुद्ध छापेमारी दल का गठन किया गया।छापामारी दल में अरविंद कुमार सहायक विद्युत अभियंता राजेश कुमार,सरफराज खान, शादाब अनवर, राजेश कुमार राम, सुनील कुमार, योगेंद्र ठाकुर, पंकज कुमार,के अलावा अन्य लोग इस छापेमारी दल में शामिल थे। चुरचू पंचायत मे बिजली विभाग पूरे दलबल के साथ बिजली चोरी करने वालों के लिए धर-पकड़ अभियान चलाया गया।जिसमें सुनील कुमार पिता राम प्रसाद राम ग्राम लारा निवासी के द्वारा चुरचू प्रखंड मुख्यालय के निकट कपड़े का बैग फैक्ट्री चोरी की बिजली से चला रहा था।विभाग में रंगे हाथ बिजली चोरी करते पकड़ा गया।चुरचू थाना में चोरों के विरुद्ध दर्ज किया मुकदमा।वही 75920 रुपए का जुर्माना भी लगाया गया।सुनील कुमार समेत अन्य 14 लोगों पर मामला दर्ज कर लिया गया है।

मुखिया सिकंदर राणा ने चलाया सफाई अभियान

बरही। बेन्दगी पंचायत में मुखिया सिकंदर राणा के नेतृत्व में पंचायत क्षेत्र में सभी छठ घाटों पर सफाई अभियान चलाया। मुखिया सिकंदर राणा ने श्रद्धालुओं से कहा कि पंचायत में कहीं भी किसी भी घाट पर कोई कमी नही रहेगी। हर घाट पर सुसज्जित लाइट की व्यवस्था से लेकर छठ व्रत करने वाली महिलाओं के लिए घाट पर अलग से चेंजिंग रूम बनवाया जा रहा है। जिससे महिलाओं को किसी प्रकार का कोई परेशानी न हों। मुखिया ने कहा कि प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी छठ घाट की सफाई की जा रही है, हिन्दू धर्म में छठ महापर्व को स्वच्छ एवं पवित्र त्योहार माना जाता है। मौके पर उपमुखिया अशोक राणा, मनोज साव, फुलमतिया देवी, राजेश कुमार, दिलीप कुमार, पूनम देवी, परमेश्वर भुइयां, बबिता कुमारी, सुनील कुमार, सविता देवी, राहुल पांडेय सहित अन्य ग्रामीण मौजूद थे।

बरही में छठ को लेकर साफ-सफाई शुरू

बरही। आस्था का महापर्व छठ पूजा की शुरूआत नहाय-खाय की पवित्रता के साथ चार दिवसीय महापर्व छठ पूजा किया जा रहा है।प्रखण्ड मुख्यालय सहित सभी पंचायतों में छठ पूजा की तैयारी श्रद्धालुओं द्वारा किया जा रहा है। छठ पूजा के अवसर पर शहर एवं ग्रामीण व्यवसायी बाजारों में कपड़े, पूजा सामग्री की दुकानें सज गई है। वहीं छठ घाटों की साफ सफाई पंचायत स्तर से शुरू कर दिया गया है। इस क्रम में शहर सहित पंचायतों में कई स्थानों पर छठ घाट बनाए जा रहे हैं। वहीं बरहीडीह, सूर्य मंदिर के तालाब को लोगों ने साफ सफाई करते हुए घाट की सजावट में जुट गए हैं। जबकि बरसोत पंचायत के छठ घाट में भगवान सूर्य की प्रतिमा की झांकी तालाब के बीच मे किया जा रहा है। शहर में व गांव में फल, सूप व दउरा की दुकानों पर लोगों की अच्छी भीड़ खरीदारी को लेकर लगी रही। शहर के छठ घाटों में अपने स्थान सुरक्षित रखने के लिए भी श्रद्धालु के परिजन जुट गए हैं।

दारू में बीडीओ ने किया घाट का निरीक्षण

दारू। आस्था के महापर्व छठ को लेकर शुक्रवार को दारू बीडीओ एवं बीपीओ ने प्रखंड क्षेत्र के भिन्न भिन्न छठ घाटो का निरीक्षण किया। बीडीओ मनीष कुमार ने कहा कि तालाब एवं नदियों पर बनाए गए छठ घाट में उनकी गहराई को माप ले यदि गहराई अधिक हो तो बांस का बैरियर लगाकर उसे चिन्हित कर दें ताकि कोई भी श्रद्धालु गहरा पानी में ना जा सके।आपातकालीन स्थिति के लिए हवा भरा ट्यूब एवम कुछ तैराक को तत्पर रखें ताकि कोई बड़ा हादसा ना हो सके। विशेष रूप से तालाबों के किनारे बने छठ घाट में इन चीजों को ध्यान में रखते हुए जरूर अनुपालन करें। वही प्रखंड के जीनगा, मेडकुरी,दारू बक्सीडीह, ईरगा, झुमरा सहित कई छठ घाटों की साफ सफाई एवम छठव्रती को आने-जाने के लिए रास्ता का कार्य श्रद्धालुओं द्वारा पूरी की जा चुकी है।

स्कार्पियो का पता लगाने में जुटे पिता

दारु। काबलासी पंचायत के त्यूज निवासी एक पिता अपने पुत्र को धक्का मारकर फरार होने वाला स्कार्पियो का पता लगाने के लिए एनएच 522 के सभी सीसीटीवी को खंगाल रहे है। यह घटना दारू थाना क्षेत्र अंतर्गत तिउज के पास राकेश कुमार सिंह के एकलौता पुत्र की मृत्यु 13 नवम्बर को एक सफेद रंग की स्कार्पियो के धक्का मारने से हो गया था, जिसका पता आज तक नही चल पाया है कि कौन सा स्कार्पियो था और उसका मालिक कौन है। इसका पता लगाने के लिए मृतक के पिता व परिवार के लोग एनएच 522 के किनारे दुकानों व पेट्रोल पंप के सीसीटीवी में खंगाल फिरते चल रहे है कि कहीं भी उस स्कार्पियो का पहचान हो सके। मृतक के पिता राकेश सिंह के द्वारा दारू थाना में दिए हुए आवेदन में कहा गया है कि उक्त स्कार्पियो 13 नवम्बर को पुनाई स्थित संकट मोचन मंदिर के स्टैंड में दो घण्टा से अधिक समय तक खड़ी थी। संकट मोचन मंदिर व अन्य जगह पर लगी सीसीटीवी में स्कार्पियो का पुरा नंबर नही पता चल पा रहा है। आवेदक ने अपने आवेदन में कहा है कि सीसीटीवी में वाहन का जो नम्बर दिखाई पड़ रहा है उसके एक दो अंक साफ साफ नहीं दिख रहा है जिसका पता लगाने का वह प्रयास कर रहे है। ज्ञात हो कि 13 नवंबर को बहुत ही बेरहमी से राकेश कुमार को वाहन से धक्का मारकर स्कार्पियों में सवार लोग फरार हो गये थे। बताया जाता है कि वाहन सवार द्वारा अगर उसे कुचला ना गया होता और स-समय ईलाज हो जाता तो उसकी जान बच सकती थी।

बोलेरो की चपेट में आने से युवक मौत, हंगामा

बरही। गया रोड एक्सिस बैंक के नजदीक साइकिल से जा रहे युवक को बोलेरो ने धक्का मार दिया, 15 वर्षीय युवक अमिताभ मालाकार सड़क पर गिर गया और युवक की घटनास्थल पर ही मौत हो गयी।आक्रोशित ग्रामीणों ने सड़क जाम कर पुलिस प्रशासन को दोषी ठहराते हुए कहा कि प्रतिदिन बरही चौक पर जाम की स्थिति बनी रहती है। बावजूद इसके पुलिस प्रशासन की नजर इस ओर नही जाती है। आक्रोशित ग्रामीणों ने यह भी मांग किया कि बरही में जितने भी बैंक व व्यवसाय है, उसके लिए पार्किंग की कोई व्यवस्था नही है। जिसके कारण भी जाम की स्थिति बनी रहती है। घटना की जानकारी मिलते ही भाजपा जिला उपाध्यक्ष रमेश ठाकुर, सांसद प्रतिनिधि गणेश यादव, सद्भावना विकास मंच अध्यक्ष राजसिंह चौहान, मुखिया समशेर आलम, मुखिया प्रतिनिधि छोटन ठाकुर, सांसद प्रतिनिधि अर्जुन साव, नंदकिशोर कुमार, शिवा निषाद, पंकज केसरी, मुखिया सिकंदर राणा सहित दर्जनों सामाजिक व राजनीतिक कार्यकर्ता पहुंचकर पीड़ित परिवार को समझाने का प्रयास किया बावजूद इसके ग्रामीणों में काफी आक्रोश देखने को मिला।

सूर्य उपासना की वैश्विक परम्परा

विश्व को पुरातन परम्परा से कराया अवगत

रामायण-महाभारत में भी सूयोर्पासना का वर्णन

ईरान धर्म, पारसी भी सूयोर्पासना से ही जुड़ा है। बात अगर भारत के संदर्भ में हो तो यहां सूयोर्पासना शेष विश्व से कहीं अधिक पुराना और व्यवस्थित स्वरूप में रहा है। यहां भगवान सूर्य को सर्वोच्च देव मानकर युगों से उपासना की जाती रही है। इसका आधार वेद ग्रंथ तो स्रोत उपनिषद और पुराण हैं। वहीं महाकाव्य रामायण और महाभारत में भी इससे संबंधित कथाएं हैं। वेदों में सर्वाधिक प्राचीन ऋग्वेद में सूर्यदेव की महिमा का गान इन मंत्रों के द्वारा किया गया है।

यह आत्म शुद्धि का दिन है।

यह आत्म शुद्धि का दिन है। अगले दिन पंचमी तिथि को व्रती पूरे दिन निर्जला रह कर संध्या को चावल गुड़ से बना खीर और रोटी खाते हैं। इसे खरना व्रत कहते है। इसके अगले दिन व्रतकर्ता पूर्णरूपेण अन्न जल त्याग संध्या को नदी तालाब घाट अर्ध्य देते हैं। इस दिन को निखण्ड कहते है। तदोपरांत चौथे दिन सप्तमी तिथि को प्रातः काल सूर्यदेव को नदी तालाब घाट अर्ध्य देने के उपरांत व्रत पूर्ण होता है। इस दिन को पारण कहते हैं।

इस पूजा अवधि में व्रती भूमि पर शयन करते हैं। पुरुष व्रती धोती तो महिला साड़ी पहनती हैं।इनके कपड़े पीले रंग के होते हैं।व्रती इन दिनों चप्पल जूते और सिले वस्त्रों का उपयोग नहीं करते हैं। ये निरंतर सूर्यदेव की प्रार्थना करते हुए व्रत संबंधित नियमों का कठोरता पूर्वक पालन करते हैं। कई लोग तो नदी तालाब घाटों तक लेटकर सूर्यदेव को प्रणाम करते हुए जाते आते हैं।इ से परंपरा को दंड प्रणाम कहते हैं।

इन दिनों घर के आंगन से नदी तालाब घाटों तक पूरा भक्तिमय माहौल होता है। इस अवसर पर घर आंगन से लेकर रास्ते और नदी तालाब घाटों की सजावट देखते बनती है। आंगन और घाटों पर केले के पौधे गन्ना और मिट्टी के दीये बर्तनों से शोभा बढ़ाई जाती है। छठ व्रत की आहट के साथ ही श्रद्धालु रास्ते और नदी तालाब की सफाई मे लग जाते हैं। पूजा के दौरान घाट पर अर्ध्य के दौरान जल में फूल चावल अक्षत और दूध भर छोड़ा जाता है। यह मछली जैसे जलीय जीवों का आहार है।

वहीं पूजा उपरांत घाट पर चारों तरफ सजावट को लगाए गए केले के पौधे नजर आते हैं। कहीं कोई प्लास्टिक रसायन इत्यादि का उपयोग नजर नहीं आता। उलटे सफाई के नाते जल का बहाव और सुंदर रंगत दिखता है। यह पर्व अब भी बाजारवाद से पूरी तरह दूर है। प्रसाद घरों में ही बनना है जबकि प्रसाद के तौर पर आटे गुड़ देसी घी से बने ठेकुआ की महत्ता है। वैसे उपलब्ध मौसमी फल भी चढ़ाए जाते हैं।

पूजा के प्रसाद बांस के बने बर्तनों में सजा सूर्यदेव को अर्ध्य दिया जाता है, जिसे परिवार के सदस्य सर पे ढोकर घाट तक लाते हैं। पूजा संबंधित बर्तनों की खरीदारी आस-पड़ोस के डोम और कुम्हार बिरादरी से की जाती है। यह पर्व सामाजिक जुड़ावों का भी पर्व है। यहां घाटों पर पूजा संपन्न होने के साथ ही व्रतियों के पांव छूने और उनके गीले वस्त्र धोने की प्रतिस्पर्धा देखते बनती है।

इस पर्व में प्रसाद मांग कर खाने और व्रतियों के पांव छूने का विधान है छठ की वैश्विकता का असर बिहार, यूपी से आगे निकलकर गिरमिटियों के ग्लोबल गांव से लेकर लंदन में टेम्स किनारों तक अब बहुत साफ साफ दिखने लगा है। छठ महापर्व ,सूयोर्पासना के अतीत वाली दुनिया भर के जातियों को सनातन संस्कृति और भारतवर्ष से जोड़ने का एक सार्थक उपक्रम हो सकता है।

छठ की वैश्विकता का असर बिहार, यूपी से आगे निकलकर गिरमिटियों के ग्लोबल गांव से लेकर लंदन में टेम्स किनारों तक अब बहुत साफ साफ दिखने लगा है।

छठ महापर्व ,सूयोर्पासना के अतीत वाली दुनिया भर के जातियों को सनातन संस्कृति और भारतवर्ष से जोड़ने का एक सार्थक उपक्रम हो सकता है।

सूयोर्पासना एक पुरातन धार्मिक-सांस्कृतिक परंपरा है। इससे संबंधित प्रतीक आपको विश्वभर में देखने को मिलेंगे। कभी यह रोम मिस्र, ग्रीक, सीरिया, पर्शिया, अफ्रीका और अमेरिका तक चलन में रहा है। अमेरिका की पुरानी सभ्यता इंका और माया के तो प्रधान देवता सूर्य ही है। इंका लोग आदित्य को इंदि तो माया सभ्यता में तोनातिउ पुकारा जाता था ।रोम सोल तो पर्शिया मित्र,जापान अमतेरासू और मिश्र मे होरुस नाम से सूर्यदेव को संबोधित किया जाता रहा है। बाल्टिक देशों के लोग साउल नाम से तो यूनान और ग्रीस मे हेलियोस नाम से तो पुकारते रहे हैं। हेलियोस की मूर्ति भारत में बने अश्व रथ पर सवार सूर्यदेव के बिल्कुल समान हुआ करती थी।

लैटिन संस्कृति में सूर्यदेव का नाम सो तो फ्रीजिअन्स अत्तिस, लिजियन्स मिदोस और बेबिलोनिया शमस नाम से संबोधित करते थे। ये सभी नाम सूर्यदेव के भारतीय नामों के समानार्थ हैं। पश्चिम एशिया की हित्ती संस्कृति से लेकर यूरोप के क्रीट और जर्मनी तक सूयोर्पासना चलन में रहा है।

उपनिषदों में विशेष उल्लेख

सूयोर्पासना ग्रंथ के तौर पर उपनिषदों में (सूर्योपनिषद चक्षुरूपनिषद् नेत्रोपनिषद् और नारायनोपनिषद) विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वहीं पुराणों में इससे संबंधित सौर एवं शाम्बा उपपुराण तथा ब्रह्म महापुराण हैं, जबकि ऋग्वेद में अनेक सूयोर्पासक मंत्र हैं। बाणभट्ट के कुटुंब पंडित मयूर भट्ट ने सूर्य शतक नामक तो प्रसिद्ध जैन आचार्य मानतुंग ने भक्तमर स्रोत नाम का सौर उपासना ग्रंथ लिखा है। जबकि मिथिला के विद्वान चंदेश्वर और रुद्रधर ने भी सूयोर्पासना पर ग्रंथ लिखे हैं।

इसमें से रुद्रधर द्वारा लिखे मिथिला वर्षकृत्य मे प्रतिहार षष्ठी नाम से छठ व्रत की चर्चा है। सूयोर्पासना संबंधित एक महत्वपूर्ण रचना के तौर पर नेपाल से सौर संहिता प्राप्त हुई है। यह विक्रम संवत 998 की लिखी प्रतीक होती है।

छठ व्रत के कठिन नियम

छठ एक ऐसा पर्व है जिसका सम्पूर्ण केवल नियम और श्रद्धा आधारित है। यहां जाति और समुदाय का भेद नहीं है। गैर हिन्दु मसलन, मुस्लिम परिवार की महिलाएं भी पुरातन संस्कार और श्रद्धा से भर छठ व्रत करती हैं। चार दिनों का यह त्योहार शुक्ल पक्ष चतुर्थी को प्रारंभ होता है। इस दिन व्रती प्रातः स्नान कर नए वस्त्र पहनती हैं। भोजन में लहसुन-प्याज से रहित शुद्ध सात्विक दाल चावल और हरी सब्जियां बनती हैं।चावल अरवा उपयोग होता है। इस दिन भोजन में सेंधा नमक का उपयोग किया जाता है।वहीं तुलसी दल डाल भगवान को भोग लगा पहले व्रती फिर परिवार जन खाते हैं।इसे नहाय खाय कहते है।

ईरान के पूर्व शासक पहलवी वंश भी खुद को सूर्यवंशी मानता है

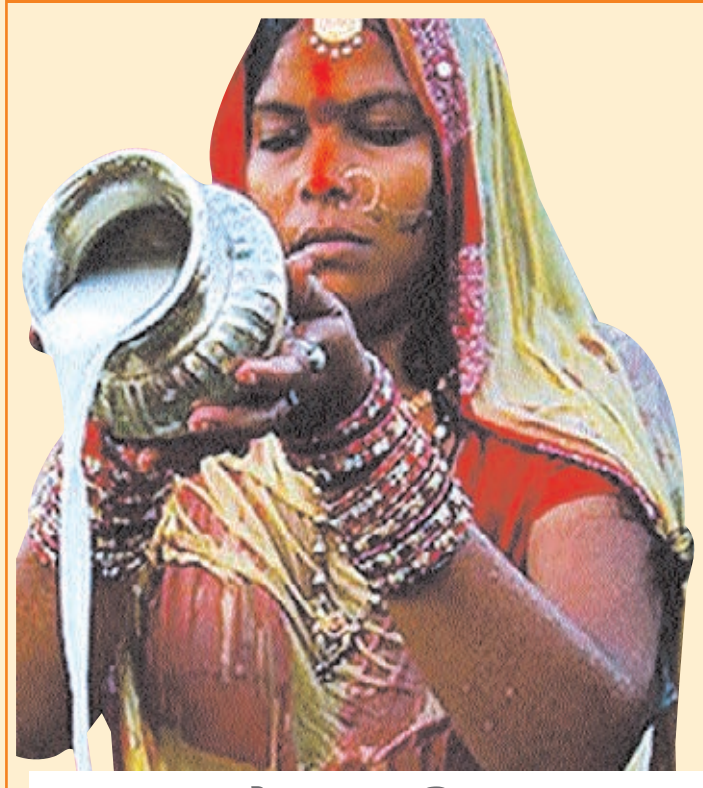

सम्राट अशोक का प्रसिद्ध कालचक्र मूलतः एक सौर प्रतीक है।

यूरोप और दक्षिण अमेरिकी देशों में बलात धर्मांतरण के बावजूद अब भी इसकी जड़ें मौजूद है। इनसे संबंधित प्रतीक दुनियाभर में देखा जा सकता है। जापान से अर्जेंटीना तक करीब बाइस देशों के राष्ट्रीय ध्वज पर सूर्य चिन्ह अंकित है। इनमें एशिया और अमेरिका ही नहीं, अफ्रीका तथा यूरोप के देश भी हैं। महान भारतीय सम्राज्य मौर्य के चांदी से बने पंच चिह्न वाले सिक्कों में उगते सूरज का चित्रण है। ऐसा मुद्राशास्त्रीय अध्ययनों से पता चला है। वहीं इनके राज्य चिन्ह के तौर पर सूर्य प्रतीकों की संभावना व्यक्त की जा रही है।

पुरायुग इतिहासविदों की मानें तो सम्राट अशोक का प्रसिद्ध कालचक्र मूलतः एक सौर प्रतीक है। यह वास्तव में एक सूर्य चक्र है।वहीं यह समय की यात्रा में भारत से होता बौद्ध देशों तक पहुंचा। अब उनके लिए भी एक पवित्र प्रतीक है। आखिर ऐसा हो भी क्यों नहीं, सूर्य प्रत्यक्ष देव हैं। वे प्रकाश के पुंज है। सूर्य जीवनदायी शक्तियों के सबसे बड़े प्राकृतिक स्रोत भी है।

प्रकृति के इस जागृत और निरंतर गतिमान ऊर्जा पिंड को ओज तेज, शक्ति सामर्थ्य का जीवंत प्रतीक माना गया है। इस नाते न्यूजीलैंड के माओरी जनजाति से लेकर जापान के सम्राट तक के सूर्य की संतानें होने का दावा है। ईरान के पूर्व शासक पहलवी वंश भी खुद को सूर्यवंशी मानता है। इस्लामीकरण के बावजूद ईरान के शाह पहलवी उपाधि और सूर्यदेव में विश्वास करते थे।

वेद कहते है - येना पावक चक्षसा भुरण्यंतम्जनां वं वरूण पश्यसि

कथाओं में राजा ऐल और भगवान कृष्ण पुत्र शाम्बा के कुष्ठ मुक्ति की कथा है। ऐसी ही एक कथा राजा शर्याति की पुत्री देवी सुकन्या की भी है। इन्होंने सूर्यदेव की उपासना से अपने वयोवृद्ध पति ऋषि च्वन्य को युवा और कांतिमय रूप में पाया था।सूयोर्पासना से निसंतान राजा प्रियव्रत के यहां शिशु जन्म पुराणों की एक महत्वपूर्ण कथा है। ईक्ष्वाकु वंशीय क्षत्रीय तो अपने को सूर्यवंशी मानते आए हैं।

क्षत्रीयों की यह सूर्यवंशी शाखा वैवस्वत मनु से प्रारंभ होती है। इसी शाखा में इक्ष्वाकु,हरिश्चंद्र,भगीरथ, दिलीप,सुदास,रघु और दशरथ जैसे राजा हुए हैं। जैन मत के सभी चौबीस तीर्थकर और सिख पंथ के दस गुरुओं का जन्म इसी सूर्यवंशी कुल में हुआ है।गुरु गोविंद सिंह अपने दशम ग्रंथ में गुरुनानक से लेकर स्वयं तक के जन्म को इस वंश से जोड़ पूरी वंशावली प्रस्तुत करते हैं। जबकि भगवान के पृथु, राम और बुद्ध देव अवतारों का जन्म कुल यही है। रामायण में रावण से युद्धरत भगवान राम लंका विजय हेतु आदित्य हृदय स्तोत्र के अनुष्ठान की चर्चा है।

वहीं महाभारत में अज्ञातवास के दौरान अपने दुर्भाग्य मुक्ति हेतु द्रौपदी और युधिष्ठिर द्वारा सूयोर्पासना की कथा है। जैन एवं बौद्ध मान्यताओं में भी सूर्य की महत्ता है। बौद्ध मतावलंबी तो भगवान बुद्ध के शरीर को सूर्य प्रतीक मानते हैं। बुद्ध की ज्ञान भूमि गया स्थिति महाबोधि महाविहार के प्राचीन कटघरा रेलिंग मे सूर्यदेव का चित्रण मिला है।

भारत में पुरातन काल से सूयोर्पासको का एक संप्रदाय भी रहा है।इस सौर संप्रदाय के अपने मंदिर,तीर्थ और महत्वपूर्ण ग्रंथ भी थे।यह संप्रदाय आद्य शंकराचार्य के समय भी चलन में रहा है।इनमें लाल चंदन फूल लाल माला और अष्टाक्षर मंत्रों की प्रधानता रही है।इसके तांत्रिक शाखा के साधक अपने शरीर पर सूर्य चिन्हों का अंकन कराते थे।

स्पीड न्यूज

सेल अधिशासी निदेशक से की मांग

बोकारो। भाजपा के प्रदेश कार्यसमिति सदस्य कुमार अमित शहर के छठ घाटों पर व्रतियों के लिए समुचित व्यवस्था सहित विभिन्न जनसमस्याओं को लेकर बीएसएल के ईडी ;पी एंड एद्ध राजन कुमार से मिले एवं समाधान हेतु आवश्यक कार्रवाई करने की मांग की। कुमार अमित ने छठ पूजा में पर्याप्त पानी छोड़ने स्वच्छता आकस्मिक चिकित्सा गर्गा नदी स्थित बियाडा चेकपोस्ट गर्गा डैम आदि के घाटों पर छाई डलवाने आदि की समुचित व्यवस्था करने की मांग की।

प्रशासन की पहल पर छठ की तैयारी

गुमला। गुमला के सभी छठ घाटों की व्यवस्था दुरूस्त हो रही है। साफ-सफाई, पार्किंग, लाइटिंग, सुलभ आवागमन सहित अन्य सुविधाओं पर फोकस किया जा रहा है। उपायुक्त कर्ण सत्यार्थी के निर्देश पर पूरा प्रशासनिक महकमा तैयारियों में लगा हुआ है। जिसका परिणाम है कि तैयारी लगभग पूरी हो चुकी है। इसपर चैंबर के पूर्व अध्यक्ष सह समाजसेवी रमेश कुमार चीनी ने प्रशासन का आभार जताया है। उपायुक्त को विशेष तौर पर बधाई दी है। कहा है कि आस्था का ख्याल करते हुए उपायुक्त ने ससमय दिशा-निर्देश जारी किया और स्वयं मॉनिटरिंग कर रहे है। यह सुखद संकेत है कि आस्था का यह महापर्व निश्चित भक्तिमय माहौल में संपन्न होगा। उन्होंने साफ-सफाई का दायित्व बेहतर तरीके से निभाने के लिए धर्मावलंबियों की ओर से नगर परिषद प्रशासक दिलीप कुमार को भी बधाई दी है।

जल संरक्षण संकल्प अभियान की शुरुआत

धनबाद। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर्यावरण विभाग, कतरास नगर के द्वारा जल संरक्षण संकल्प अभियान की शुरूआत जल को साक्षी मान कर किया गया । सभी स्वयंसेवकों ने जल को अपने हाथ में लेकर संकल्प लिया की जल का संरक्षण करना हम सभी का दायित्व बनता है तभी जल प्रदूषण से होने वाले जानलेवा बीमारियो से समाज को बचाया जा सकता है ।समाज को कूड़ा कचड़ा फूल नदी में ना फेकने का अनुरोध के साथ जागरूक भी करने का संकल्प लिया गया।

कांग्रेस नेता ने किया कई गांव का दौरा

गुमला। जिला कांग्रेस कमेटी किसान प्रकोष्ठ के द्वारा आगामी 23 नवंबर को उरांव क्लब गुमला से लेकर उपायुक्त तक आयोजित की तैयारी जोर शोर से की जा रही है। कार्यक्रम की सफलता को लेकर किसान प्रकोष्ठ के नेता हंदू भगत ने गुमला प्रखंड क्षेत्र के फोरी, अटरिया, बसुआ, पड़की टोली, सकरपुर गम्हरिया डुमरडीह आदि कई गांव का दौरा किया। श्री भगत ने इस संबंध में बताया कि जन यात्रा की तैयारी को लेकर विभिन्न गांव का भ्रमण किया गया है। सैकड़ो की संख्या में लोग जन यात्रा के कार्यक्रम में भागीदारी कर क्षेत्र की समस्या के निदान के लिए उपायुक्त से आग्रह करेंगे। श्री भगत ने बताया कि आजादी के 70 वर्षों के बाद भी डुमरडीह पंचायत के पड़की टोली और नवाडीह के बीच खटवा नदी में पुलिया और सड़क का निर्माण नहीं होने से आमजन ग्रामीण एवं स्कूली छात्राओं को काफी कठिनाई होती है। बरसात में यह इलाका टापू बन जाता है ।

भाजपा नेता ने व्रतियों में बांटी पूजा सामग्री

बेरमो। भाजपा नेता प्रकाश कुमार सिंह ने बेरमो विधान सभा क्षेत्र के विभिन्न जगहो मे छठव्रतियों के बीच पूजा सामग्री वितरण किया। बताया कि हमारे समाज में अभी भी गरीबी कायम हैएजिसको लेकर हमलोग हर पर्व त्योहार में गरीबों के बीच कुछ ना कुछ वितरण करते है। जिससे गरीबों के चेहरे पर खुशहाली देखने लायक होती है। इसी को देखते छठ पूजा के शुभ अवसर पर जरूरतमंद को नए वस्त्र एवं पूजन समाग्री वितरण किया। फिर उन्होंने बताया कि हमारा मुख्य उद्देश्य है असहायों की सहायता, भेदभाव मुक्त एक सभ्य समाज का निर्माण, शोषण मुक्त समाज का निर्माण करना है।

मुड़मा की घटना के दोषियों पर हो कड़ी करवाई : लाल विकास

कुडू। मुड़मा में हिंदुओ के देवी देवताओं की प्रतिमा को षडयंत्र के तहत क्षतिग्रस्त करने वाले दोषियों की ऊपर पुलिस प्रशासन के साथ राज्य सरकार अविलंब कारवाई करे। झारखंड राज्य में लगातार हिंदुओ एवम उनके आराध्य देवी देवताओं व मंदिरो के उपर हमले हो रहे है। मुड़मा की घटना उसी की कड़ी है। कुडू प्रखंड विश्व हिंदू परिषद व बजरंग दल घटना में शामिल दोषियों की अविलंब गिरफ्तारी और कड़ी कार्यवाई की मांग करती है। मांग करने वालो में विकास शाहदेव,प्रदीप ठाकुर,संजय चौधरी,अमित कुमार बंटू,रामखेलावन राम,कैलाश प्रसाद,शिवकुमार पासवान,संतोष साहू,परमेश्वर महतो,उदय मुंडा,रामरतन सिंह आदि शामिल है।

छठ को लेकर उत्साह का वातावरण

कैरो। प्रखंड मुख्यालय सहित पूरे प्रखंड क्षेत्र में सूर्यदेव की महापूजन का पर्व छठ महापर्व का शुभारंभ नहाय खाय कद्दू भात के साथ शुक्रवार से प्रारम्भ हो गया। छठ पूजा को लेकर जहाँ छठव्रतियों व परिवार में शुद्धता के साथ तैयारी की जा रही है वहीं अलग अलग समाजसेवी व संगठनों के द्वारा प्रसाद वितरण का भी उत्साह देखा जा रहा है, कहीं तालाब तो कहीं नदियों में सफाई कर छठ घाट व आने जाने की रास्ता को भी सफाई की गई है। सनातन धर्म में सबसे महत्वपूर्ण व विधि विधान से की जाने वाली छठ महापर्व पर अपने घरों से दूर रहने वाले भी अपने अपने घर आया करते हैं जिस कारण इस त्योहार में एक अलग ही उत्साह बनता है साथ ही छठ व्रती लगातार तीन दिनों तक पूरे विधि विधान के साथ रहा करते हैं।

हज यात्रा से लौटे याकुब अंसारी का जारी प्रखंड वासियों ने किया स्वागत

जारी। मक्का मदीना की यात्रा कर लौटे जारी प्रखंड के कमालपुर निवासी याकूब अंसारी का प्रखंड वासियों ने फूल माला पहनाकर जोरदार स्वागत किया। इसके बाद उसे बाइक पर बैठकर गोविंदपुर कमलपुर तिगरा सहित पूरे क्षेत्र में भ्रमण कर उसे उसके घर पहुंचाया। जहां फूल माला से जोरदार स्वागत किया गया। वहीं साथ चल रहे युवकों ने नारे भी लगाए। वापसी के बाद याकूब अंसारी ने बताया 20 दिन पूर्व हज के लिए मक्का गया था। जिसके बाद उमराह करने मदीना गया। उन्होंने कहा की सभी मुस्लिम भाइयों को मक्का और मदीना जरूर जाना चाहिए। वहां जाने के बाद मन को शांति मिलती है। क्षेत्र भ्रमण के पूर्व गोविंदपुर के कब्रिस्तान में सलातो सलाम और फातिहा पढ़कर उपस्थित लोगों ने क्षेत्र में सुखचैन और शांति की दुआ मांगी।

प्रमंडलीय आयुक्त ने भरनो के विभिन्न मतदान केंद्रों का किया निरीक्षण

गुमला। प्रमण्डलीय आयुक्त दक्षिणी छोटानागपुर प्रमण्डल राँची सह मतदाता सूची प्रेक्षक के द्वारा शुक्रवार को 67 - सिसई (अ०ज०जा०) विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र के भरनो प्रखण्ड अन्तर्गत मतदान केन्द्र संख्या 126 प्राइम री स्कूल सेमरा, मीडिल स्कूल भरनो, प्रोजेक्ट गर्ल्स हाई स्कूल भरनो, अपग्रेड हाई स्कूल डोंबा आदि का निरीक्षण कर बीएलओ से वर्तमान में संचालित मतदाता सूची संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम 2024 में प्राप्त किये गये सभी प्रकार के प्रपत्र संख्या एवं एचटूएच सर्वे का गहन समीक्षा करते हुए आवश्यक दिशा-निर्देश दिया गया। इस दौरान बीएलओ से कई जानकारी भी हासिल की।

न्यू विशाल क्लब स्थापित करेगा भगवान भास्कर की प्रतिमा

गुमला। न्यू विशाल क्लब छठ पूजा समिति गुमला के द्वारा शहर के सिसई रोड स्थित छठ तालाब में भगवान भास्कर की प्रतिमा स्थापित की जा रही है। क्लब हर वर्ष भव्य प्रतिमा स्थापित कर भगवान भास्कर की पूजा करती है। जिसकी तैयारी लगभग पूरी कर ली गई है। वहीं क्लब के द्वारा इस वर्ष भव्य गंगा आरती का भी आयोजन किया जा रहा है।

संसार हमेशा उन्हें ही याद करता है जो दूसरों के लिए काम करते हैं : राज्यपाल

खोडहा दलों को कार्यक्रम में पुरस्कार देकर किया गया सम्मानित, राज्यपाल का आदिवासी परंपरा के तहत किया गया स्वागत

स्व. कार्तिक उरांव स्मृति जतरा सह खेलकूद प्रतियोगिता एवं सांस्कृतिक महोत्सव, हजारों की संख्या में शामिल हुए लोग

खबर मन्त्र संवाददाता

घाघरा। घाघरा प्रखंड के बदरी स्कूल मैदान में सरना समिति बदरी द्वारा आयोजित स्व. कार्तिक उरांव स्मृति जतरा सह खेलकूद प्रतियोगिता एवं सांस्कृतिक महोत्सव शुक्रवार को संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ व अंत राष्ट्रगान से किया गया। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि झारखंड के राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन, सांसद सुदर्शन भगत, सांसद समीर उरांव, पद्मश्री अशोक भगत शामिल हुए। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन ने कहा कि संसार हमेशा उन्हें स्मरण करता है जो दूसरों के लिए काम करते हैं। हर कोई अपने लिए जीता है जो लोग समाज के लिए जीते हैं वही सही मायने में जीवन जीते है। इस बात को चरितार्थ पंखराज बाबा कार्तिक उरांव ने किया है। कुछ लोग अपने समर्पित कार्य से हमेशा के लिए अमिट छाप छोड़ जाते हैं। वह महान आत्माएं जनता के उत्थान और विकास के लिए अपना सर्वस्त्र न्यौछावर कर देते है। कार्तिक उरांव एक साधारण व्यक्ति कर्म योगी थे। जिनका जीवन निस्वार्थ समर्पण और सामाजिक कल्याण के लिए अथक प्रयासों का प्रमाण है। उनकी विरासत हम सभी को प्रेरित करती है। पंख राज बाबा कार्तिक उरांव सिर्फ एक व्यक्ति नहीं थे। वह आशा के प्रतीक थे। उन्होंने समुदाय की भलाई और वंचितों के उत्थान के लिए सही मायने में समर्पित भाव से अथक परिश्रम करके उदाहरण प्रस्तुत किया। इसके पूर्व सर्व प्रथम राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन ने कार्तिक बाबा के प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। इसके पश्चात कार्यक्रम का शुभारंभ नगाड़ा बजाकर किया गया। प्रोजेक्ट विद्यालय बदरी के छात्राओं के द्वारा स्वागत गान और नृत्य कर राज्यपाल का स्वागत किया गया। वहीं राज्यपाल को पुलिस जवानों ने गार्ड ऑफ ऑनर दिया। कार्यक्रम में भारी संख्या में खोड़हा दल के सदस्य शामिल हुए। जिनके द्वारा पारंपरिक नृत्य व गीत की प्रस्तुती की गई। जिन्हें आयोजन समिति के द्वारा सम्मानित किया गया।

राज्यपाल का पगड़ीपोशी कर गमच्छा व बंडी देकर किया गया स्वागत : कार्यक्रम में शामिल हुए राज्यपाल का आयोजन समिति के द्वारा पगड़ीपोशी कर व गमच्छा प्रदान कर पारंपरिक तौर पर स्वागत किया गया। साथ ही उन्हें क्षेत्रीय बंडी प्रदान की गई। जिसे स्वयं उन्होंने पहना। वहीं कार्यक्रम में शामिल अन्य अतिथियों का भी आयोजन समिति के द्वारा स्वागत किया गया। मंच तक सभी अतिथियों को परिघाते हुए महिलाओं के द्वारा पहुंचाया गया।

आयुष चिकित्सा विभाग सहित कई तरह का लगाया गया स्टाल : कार्यक्रम में आयुष चिकित्सा विभाग द्वारा स्टॉल लगाया गया। जिसमें यूनानी, आयुर्वेद, होम्योपैथ चिकित्सा सहित कई तरह की जांच कर निशुल्क दवा का वितरण किया गया ।आयुष से संबंधित कई प्राकृतिक पौधे का सेवन जो स्वास्थ्य लाभ के लिए जरूरी है उसकी जानकारी दी गई। वहीं भारत गैस का स्टाल भी लगाया गया था। साथ ही महिला विकास मंडल और जेएसएलपीएस के द्वारा बनाए गए रागी लड्डू का स्टाल भी लगाई गई। इस मौके पर आयुष चिकित्सक डॉ अनिल कुमार, डॉक्टर विनय कुमार , डॉ मंजरी डॉक्टर फरजाना इमाम सहित कई लोग उपस्थित थे।

नगाड़ा बजाकर कार्यक्रम का शुभारंभ करते राज्यपाल, सांसद, पद्मश्री अशोक भगत व अन्य। स्व. कार्तिक उरांव की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन

कार्तिक उरांव का व्यक्तित्व समाज निर्माण का था: पद्मश्री अशोक भगत

पद्मश्री अशोक भगत ने ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा कि कार्तिक उरांव आदिवासी समाज को एक नया राह दिखाने का काम किया। उनका व्यक्तित्व समाज निर्माण करने का था। आदिवासी समाज आज अपनी पहचान की लड़ाई लड़ने की जो क्षमता रखती है वह कार्तिक उरांव के द्वारा दिया गया। आज आदिवासी समाज को जरूरत है कि कार्तिक उरांव के बताएं पदचिन्हों पर चले और बेहतर समाज निर्माण का काम करें।

शिक्षाविद के साथ महान समाज सेवी थे कार्तिक उरांव: सुदर्शन

लोकसभा सांसद सुदर्शन भगत ने कहा कि कार्तिक बाबा शिक्षाविद के साथ-साथ महान समाजसेवी थे। समाज कैसे आगे बढ़े इसके लिए हमेशा उन्होंने प्रयास किया। जतरा का आयोजन स्व. कार्तिक उरांव की स्मृति में हर वर्ष किया जाता है। स्व. कार्तिक उरांव ने आदिवासियों के विकास व उत्थान के लिए जीवन समर्पित कर दिया। उनका जीवन हमें जननेताओं व आदिवासियों को समाज सेवा के लिए प्रेरित करती रहेगी।

कार्यक्रम में ये थे शामिल

कार्यक्रम में मुख्य रूप से राज्यसभा सांसद समीर उरांव रांची की महापौर आशा लकड़ा,उपयुक्त कर्ण सत्यार्थी, पुलिस अधीक्षक हरविंदर सिंह, पूर्व एमएलसी प्रवीण सिंह, कुमार रवि, रामनंदन साहू, बिपिन बिहारी सिंह, ओमप्रकाश सिंह, शिव शंकर उरांव, भिखारी भगत, महेंद्र भगत,रामावतार भगत, श्याम किशोर पाठक, तेंबू उरांव, रवि पहान, अमित ठाकुर,आशीष सोनी, राजमोहन सिंह, विवेक सिंह, पप्पू गुप्ता, गोपाल गोप, श्याम साहू ,दीनबंधु मांझी, सहित सैकड़ों लोग उपस्थित थे।

नहाय खाय के साथ चार दिवसीय छठ महापर्व आरंभ, खरना आज

खबर मन्त्र संवाददाता

गुमला। लोक आस्था व सूर्य उपासना का चार दिवसीय महापर्व छठ नहाय खाय के साथ शुक्रवार से आरंभ हो गया। लोक आस्था के इस महापर्व में छठ व्रतियों द्वारा पवित्र नदियों, तालाबों व सरोवरों में स्नान कर भगवान भास्कर को अर्घ अर्पित करने के बाद अपने हाथों से कद्दु व अरवा चावल का भात, चना का दाल बनाकर उसका सेवन किया। अनुष्ठान के दौरान पवित्रता का पूर्ण ध्यान व्रतियों द्वारा रखा गया। आस्था के इस महापर्व में घर-घर में लोगों ने कद्दु भात का सेवन किया। शुद्ध आम के लकडियों के द्वारा भोजन छठव्रतियों द्वारा बनाया गया। जनजातीय बहुल गुमला जिला में सूर्य उपासना का महापर्व धार्मिक अस्था व विश्वास के साथ मनाया जाता है। धीरे-धीरे यह पर्व शहर से होते हुए छोटे-छोटे गांव तक पहुंच गई है। अब गांव से लेकर शहर मुख्यालय के सभी तालाबों में छठ पूजा किया जाता है। क्योंकि पर्व के प्रति लोगों की आस्था में वृद्धि होते जा रही है। वहीं छठ पूजा में भगवान भास्कर को अर्घ अर्पित कर लोग अपने सुख-समृद्धि की कामना करते हैं। वहीं क्षेत्र की शांति के लिए भी भगवान भास्कर से विशेष प्रार्थना की जाती है।

नहाय-खाय पर्व के बाद शनिवार को खरना पर्व व्रतियों द्वारा किया जाएगा। छठ महापर्व के तीसरे और चौथे दिन अस्तचलगामी सूर्य व उदयमान सूर्य को अर्घ अर्पित छठव्रती करेंगी। जिले के सभी प्रखंडों में भी शुक्रवार को छठ व्रतियों ने नहाय-खाय पर्व किया। प्रखंडों में भी नेम-निष्ठा का विशेष ध्यान व्रतियों द्वारा रखा गया। वहीं शहर के कई स्थानों पर लागत मूल्य पर छठ व्रतियों के बीच छठ सामान का वितरण किया गया। दुकानों पर सामग्री खरीदने के लिए दिन भर भीड़ लगी रही। वहीं दूसरी ओर छठ घाट की अंतिम चरण की सफाई में लोग जुटे हुए हैं। नगर परिषद विभाग के कर्मी लगातार छठ घाटों की सफाई कर रहे हैं।

कद्दु भात का सेवन करती छठव्रती

लोहरदगा : लोक आस्था का महापर्व छठ आरंभ

लोहरदगा। लोक आस्था का महापर्व छठ शुक्रवार को नहाय खाय के साथ शुरू हो गया। शुक्रवार को छठवर्तियों ने स्नान कर नया वस्त्र धारण किया। इसके उपरांत पूजा कर दिन के भोजन में अरवा चावल का भात, सेंधा नमक से बना चना दाल और कद्दू की सब्जी का सेवन किया। वहीं शनिवार को संध्या में खरना अनुष्ठान होगा। सूर्यदेव व छठ मईया को चावल, गुड़ और दूध की खीर, रोटी, फल का भोग लगाया जाएगा। यही भोग प्रसाद ग्रहण करने के बाद छठ व्रतियों का 36 घंटे का निर्जला उपवास आरंभ हो जाएगा। इधर महापर्व को ले बाजारों में पूजन सामग्री, सूप, दौरा, फल, मिट्टी के बर्तन की बिक्री जोरों पर है। लोक आस्था के इस महापर्व में लोग बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं। महापर्व को ले जिले में श्रद्धा और उत्साह का माहौल नजर आ रहा है। छठ महापर्व के गीत बजने से वातावरण भक्तिमय हो गया है। शहरी क्षेत्र के अलावा ग्रामीण क्षेत्रों में भी महापर्व की तैयारियां पूरी हो गई है।

एक नजर में

राज्यपाल को दिया गया गार्ड ऑफ ऑनर

राज्यपाल को पुष्पगुच्छ देते डीसी, एसपी

लोहरदगा। राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन का शुक्रवार को लोहरदगा परिसदन में गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। राज्यपाल शुक्रवार को गुमला जिला के घाघरा प्रखंड के बदरी ग्राम स्थित स्कूल मैदान आयोजित कार्तिक उराँव स्मृति यात्रा सह खेलकूद प्रतियोगिता में शामिल होकर लौटने के क्रम में लोहरदगा परिसदन में थोड़ी देर के लिए रुके। इससे पूर्व राज्यपाल का स्वागत लोहरदगा जिला के उपायुक्त डॉ वाघमारे प्रसाद कृष्ण और पुलिस अधीक्षक हारिस बिन जमाँ द्वारा पुष्पगुच्छ दे कर स्वागत किया गया। परिसदन में थोड़ी देर रुकने के बाद राज्यपाल का काफिला राजभवन, राँची के लिए रवाना हो गया। इस मौके पर जिला के अन्य वरीय पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

आदिवासी रीति रिवाज के साथ बिरसा मुंडा प्रतिमा का किया गया अनवारण

लोहरदगा। किस्को प्रखंड क्षेत्र के जिला परिषद कॉम्प्लेक्स किस्को चौक के समीप आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान को यादगार को बरकरार रखने के उद्देश्य से किस्को में भगवान बिरसा मुंडा का प्रतिमा का अनावरण जिला परिषद सदस्य संदीप कुमार गुप्ता, बीडीओ और थाना प्रभारी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। मौके पर जिला परिषद सदस्य संदीप कुमार गुप्ता ने कहा कि भगवान बिरसा मुंडा हम सबों के लिए प्रेरणा स्रोत है। उन्होंने देश की आजादी के लिए अपना सब कुछ झोंक दिया। आज हम सब के लिए गौरव का पल है की हम उनके प्रतिमा का अनावरण कर रहे है। जिसके बाद आदिवासी रीति रिवाज से सर्वप्रथम पहले विधिवत रूप से भगवान बिरसा मुंडा की पूजा अर्चना किया गया जिसके बाद अतिथियों के द्वारा नारियल फोड़कर बिरसा मुंडा प्रतिमा का उद्घाटन किया गया। इस दौरान सभी अतिथियों के द्वारा भगवान बिरसा मुंडा के चित्र पर फूल माला चढ़कर उनकी जीवनी पर विस्तृत चर्चा किया।

बन्ना गुप्ता ने किया छठ घाटों का दौरा, दिये निर्देश

जमशेदपुर। लोक आस्था का महापर्व छठ पूजा को लेकर तैयारियों का जायजा लेने के उद्देश्य से झारखंड के स्वास्थ्य,चिकित्सा शिक्षा,परिवार कल्याण एवं आपदा प्रबंधन मंत्री बन्ना गुप्ता द्वारा विभिन्न छठ घाटों का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के क्रम में स्वर्णरेखा घाट,मानगो पुल, दोमुहानी घाट में घाटों की साफ-सफाई और व्रतियों की सुविधा के लिए घाटों पर किए जा रहे कार्यों की जानकारी ली। साथ ही छठ घाटों को सुरक्षित करने और हर तरह की सुविधा बहाल कराने, छठ घाटों पर श्रद्धालुओं को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो इसके मद्देनजर मौके पर मौजूद पदाधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिये।

शिष्टमंडल मिला एसपी से

एसपी को स्मृति चिन्ह देते लोग

लोहरदगा। झारखंड ट्रक ऑनर्स एसोसिएशन लोहरदगा,गुमला,लातेहार का एक शिष्ट मंडल लोहरदगा पुलिस अधीक्षक हारीश बिन जमा से उनके आवास पर भेंट कर उन्हें भारत का स्मृति चिन्ह भेट करते हुए दीपावली एवं छठ की बधाई एवं शुभकामनाएं दी। एसपी हारीश बिन जमा ने भी सभी जिला वासियों को सभी पर्व की बधाई एवं शुभकामनाएं दी। कार्यकारी अध्यक्ष दीपक सर्राफ ने कहा कि जिला प्रशासन के सहयोग से दशहरा एवं दीपावली पर्व हर्षो उल्लास के साथ एवं शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न हुआ। इसके लिए जिला प्रशासन का आभार व्यक्त किया और कहा की छठ पर्व भी धूमधाम एवं शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न होंगे। मुलाकात करने वाले में कार्यकारी अध्यक्ष दीपक सर्राफ,उपाध्यक्ष मोहम्मद कैश, अवधेश मित्तल,शशि भूषण सिंह आदि मौजूद थे।

नक्सली नागेशिया ने किया समर्पण

लातेहार। झारखंड सरकार की आत्मसमर्पण एवं पुनर्वास नीति नई दिशा से प्रभावित होकर भाकपा माओवादी के सक्रिय सदस्य जितेंद्र नगेसिया ने शुक्रवार को लातेहार एसपी कार्यालय में पुलिस अधीक्षक अंजनी अंजन व उपायुक्त हिमांशु मोहन के समक्ष आत्म समर्पण किया। आत्मसमर्पण के बाद बुके व शॉल देकर स्वागत किया। एसपी अंजनी अंजन ने कहा कि हिंसा के रास्ता छोड़कर जितेंद्र नगेसिया आत्मसमर्पण किया है। उन्होंने कहा कि लगातार सीआरपीएफ, कोबरा, झारखंड जगुवार व जिला पुलिस के द्वारा नक्सलियों के विरुद्ध अभियान चलाई जा रही है।

जिससे पुलिस को कई उपलब्धि भी मिली है। उन्होंने अन्य नक्सली संगठन के उग्रवादियों को भी मुख्यधारा में लौटने की अपील किया है। उन्होंने कहा कि आत्म समर्पण करने वाला नक्सली जितेंद्र बूढ़ा पहाड़ में काफी सक्रिय रहा है। वहां ऑक्टोपस अभियान चलाने के बाद नक्सली भाग खड़े हुए। उपायुक्त हिमांशु मोहन ने कहा कि सरकार के आत्मसमर्पण नीति से प्रभावित होकर सरेंडर किया है। इस पॉलिसी में सरकार द्वारा जो भी सुविधा मिलने वाली है। उसे मुहैया कराया जाएगा। उन्होंने आगे कहा कि जल्दी से धन अर्जित करने की वजह से कई लोग गलत रास्ते में चले जाते हैं। वह अपराध की दुनिया छोड़कर मुख्य धारा में लौटे। जितेंद्र नगेसिया को आत्मसमर्पण के लिए प्रेरित करने में बरवाडीह एसडीपीओ दिल्लू लोहरा, लातेहार पुलिस निरीक्षक सह थाना प्रभारी आशुतोष कुमार, छिपादोहार थाना प्रभारी अभिषेक कुमार, बारेसांढ थाना प्रभारी रंजीत कुमार यादव, छिपादोहार थाना के रंजीत राम, काशी महली का अहम योगदान रहा।

आओ चलें इस सफर पे..., हम सब मिल जायें तो संगीत है....

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। टाटा स्टील फाउंडेशन द्वारा प्रस्तुत भारत में आदिवासी पहचान पर सबसे बड़े प्लेटफार्मों में से एक-संवाद शुक्रवार को पांच दिनों में से तीसरे दिन मनाया गया, क्योंकि वे जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से प्रतिष्ठित व्यक्तियों को आदान-प्रदान के लिए एक मंच पर लाए थे। विचार, कला, समस्याएं और समाधान। आदिवासी संस्कृति, ज्ञान, परंपराओं और भोजन का आनंद लेने के लिए पहले दो दिनों में 6000 से अधिक लोग गोपाल मैदान में संवाद शाम में शामिल हुए हैं। दिन का मुख्य आकर्षण रिदम्स ऑफ द अर्थ (आरओटीई) का प्रदर्शन था, जो भारत की 11 जनजातियों के 48 संगीतकारों का एक समूह था, जिन्होंने अपनी मूल रचनाओं का प्रदर्शन कर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने दा शुग्स के साथ सहयोग किया है, जो लद्दाख का पहला स्वदेशी बैंड है, जिसने संवाद 2023 में अपना पहला राष्ट्रीय प्रदर्शन किया। आरओटीई और दा शुग्स के सदस्य जनजातीय संस्कृति केंद्र, सोनारी में 10-दिवसीय निवास में शामिल हुए, जहां उन्होंने कहानियों का आदान-प्रदान किया। आख्यान और भावनाएँ जो उनके संगीत और गीतों में प्रतिबिंबित हुई हैं। रिदम ऑफ द अर्थ (आरओटीई), संवाद सम्मेलन में मिले संगीतकारों का समूह, संवाद 2023 में पांच नई मूल रचनाओं की संगीतमय प्रस्तुति की। हॉर्नबिल कलाकार इसमें शामिल थे। इस दल में बोडो, टोटो, माविलन, कुन्वी, हो, कारबी, मुंडा, उरांव, राभा और बोटो जन जाति के कलाकार अपने पारम्परिक वाद्य यंत्रों के साथ शामिल हुए। इस दल ने थीम सांग ...सफर की विशेष प्रस्तुति दी जिसके बोल थे - *आओ चले इस सफर पे....आओ जुड़े इस संकल्प में,*

जागो रे जागो एक साथ,... हम सब मिल जायें तो संगीत है....। संवाद के तीसरे दिन की शुरुआत संवाद 2023 के पांच स्थानों में से एक, जमशेदपुर नेचुरल ट्रेल में आदिवासी घड़ी के अनावरण के साथ हुई। घड़ी की विशिष्टता यह है कि यह वामावर्त चलती है। जनजातीय समुदायों का मानना है कि वर्तमान समय में हम जिस पारंपरिक घड़ी का उपयोग करते हैं, वह प्रकृति की मौजूदा गति के विपरीत है, जो वामावर्त दिशा में सेट होती है। उदाहरण के लिए, पृथ्वी वामावर्त दिशा में घूमती है, अधिकांश चढ़ाई वाले पौधे या लताएं वामावर्त दिशा में बढ़ती हैं, तूफान और चक्रवात जैसी प्राकृतिक आपदाएं वामावर्त गति में घूमती हैं। आदिवासी समुदायों में उत्सव, जो प्रकृति के साथ घनिष्ठ संबंध बनाते हैं, वामावर्त दिशा में नृत्य की गतिविधियों के साथ मनाया जाता है। यह घड़ी आदिवासी विचारधारा का प्रतिनिधित्व करती है जो प्रकृति की गति का पर्याय है। आदिवासी घड़ी को कलिंगनगर के नवजीवन सहकारी समूह के कारीगरों ने डिजाइन किया गया था।

पूर्व मुख्य कोच रवि शास्त्री ने कहा- भारत जीतेगा विश्व कप

चेन्नई। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व मुख्य कोच एवं प्रसिद्ध कमेंटेटर रवि शास्त्री ने कहा है कि भारत विश्व कप जीतेगा। उन्होंने कहा कि टीम के खिलाड़ी अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं, जो अच्छा संकेत है।

भारतीय टीम सेमीफाइनल में न्यूजीलैंड को हराकर फाइनल में पहुंची है। ऑस्ट्रेलिया ने सेमीफाइनल में दक्षिण अफ्रीका को हराकर फाइनल में जगह बनाई है। दोनों टीमों के बीच फाइनल मुकाबला रविवार को अहमदाबाद के नरेन्द्र मोदी स्टेडियम में खेला जाएगा।

फाइनल मुकाबले से पहले रवि शास्त्री ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि भारत विश्व कप जीतेगा। भारतीय टीम विश्व कप फाइनल में अपनी शुरूआत फेवरेट के रूप में करेगी। पूर्व कोच ने कहा कि टीम को कुछ अलग नहीं करना है, उन्हें बस वही जारी रखना है जो वे पिछले मैचों में कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि भारतीय टीम के साथ सबसे अच्छी बात यह है कि टीम किसी एक या दो खिलाड़ी पर निर्भर नहीं है। टीम के 8 से 9 खिलाड़ी लगातार खेल दर खेल प्रदर्शन कर रहे हैं। यह काफी अच्छा संकेत है।

अहमदाबाद में फाइनल से पहले होटलों का किराया एक लाख पार

एजेंसी

अहमदाबाद। वर्ल्ड कप 2023 अब निर्णायक मोड़ पर पहुंच चुका है। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच फाइनल मुकाबला 19 नवंबर को अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में खेला जाएगा। क्रिकेट प्रेमियों को इस ग्रैंड फिनाले का बड़ी बेसब्री से इंतजार है। बताया जा रहा कि इस मैच को देखने के लिए जहां पीएम मोदी पहुंच सकते हैं, वहीं मैच से पहले भारतीय वायुसेना की सूर्यकिरण एयरोबेटिक टीम भी अपनी परफॉर्मेंस देगी। इसके अलावा देश के कई सेलिब्रिटी भी इस महामुकाबले के साक्षी बनेंगे। लेकिन, इस ऐतिहासिक पल का हिस्सा बनने के लिए क्रिकेट फैंस को कई परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। क्योंकि होटल्स का किराया एक लाख रुपये से ऊपर पहुंच चुका है और फ्लाइट्स के रेट में बेतहाशा वृद्धि हो गई है।

अहमदाबाद में भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच खेले जाने वाले फाइनल से पहले शहर के लग्जरी होटल्स एक रात ठहरने के लिए 1 लाख रुपये से ज्यादा चार्ज कर रहे हैं। वहीं, फ्लाइट्स की कीमतें भी बढ़ गई हैं। अहमदाबाद के लिए राउंड-ट्रिप टिकटों में 200-300 प्रतिशत की वृद्धि देखी जा रही है। फाइनल की पूर्व संध्या यानी 18 नवंबर की शाम को दिल्ली से उड़ान की कीमत अब 15,000 रुपये है।

विश्व कप शेड्यूल जारी होने के बाद से वृद्धि जारी

क्रिकेट फैंस के लिए अहमदाबाद में रहना और टिकट सुरक्षित करना एक कठिन चुनौती बन गया है। विश्व कप कार्यक्रम की घोषणा के बाद प्रशंसकों को उड़ान की लागत में वृद्धि और अत्यधिक होटल टैरिफ का सामना करना पड़ा। जैसे ही भारत ने फाइनल में अपना स्थान सुरक्षित किया स्थिति और खराब हो गई, अहमदाबाद में होटल की कीमतें आसमान छूने लगीं।

भारत-पाक के मैच के दौरान भी बनी थी ऐसी ही स्थिति

बता दें कि यह पहली बार नहीं है, जब क्रिकेट ने शहर में इस तरह की हलचल पैदा की है। कुछ ऐसी ही स्थिति लीग चरण में भारत-पाकिस्तान के महामुकाबले के दौरान भी हुई थी। बुकिंग.कॉम, मेकमाईट्रिप और एगोडा जैसे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर अहमदाबाद में ठहरने के लिए होटल्स के रेट में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है।

विश्वकप क्रिकेट फाइनल मैच के चलते मेट्रो ट्रेन का बदला समय

अहमदाबाद। अहमदाबाद में रविवार को होने वाले विश्वकप के फाइनल मैच को देखते मेट्रो ट्रेन के टाइमिंग में बदलाव किया गया है। मेट्रो रेल कॉरपोरेशन ने निर्णय लिया है कि रविवार को रात 1 बजे तक मेट्रो का परिचालन किया जाएगा।

दरअसल, अहमदाबाद में नवनिर्मित दुनिया के सबसे बड़े नरेन्द्र मोदी स्टेडियम में 19 नवंबर को भारत और आस्ट्रेलिया के बीच विश्वकप का फाइनल मैच खेला जाएगा। इस स्टेडियम की क्षमता 1.25 लाख दर्शक है। इस मैच को देखने के लिए देश विदेश से बड़ी संख्या में दर्शकों के पहुंचने की उम्मीद है। इसके लिए बड़ी संख्या में अधिकांश लोग पब्लिक ट्रांसपोर्टेशन का उपयोग कर मोटेरा स्थित स्टेडियम पहुंचेंगे क्योंकि स्टेडियम के समीप ही मेट्रो स्टेशन है। भारी भीड़ को देखते हुए मेट्रो रेल कॉरपोरेशन ने मेट्रो की टाइमिंग में बदलाव किया है। जानकारी के अनुसार रविवार को मेट्रो ट्रेन सुबह 6.20 बजे से रात 1 बजे तक चलेगी।

फाइनल मैच के लिए भारतीय क्रिकेट टीम अहमदाबाद पहुंच चुकी है। टीम को होटल आईटीसी नर्मदा में ठहराया गया है। शुक्रवार को टीम इंडिया ने प्रैक्टिस भी की। आस्ट्रेलिया की टीम होटल ताज स्काइलाइन में रुकेगी।

क्रूज पर डिनर ले सकती हैं दोनों टीमें

भारत और ऑस्ट्रेलिया की टीम साबरमती नदी पर क्रूज में डिनर भी कर सकती है। इसके लिए अहमदाबाद पुलिस सुरक्षा को लेकर तमाम संभावनाओं के तहत अभ्यास कर रही है। दोनों ही टीम को रिवरफ्रंट क्रूज पर भोजन के लिए आमंत्रण भी भेजा गया है। इसके अलावा दोनों टीम अटल ब्रिज से साबरमती नदी का नजारा देखने भी जा सकती है। इसकी भी तैयारी की गई है।

वर्ल्ड कप का फाइनल मैच देखने 100 से अधिक चार्टर प्लेन से अहमदाबाद आयेंगे वीवीआइपी और सेलिब्रेटी

एजेंसी

अहमदाबाद। अहमदाबाद के नरेन्द्र मोदी स्टेडियम में 19 नवंबर को आईसीसी मेंस क्रिकेट वर्ल्ड कप का फाइनल मैच देखने के लिए देश-विदेश से वीवीआईपी समेत सेलिब्रिटी पहुंचेंगे। भारत और आस्ट्रेलिया के बीच होने वाले इस मुकाबले को देखने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह के आने की संभावना है। ऐसी परिस्थिति में करीब 100 चार्टर प्लेन अहमदाबाद और आसपास के हवाईअड्डों पर उतरेंगे।

अहमदाबाद हवाईअड्डे पर 30 से 40 चार्टर प्लेन के पार्क करने की व्यवस्था है। अहमदाबाद के आसपास के हवाईअड्डों पर भी इन चार्टर प्लेन को उतारा जा सकता है। प्रशासन इसकी तैयारी में अभी से जुटा है। 19 नवंबर को मैच देखने आने वाले वीवीआईपी और सेलिब्रिटी के चार्टन प्लेन को सूरत, राजकोट और वडोदरा में पार्किंग की व्यवस्था की जाएगी।

हालांकि, आमतौर पर चार्टर प्लेन वीवीआईपी को अहमदाबाद हवाईअड्डे पर उतारकर लौट जाते हैं। सूत्रों के अनुसार अहमदाबाद में होने वाले वर्ल्ड कप के फाइनल मैच को देखने के लिए देश के प्रख्यात उद्योगपति मुकेश अंबाणी, लक्ष्मी मित्तल, गौतम अदाणी, जिंदल ग्रुप समेत बॉलीवुड के स्टार पहुंचेंगे। अहमदाबाद के जीए टर्मिनल पर वीवीआईपी के लिए विशेष लाउंज बनाया गया है। इसके अलावा इनके होटल और स्टेडियम पहुंचाने की भी व्यवस्था की गई है।

सद्गुरु ने दिया अहम सुझाव ऐसे जीते लेंगे वर्ल्ड कप

नई दिल्ली। आईसीसी वनडे विश्वकप 2023 का फाइनल मुकाबला रविवार को अहमदाबाद के नरेन्द्र मोदी स्टेडियम में खेला जाएगा। फाइनल में दो बार की विश्व कप विजेता भारतीय टीम के सामने पांच बार की विजेता ऑस्ट्रेलियाई टीम है। फाइनल से पहले हर भारतीय फैन टीम इंडिया के चैंपियन बनने के लिए प्रार्थना कर रहा है। इस बीच सद्गुरु का एक वीडियो वायरल हो रहा है जिसमें वह विश्वकप कैसे जीता जाए, पर अपना सुझाव दे रहे हैं।

सद्गुरु के इंस्टाग्राम अकाउंट पर शेयर किए गए वीडियो में एक व्यक्ति पूछता है कि भारत कैसे

विश्वकप जीते, कुछ टिप देंगे। इस पर सद्गुरु कहते हैं कि वर्ल्डकप कैसे जीता जाए, यह सोचना ही नहीं है। सिर्फ खराब गेंदों को मारो। अगर आप 1 अरब लोगों के बारे में सोचेंगे जो कप के लिए बेताब हैं, तो आप गेंद से चूक जाएंगे या यदि आप अन्य सभी काल्पनिक चीजों के बारे में सोचेंगे जो विश्व कप जीतने पर घटित होंगी, तो गेंद आपके विकेटों को गिरा देगी।

विराट को गोल्डन बैट मिलना तय, गोल्डन बॉल की रेस में शमी सबसे आगे

एजेंसी

नयी दिल्ली। वर्ल्ड कप 2023 का आखिरी और फाइनल मुकाबला ऑस्ट्रेलिया और भारत के बीच रविवार को खेला जाएगा। इस खिताबी मुकाबले में दोनों ही टीमें अपनी पूरी ताकत झोंकने को तैयार हैं। इस मैच में क्रिकेट फैंस की नजरें एक बार फिर विराट कोहली और मोहम्मद शमी पर टिकी होंगी, जिनकी वजह से भारत सेमीफाइनल से फाइनल तक पहुंच सका है। विराट कोहली जहां वर्ल्ड कप 2023 में सबसे ज्यादा रन बनाने के मामले में सभी खिलाड़ियों को काफी पीछे छोड़ चुके हैं तो वहीं मोहम्मद शमी सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज हैं। हालांकि इस मामले में उन्हें ऑस्ट्रेलिया के गेंदबाज एडम जैम्पा से टक्कर मिल सकती है।

विराट कोहली के आसपास भी कोई नहीं : वर्ल्ड कप 2023 में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाजों की सूची में विराट कोहली काफी आगे हैं। उन्होंने टूर्नामेंट के 10 मैचों की 10 पारियों में अब तक 711 रन बनाए हैं। उनके बाद दूसरे नंबर पर क्विंटन डिकॉक हैं, जिन्होंने 10 मैच में 594 रन बनाए हैं। वहीं तीसरे नंबर पर रचिन रविंद्र हैं, जिन्होंने 10 मैच में 578 रन बनाए हैं। जबकि चौथे नंबर पर डेरिल मिचेल हैं, जिन्होंने 10 मैच की 9 पारियों में 552 रन बनाए हैं। डिकॉक, रचिन और मिचेल अब कोहली से आगे नहीं निकल सकेंगे, क्योंकि इनकी टीम सेमीफाइनल में ही बाहर हो चुकी है। कोहली को अगर चुनौती दे सकते हैं तो वह रोहित शर्मा (550 रन) और डेविड वॉर्नर (528 रन) हैं। हालांकि कोहली से आगे निकलने के लिए उन्होंने बड़ी पारी खेलनी होगी।

मोहम्मद शमी और जैम्पा में टक्कर

वर्ल्ड कप 2023 में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाजों की बात करें तो इस मामले मोहम्मद शमी सबसे आगे हैं। शमी ने 6 मैचों में 23 विकेट चटकाए हैं। वह बात अलग है कि उन्हें पहले चार मैचों में बाहर रखा गया था। दूसरे नंबर पर ऑस्ट्रेलिया के स्टार स्पिनर एडम जैम्पा हैं, जिन्होंने 10 मैचों में 22 विकेट लिए हैं। इन दोनों के बीच फाइनल में टक्कर देखने को मिल सकती है। तीसरे नंबर दिलशान मदुशंका 21 विकेट और चौथे नंबर पर कोइत्जे 20 विकेट हैं। इन दोनों की टीम ही टूर्नामेंट से बाहर हो चुकी है। जबकि पांचवे नंबर पर जसप्रीत बुमराह हैं, जिन्होंने 10 मैचों में 18 विकेट चटकाए हैं। बुमराह का दिन रहा तो वह भी इस होड़ में आगे निकल सकते हैं।

धौलाधार एक्यूरेसी पैराग्लाइडिंग प्री वर्ल्ड कप : नेपाल के अमन थापा बने ओवरऑल विजेता

एजेंसी

धर्मशाला। धर्मशाला के नरवाना कस्बा में पहली बार आयोजित धौलाधार एक्यूरेसी पैराग्लाइडिंग प्री वर्ल्ड कप में नेपाल के पॉयलट अमन थापा विजेता बने हैं। प्रतियोगिता की ओवरआल ट्रॉफी अमन थापा ने अपने नाम की है जबकि दूसरे स्थान पर भारत के अक्षय कुमार और तीसरे स्थान पर सुशांत ठाकुर ने बाजी मारी है। वहीं महिला वर्ग में तरन्नुम ठाकुर विजेता बनी है। जबकि स्वप्ना कुमारी उपविजेता तथा विदेशी पॉयलट पॉलिन परिच तीसरे स्थान पर रही। इसी तरह भारतीय वर्ग में अक्षय कुमार पहले, सुशांत ठाकुर दूसरे और योग राज तीसरे स्थान पर रहे।

इसके अलावा टीम वर्ग में आकाश एडवेंचर की टीम विजेता बनी। जबकि एन्टी ग्रेविटी के टीम दूसरे तथा आकाश एडवेंचर एक की टीम तीसरे स्थान पर रही।

उधर विजेताओं को स्थानीय विधायक सुधीर शर्मा ने पुरस्कार दिए।

विजेताओं में ओवरऑल वर्ग में

अमन थापा को डेढ़ लाख, द्वितीय विजेता अक्षय कुमार को एक लाख जबकि तीसरे विजेता को 75 हजार की राशि पुरस्कार के रूप में दी गई।

इसके अलावा भारतीय वर्ग में विजेता अक्षय कुमार को 50 हजार, सुशांत ठाकुर को 30 हजार तथा योग राज को 20 हजार की राशि दी गई।

वहीं महिला वर्ग में विजेता तरन्नुम ठाकुर को 50 हजार, उप विजेता स्वप्ना कुमारी को 30 हजार तथा पॉलिन परिच को 20 हजार की राशि बतौर विजेता दी गई। इसी तरह टीम वर्ग में विजेता टीम को 50 हजार, उपविजेता को 30 हजार तथा तीसरे स्थान पर रही टीम को 20 हजार की राशि दी गई।

स्थानीय विधायक सुधीर शर्मा ने कहा कि नरवाणा कस्बा में पैराग्लाइडिंग के लिये अधिक बेहतर सुविधाओं को सृजित किया जायेगा तथा ट्रेनिंग संस्थान भी खोला जाएगा ताकि युवाओं को पैराग्लाइडिंग के प्रति प्रेरित किया जा सके और ज्यादा से ज्यादा युवा रोजगार प्राप्त कर सकें। सुधीर शर्मा ने कहा कि धर्मशाला की खूबसूरत वादियां एवं यहां की आबोहवा देश-विदेश से सैलानियों को वर्षभर आकर्षित करती रही हैं।

किकबॉक्सिंग वर्ल्ड चैंपियनशिप में दम दिखायेंगे हिमाचल प्रदेश के अखिल

बिलासपुर। हिमाचल के अखिल ठाकुर पुर्तगाल में होने वाली आगामी वर्ल्ड किकबॉक्सिंग चैंपियनशिप 2023 में भारतीय किकबॉक्सिंग टीम का प्रतिनिधित्व करेंगे जो कि 17-27 नवंबर तक पुर्तगाल में होगी।। इस प्रतिष्ठित चैंपियनशिप के लिए भारतीय टीम में अखिल ठाकुर हिमाचल प्रदेश के एक मात्र खिलाड़ी हैं।

इस चैंपियनशिप में हिमाचल प्रदेश जिला बिलासपुर के देलग गाँव का निवासी अखिल ठाकुर 89 किलो भार वर्ग किक लाइट व लाइट कांटैक्ट इवेंट में चुनौती पेश करेंगे। जिसमें कुल 83 देश के कुल दो हजार से ज्यादा खिलाडी भाग लेने वाले हैं।

इस सर पर हिमाचल प्रदेश किकबॉक्सिंग संघ के अध्यक्ष व भारतीय किकबॉक्सिंग संग के महासचिव परशुराम अवार्डी डाक्टर संजय कुमार यादव ने अखिल ठाकुर को भारतीय टीम में चयन होने पर बधाई दी।

अखिल ठाकुर इससे पहले एशियन चैंपियनशिप थाइलैंड बैंकॉक में भारत देश के लिए कांस्य पदक जीत चुके है और राष्ट्रीय स्तर पर 3 स्वर्ण व 2 रजत पदक जीत चुके है।

खबर एक नजर में

क्विंटन डीकॉक ने लिया एकदिवसीय क्रिकेट से संन्यास

नयी दिल्ली। दक्षिण अफ्रीका के सलामी बल्लेबाज क्विंटन डी कॉक ने पूर्व घोषणा के अनुसार एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट ले लिया है। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ खेले गये विश्वकप के दूसरे सेमीफाइनल में मिली हार के बाद डीकॉक ने संन्यास लिया है, उन्होंने इसकी घोषणा पहले ही कर दी थी कि भारत में इस प्रारुप में उनके अभियान का आखिरी प्रदर्शन होगा।

क्रिकेट विश्वकप के फाइनल में इजरायल भारत के संबंधों को प्रदर्शित करने वाली जर्सी पर मिलेगा पुरस्कार

नयी दिल्ली। इजरायल क्रिकेट विश्वकप में भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच खेले जाने वाले फाइनल मुकाबले में दोनों देशों के संबंधों को जर्सीआर्ट के जरिए बेहतरीन तरीके से प्रदर्शित करने वाले 15 लोगों को पुरस्कृत करेंगा। भारत में इजरायल के राजदूत नोर गिलोन ने शुक्रवार को सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा, क्रिकेट विश्वकप 23 फाइनल - भारत बनाम ऑस्ट्रेलिया यहाँ हो रहा है और हम सभी टीम इंडिया के लिए तैयार हैं।

क्रिकेट विश्वकप फाइनल में विजेता टीम को मिलेंगे 40 लाख डॉलर की राशि

नयी दिल्ली। आईसीसी पुरुष क्रिकेट विश्व कप 2023 की विजेता टीम को 40 लाख और उपविजेता टीम को 20 लाख अमेरिकी डॉलर की राशि पुरस्कर स्वरूप मिलेगी। वहीं प्रत्येक ग्रुप चरण की जीत के लिए 40 हजार डॉलर निर्धारित की गयी है। भारत और ऑस्ट्रेलिया दोनों टीमें फाइनल मैच गुजरात के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में खेलेंगी। दोनों के बीच ग्रुप चरण में एक बार मुकाबला हुआ जिसमें भारत ने जीत दर्ज की है। भारत ने अपने सभी नौ मैच जीतकर अधिकतम 18 अंकों के साथ शीर्ष स्थान पर रहा है। ग्रुप स्टेज में भारत का नेट रन रेट 2.570 सबसे बेहतर रहा है।

अहमदाबाद में आईसीसी बोर्ड बैठक में श्रीलंका बोर्ड के निलंबन मसले पर होगी चर्चा

नयी दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) बोर्ड की अहमदाबाद में होने वाली बैठक में श्रीलंका क्रिकेट बोर्ड के निलंबन सहित विभन्न मसलों पर चर्चा की जायेगी। एकदिवसीय विश्व कप फाइनल के दो दिन बाद आगामी मंगलवार को होने वाली आईसीसी बोर्ड बैठक से पहले विभिन्न समितियों के साथ त्रैमासिक बैठकें शनिवार से शुरू होगी। बैठक में 2024-27 के आयोजन के लिए राजस्व वितरण और 2028 में लॉस एंजिल्स ओलंपिक में क्रिकेट को शामिल लेकर चर्चा होगी।

फीफा विश्वकप क्वालीफायर में कोलंबिया ने ब्राजील को हराया

बैरेंक्विला। लिवरपूल के फारवर्ड लुइस डियाज के दूसरे हाफ में किए गए दो गोल की मदद से कोलंबिया ने ब्राजील को 2-1 से हरा दिया। गुरुवार को यहां एस्टाडियो मेट्रोपोलिटानो स्टेडियम में खेले गये फीफा विश्व कप क्वालीफायर मुकाबले के चौथे मिनट में गैब्रियल मार्टिनेली ने विनीसियस जूनियर के साथ मिलकर ब्राजील को बढ़त दिलाई।

ब्रजभूषण को उम्मीद, कुश्ती संघ के चुनाव में रोक हटेगी

गोण्डा। उत्तर प्रदेश में गोण्डा जिले के कैसरगंज के भाजपा सांसद और भारतीय कुश्ती संघ के निवर्तमान अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह ने उम्मीद जताई है कि कुश्ती संघ के चुनाव में उच्चतम न्यायालय और चंडीगढ़ हाईकोर्ट द्वारा लगायी गयी रोक हटेगी। श्रीरघुकुल विद्यापीठ के प्रांगण में शुक्रवार को आयोजित 16वें प्रतिभा सम्मान समारोह के समापन कार्यक्रम में भाग लेने आये सिंह ने पत्रकारों से बातचीत में दावा किया कि न्यायालयों द्वारा कुश्ती संघ पर रोक हटाने के बाद यदि यथावत चुनाव प्रक्रिया बहाल हुई तो मतदान के पश्चात उनके समर्थित उम्मीदवार संजय सिंह ही चुनाव में विजयी होंगे। कुश्ती की बदहाली के लिये उन्होने पहलवानों के धरने को जिम्मेदार ठहराते हुये कहा कि फिर भी उन्हें पूर्ण विश्वास है कि जिस प्रकार संघ के नेतृत्व में बेहतरीन पहलवानों को तैयार किया गया है। भारत को कुश्ती में मेडल अवश्य हासिल होगा। भाजपा सांसद ने कहा कि वे पूर्व में ही संसद में कुश्ती खेल को राष्ट्रीय खेल घोषित करने का प्रस्ताव दे चुके है। उन्होंने राष्ट्रीय खेल के सवाल पर सीधा जवाब देते हुये स्पष्ट किया कि अभी तक भारत में किसी भी खेल को राष्ट्रीय खेल का दर्जा प्राप्त नहीं है। सांसद ने कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी द्वारा चुनावी रैलियों में उनके नाम लिये जाने के सवाल पर कहा कि संभवतः कांग्रेस नेत्री को उनके मामले की सही जानकारी नहीं दी गयी। इसी कारण वे अनजाने में जंतर मंतर भी पहुंच गयी थी।

मणिपुर, महाराष्ट्र और तमिलनाडु सीनियर हॉकी राष्ट्रीय चैम्पियनशिप में जीते

नयी दिल्ली। मणिपुर, महाराष्ट्र और तमिलनाडु ने शुक्रवार को यहां पुरुष हॉकी राष्ट्रीय चैम्पियनशिप के शुरूआती दिन जीत हासिल की। मणिपुर ने पूल ई में हॉकी मध्यप्रदेश पर 7-2 की जीत से अभियान शुरू किया।

खूंटा बांध छठ घाट पर कृषि मंत्री बादल ने किया पौधरोपण

दुमका। लोक आस्था के महापर्व छठ पूजा के अवसर पर शुक्रवार को खूंटा बाँध छठ पूजा समिति ने छठ घाट पर पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस अवसर पर सूबे के कृषि मंत्री बादल पत्रलेख ने खूंटा बाँध तालाब के किनारे फलदार पौधे का रोपण कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। वृक्षारोपण कार्यक्रम के तहत नारियल एवं केला का दर्जनों पौधे लगाए गए। मंत्री ने तालाब में बने नवनिर्मित सूर्य मंदिर का भी दर्शन किया। कृषि मंत्री बादल ने समिति के वृक्षारोपण कार्यक्रम के पहल की सराहना की। उन्होंने समिति द्वारा तालाब के सौंदर्यीकरण और पार्क निर्माण की मांग पर भी पहल करने की बात कही। मंत्री बादल ने कहा कि छठ आस्था का महापर्व है। इस महापर्व पर भगवान सूर्य और प्रकृति की उपासना की जाती है। छठ में लोगों की संयमता, स्वच्छता और संकल्प दिखता है।

जेपी नड्डा के 'भटक रहे सीएम नीतीश' बयान पर बिहार में बवाल

जदयू में तीखी प्रतिक्रिया विजय चौधरी ने कहा, नीतीश जी की सोच और जुबान किसी से प्रभावित नहीं होती

खबर मन्त्र संवाददाता

पटना। मंच पर चुनावी चर्चा के दौरान भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने सीएम नीतीश कुमार पर बड़ा हमला बोला है। जेपी नड्डा ने कहा है कि जब तक नीतीश बीजेपी के साथ रहे, तब तक ठीक-ठाक रहे, लेकिन जब संगत बिगड़ जाती है तो जुबान भी बिगड़ जाती है। जब लोग राह भटक जाते हैं तो राजनीति में भटकना ही पड़ता है। जेपी नड्डा के बयान पर बिहार में सियासी बवाल बढ़ गया है और जदयू ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की है। जेपी नड्डा के बयान पर सीएम नीतीश के करीबी जदयू नेता और बिहार सरकार में मंत्री विजय चौधरी ने कहा, जेपी नड्डा ने ऐसा क्यूं कहा नड्डा जी ही जानेंग। नीतीश जी की सोच और जुबान किसी साथी से प्रभावित नहीं होती। बीजेपी के साथ इतने लंबे समय तक रहने के बाबजूद नीतीश कुमार बीजेपी की नीतियों से प्रभावित नहीं हुए। सीएम नीतीश किसी गठबंधन में रहें या न रहें, उनकी सोच और नीतियां मौलिक हैं, किसी से प्रभावित नहीं होती। विजय चौधरी ने कहा, बिहार में लगातार नीतीश कुमार के नेतृत्व में विकास हुआ है और बीजेपी के लोग उससे विचलित हैं। जातीय गणना और आरक्षण की सीमा बढ़ाने की बात हो, यह सब एतिहासिक उपलब्धियां हैं।

यह भी उन्हें बेचैन कर रहा है। केंद्र सरकार के द्वारा दलितों पिछड़ों की हकमारी की षड्यंत्र की जा रही है। दूसरी ओर बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के बयान पर बयान पर जदयू और भाजपा आमने सामने आ गई है। इसको लेकर जदयू प्रवक्ता अजय आलोक ने भी निशाना साधा है। बिहार के वित्त मंत्री विजय चौधरी के यह कहने पर कि नीतीश कुमार की सोच, जुबान और बयान किसी साथी से प्रभावित नहीं होती, इस पर बीजेपी के राष्ट्रीय प्रवक्ता अजय आलोक ने पलटवार किया है। अजय आलोक ने कहा, जुबान पर लगाम नहीं है, सोच खत्म हो चुकी है, डिमेंशिया में जा चुके हैं। विजय चौधरी जी ने सही कहा है- न जुबान बची है, न सोच बची है। सब लॉस्ट केस है।

सरकार आपके द्वार कार्यक्रम को लेकर बैठक

सिमरिया। प्रखंड सभागार कक्ष में शुक्रवार को आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम को लेकर एक बैठक हुई। बैठक की अध्यक्षता बीडीओ नीतू सिंह ने की। बैठक में प्रमुख रोहन, उपप्रमुख दामोदर गोप, मुखिया, पंचायत सेवक, रोजगार सेवक सहित अन्य विभाग के लोग उपस्थित हुए। बैठक में विभिन्न योजनाओं पर चर्चा किया गया। साथ संचालित योजनाओं की समीक्षा की गयी। बैठक में सरकार आपके द्वारा कार्यक्रम को सफल बनाने का निर्णय लिया गया। बीडीओ ने बताया कि यह कार्यक्रम 24 नवंबर से लेकर 23 दिसंबर तक चलेगा। यह कार्यक्रम लगातार पंचायत वार होगा। बीडीओ ने संबंधित वरीय पदाधिकारी को कार्यक्रम में उपस्थित रहने का निर्देश दिया है। शिक्षा विभाग, बालविकास परियोजना, कृषि विभाग सहित अन्य विभाग के लोगो को स्टॉल लगाने का निर्देश दिया है।

एक नजर में

जीएन कॉन्वेंट में मनायी गयी भगवान बिरसा मुंडा की जयंती

गढ़वा। शहर के ज्ञान निकेतन कन्वेंट +2 स्कूल में भगवान बिरसा मुंडा जयंती एवं राज्य स्थापना दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत विद्यालय के निदेशक मदन प्रसाद केशरी, सचिव सुषमा केशरी तथा उप-प्राचार्य बसंत ठाकुर ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित एवं भगवान बिरसा मुंडा की तस्वीर पर माल्यार्पण कर किया। इस दौरान भाषण प्रतियोगिता, निबां प्रतियोगिता, क्वीज एवं चित्र-कला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें बच्चों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। चयनित छात्र-छात्राओं को मेडल एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। मौके पर निदेशक श्री केशरी ने धरती आबा बिरसा मुंडा की जयंती व राज्य स्थापना दिवस की बधाई देते हुए कहा कि भगवान बिरसा मुंडा झारखण्ड के अमर वीर शहीदों एवं आंदोलनकारियों में अग्रणी थे। उनके संघर्ष एवं शहादत को चिरकाल तक याद किया जाता रहेगा। उन्होंने आदिवासियों का अंग्रेजों द्वारा किए जा रहे शोषण के खिलाफ अपने जीवन का बलिदान कर दिया। उसी का परिणाम है कि वे आज भी एक निर्विवाद नेता के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने अपने कुशल संचालन एवं नेतृत्व के बल पर भूमिगत आंदोलन चलाकर अत्याचारी अंग्रेजों के दांत खट्टे कर दिए। निबंध प्रतियोगिता में आर्या चौबे, नागेन्द्र कुमार, रोशन दुबे, भाषण प्रतियोगिता में आदित्य प्रकाश, आर्या पांडेय, भाष्कर तिवारी, क्वीज प्रतियोगिता में ग्रुप-3, ग्रुप- 4, ग्रुप- 2 ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया। मौके पर शिक्षक उदय प्रकाश, संजीव कुमार, खुर्शीद आलम, मुकेश कुमार भारती, बिरेन्द्र गुप्ता, सुनीता कुमारी, सुषमा तिवारी, सरिता दूबे, रिजवाना शाहीन, निलम कुमारी, संतोष प्रसाद आदि लोग उपस्थित थे।

लोक आस्था का महापर्व छठ नहाय खाय के साथ प्रारंभ, आज खरना

खबर मन्त्र संवाददाता

पाकुड़। भगवान भास्कर की महा पूजा लोक आस्था का महापर्व छठ कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि 17 नवंबर को नहाए खाए के साथ प्रारंभ हो गया है। चार दिनों तक चलने वाला यह पर्व 36 घंटे के कठिन नियमों का पालन करते हुए किया जाता है। नहाए खाए का तात्पर्य है कि इस दिन छठवर्ती अपने पास की गंगा पर डुबकी लगाते हैं एवं शुद्ध सात्विक घी के बने कद्दू की सब्जी चने की दाल अरवा चावल के भात मिट्टी के चूल्हे में लकड़ी से बनाया जाता है और शुद्धता के साथ भोजन किया जाता है। घरों में प्याज लहसुन बंद कर दिए जाते हैं। नहाए खाए 17 नवंबर को सूर्योदय काल 6:45 से सूर्यास्त के पूर्व 5:27 बजे तक किया गया। दूसरे दिन 18 नवंबर को खरना का पर्व मनाया जाता हे। इस दिन सूर्योदय के समय 6:45 पर एवं सूर्यास्त का समय 5:26 पर होगा। हालांकि हर स्थान पर सूर्योदय का समय अलग-अलग होते हैं। छठवर्ती दिन भर उपवास रहते हैं ।रात में खीर पुरी चने की दाल आदि बनाए जाते हैं एवं प्रसाद स्वरूप ग्रहण किया जाता है। इस दिन नमक का प्रयोग वर्जित रहता है। तीसरे षष्ठी तिथि ,दिन 19 नवंबर को छठवर्ती अपने नजदीकी नदी तालाब आदि घाटों में अपनी छठ की डाला सजाए हुए जाते हैं। सूप में फल, ठेकुआ, अरवा चावल के लड्डु,नारियल,ईख रखे जाते हैं। उस पर शुद्ध घी के दीए जलाए जाते हैं एवं सूप को पश्चिम दिशा की ओर मुंह घुमा कर के रखते हैं। डूबते हुए सूरज की पूजा अर्चना करते हैं। छठवर्ती पश्चिम दिशा की ओर नदी तालाब गंगा में कमर भर जल में उतरते हैं एवं डूबते हुए सूर्य की अर्ध्य देते हैं। 19 नवंबर को सूर्यास्त के समय 5:26 है। पूजन के पश्चात छठवर्ती पुनः घर आते हैं। फिर अपना प्रसाद बनाने में जुट जाते हैं। रात में ठेकुआ कचौनिया आदि बनाए जाते हैं। चौथे दिन अर्थात 20 नवंबर सप्तमी तिथि को छठ वर्ती अती प्रातः काल उठकर स्नान ध्यान होकर नए वस्त्र धारण करती हैं एवं प्रथम दिन के चढ़ाए हुए प्रसाद को सुप से हटती हैं, एवं उसे बदलकर नए प्रसाद कमला नींबू, नारियल केला अंगूर कचौनिया सूप में सजाकर पुनः अपने घाट में जाती हैं। घाटों पर दीप प्रज्वलित करती हैं। अपनी सूप को पूर्व दिशा की ओर रख कर भगवान भास्कर की पूजा अर्चना करती हैं। एवं आराध्य देव भगवान भास्कर उदय होने की प्रतीक्षा करती हैं। कमर भर पानी में जाकर प्रसाद सहित अपनी सूप को पूर्व मुख होकर भगवान भास्कर की पूजा करती हैं। सभी लोग सूर्य देव को अर्घ्य देते हैं। 20 नवंबर को चौथे दिन सूर्योदय सुबह में 6:45 में उदय होगा। उदित भगवान भास्कर को पूजन के साथ ही चार दिनों से चला रहा आस्था का महापर्व छठ का संपन्न होगा। लोक प्रसाद का भोग लगाएंगे एवं अपना व्रत तोड़ेंगे।

खूटाबांध छठ पूजा समिति की तैयारी अंतिम चरण में

दुमका। खूटाबांध छठ पूजा समिति की तैयारी अंतिम चरण में है। हर बार की तरह छठ ब्रतियों की सुविधा के लिए कई तरह की व्यवस्थाएं की जा रही है। समिति की ओर से तालाब और रास्तों की साफ सफाई का काम अंतिम चरण पर है। वही घाट की सफाई पूरी हो चुकी है। लाईट लगाई जा रही है एवं पंडाल भव्य रूप से बनाया जा रहा है। पूजा में आकर्षण का केंद्र घाटों की सजावट, बंगाल आसनसोल के कलाकारों के द्वारा रात्रि एवं आतिशबाजी होगा। सभी घाटों में छठ व्रतियों की सुविधा का पूरा ध्यान रखा गया है। पोखरा के चारो ओर बांस का बेरोगेटिंग लगाया गया है।

बड़ा बांध तालाब की तैयारी अंतिम चरण पर

दुमका। बड़ा बांध छठ पूजा समिति इस साल कुछ अलग दिखने को मिलने वाला है। बड़ा बांध छठ पूजा समिति का कुल बजट 21 लाख रूपए है। समिति के द्वारा छठ घाट की सफाई अंतिम चरण में है। घाट के चारो ओर पंडाल बनाया जा रहा है। पोखर में फब्बारा लगाया जा रहा है। सचिव राम मंडल ने कहा कि पोखरा चौक से लेकर विवेकानंद चौक, फल मार्केट, सब्जी मार्केट, शिवपहाड़ चौक एवं कुमारपाड़ा चौक तक गेट एवं लाईटिंग का काम किया जा रहा है।

दुमका में नहाय-खाय के साथ छठ महापर्व शुरू

खबर मन्त्र संवाददाता

दुमका। नहाय-खाय के साथ चार दिवसीय सूयोर्पासना का महापर्व छठ शुक्रवार से शुरू हो गया है। नहाय-खाय के दिन कद्दू की प्रमुखता होती है। इस कारण छठ व्रती महिलाएं कद्दू की सब्जी के साथ अरवा चावल की भात और चने के दाल के साथ विविध भोजना बनाती हैं और उसे भगवान सूर्य को अर्पित कर प्रसाद के रूप में ग्रहण करती हैं। नहाय-खाय के दिन भोजन बनाने में साधारण नमक की जगह सेंधा नमक का उपयोग किया जाता है। नहाय-खाय के दिन से घरों की सफाई पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इस पर्व में स्वच्छता और पवित्रता का विशेष महत्त्व है। इसमें कई कठिन नियमों का पालन करना पड़ता है। इस पर्व की महत्ता इसलिए भी है कि इस पर्व में परिवार के सभी सदस्यों की खुशहाली और प्रगति की कामना की जाती है।

छठ पूजा के सामानों की खरीदारी शुरू

दुमका। छठ पूजा को लेकर बाजारों में पूजा के सामनों की खदीदारी शुरू हो गई है। इस वर्ष भी पूजन सामग्रियों की बिक्री यज्ञ मैदान से हो रही है। शुक्रवार को यज्ञ मैदान में लगे पूजन सामग्रियों की दुकानों में लोगों की भीड़ काफी कम दिखी। इससे व्यवसायी काफी चिंतित है। वर्षो से टीन बाजार में ही पूजन सामग्रियों की दुकाने सजा करती थी। पर कई वर्षों से फलों की दुकान यज्ञ मैदान में लगाया जा रहा है। इस वर्ष पूजा समानों की दुकान दुमका के टीन बाजार, वीर कुंवर सिंह चौक, बस स्टैंड, यज्ञ मैदान सहित अन्य जगहों पर लगया गया है। दुमका में कई फलों के अस्थाई दुकान लगाया गया है।

रंका के दो दर्जन से अधिक लोगों ने थामा झामुमो का दामन

गढ़वा। जिले के रंका प्रखंड अंतर्गत सिरोई खुर्द के दो दर्जन से अधिक लोगों ने झारखंड मुक्ति मोर्चा का दामन थामा। गुरुवार को गढ़वा विधायक झारखंड सरकार के पेयजल एवं स्वच्छता मंत्री मिथिलेश कुमार ठाकुर के आवास पर सभी ने झामुमो की सदस्यता ग्रहण की। मंत्री श्री ठाकुर ने सभी को माला व पार्टी का पट्टा पहना कर एवं मिठाई खिलाकर पार्टी में शामिल कराया। सभी ने मंत्री श्री ठाकुर के कार्यों से प्रभावित होकर माटी के पार्टी झारखंड मुक्ति मोर्चा का दामन थामा। मौके पर मंत्री श्री ठाकुर ने कहा कि कहीं भी अच्छे कार्य करने वालों की ही पूछ होती है। गढ़वा के सभी लोग काफी अच्छे हैं। यहां के लोगों में काम करने एवं ठगने वालों की अच्छी परख है। आज यही कारण है कि काफी संख्या में लोग दूसरे दलों को छोड़कर झामुमो में शामिल हो रहे हैं। मंत्री ने कहा कि जिस तरह से लोगों का रुझान झारखंड मुक्ति मोर्चा की ओर है, आने वाले समय में दूसरे दलों को कार्यक्रम करने के लिए भी लोग नहीं मिलेंगे। पार्टी में शामिल होने वाले लोगों ने कहा कि वे लोग मंत्री श्री ठाकुर एवं झारखंड की हेमंत सरकार के कार्यों से पूरी तरह प्रभावित हैं। यही कारण है कि आज बड़ी संख्या में लोग पार्टी में शामिल हो रहे हैं। आज तक झारखंड में जो काम नहीं हो सका था, उससे ज्यादा बेहतर काम मंत्री श्री ठाकुर कर रहे हैं। पार्टी में शामिल होने वाले लोगों में मुख्य रूप से मृत्युंजय सिंह, शुभम मिश्रा, आशिष चौधरी मुकेश तांती, रविकान्त सिंह, अनिल ठाकुर, नन्दू राम, गजाार सिंह, कृष्णा राम, संजु राम, महेन्द्र सिंह, संतोष सिंह, आनन्द सिंह, शशिकान्त सिंह, सुदामा राम आदि का नाम शामिल है। मौके पर मुख्य रूप से झामुमो जिला अध्यक्ष तनवीर आलम, सचिव मनोज ठाकुर, फुजैल अहमद, अनिता दत्त आदि लोग उपस्थित थे।

मंत्री से मिले कन्या विवाह एंड विकास सोसाइटी के सचिव

गढ़वा। कन्या विवाह एंड विकास सोसायटी के सचिव विकास कुमार माली ने गढ़वा विधायक झारखंड सरकार के पेयजल एवं स्वच्छता मंत्री मिथिलेश कुमार ठाकुर के आवास पर पहुंचकर उनसे मुलाकात की। साथ ही सचिव ने मंत्री को 101 कन्या का सामूहिक विवाह में शामिल होने के लिए आमंत्रण दिया। सचिव ने कहा कि मंत्री ने मुझे आस्वस्थ किया है कि होने वाले सामूहिक विवाह कार्यक्रम में किसी भी प्रकार की परेशानी नहीं होगी। सामूहिक विवाह में हर संभव मदद किया जाएगा। साथ ही सामूहिक विवाह कार्यक्रम में मुख्य रूप से उपस्थित भी रहेंगे। मंत्री ने 101 कन्याओं का सामूहिक विवाह में शामिल वर एवं वू का डाटा का भी जांच किया। मौके पर डा. यासीन अंसारी, मौलाना हुमर नूरानी, आसिफ खान, विभूति पांडेय, रमजान हाशमी आदि उपस्थित थे।

बंदोबस्त के पेशकार शमीम अख्तर अंसारी के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज

दुमका। सहायक बन्दोबस्त पदाधिकारी ने अभिलेख के साथ छेड़छाड़ करने के मामले में बन्दोबस्त विभाग के पूर्व पेशकार शमीम अख्तर अंसारी के प्राथमिकी दर्ज कराया है। सहायक बन्दोबस्त पदाधिकारी महेंद्र मांझी ने नगर थाना को एक लिखित शिकायत दर्ज कराया है कि दुमका के तत्कालीन मोहर्रिर शमीम अख्तर अंसारी ने एक ही केस को दो बार अंकित कर उसे अलग अलग बनाकर उसे न्यायालय में चलाकर अलग-अलग आदेश पारित कराने के मनसूबे से कोर्ट में संचालित कराया जा रहा था। जिसमें केस में अलग अलग आदेश होने की संभावना बनी रहती और उसी के मद्देनजर सहायक बन्दोबस्त पदाधिकारी ने मामला दर्ज कराया।

छाबड़िया इंजीनियरिंग पत्थर कंपनी के कर्मचारी की रॉड से मारकर हत्या, रसोइया गिरफ्तार

खबर मन्त्र संवाददाता

पाकुड़। नगर थाना क्षेत्र के सिंधिपाड़ा में शुक्रवार को छाबड़िया इंजीनियरिंग कंपनी के एक कर्मचारी की लोहे की रॉड मारकर हत्या कर देने का मामला प्रकाश में आया है। कर्मचारी का शव घर में ही पड़ा मिला है। वहीं घटना की सूचना मिलते ही एसडीपीओ अजित कुमार विमल, नगर थाना एसआई संतोष कुमार दलबल के साथ घटना स्थल पहुँचकर कार्रवाई करते हुए, खून से सना हुआ शब को बरामद कर मामले में गहनता से पूछताछ करने के बाद घर के रसोईया को गिरफ्तार कर लिया है। जानकारी के मुताबित छाबाड़िया इंजीनियरिंग कंपनी एक पत्थर कंपनी है। मृतक कर्मी का नाम मोहन लालवानी उम्र 51 वर्ष उत्तर प्रदेश कानपुर का रहने वाला है। बताया जा रहा है की जो पत्थर कारोबारी नरेश मध्यान के ऑफिस में कार्यरत था। उधर एसडीपीओ के नेतृत्व में फोरेंसिक टीम द्वारा कंपनी के पार्क की तलाशी ली जहां खून से सना हुआ एक प्लास्टिक का थैला बरामद किया। हत्या की सक और गहरी हुई कंपनी के स्टाफ के रूम व कंपनी के रसोइया मोती मंडल के रूम की तलाशी ली गई, जहां मोती मंडल के कपड़े खून से सना हुए पाए गया, और बिस्तर पर भी खून लगा हुआ मिला। इसके बाद पुलिस ने रसोईया मोती मंडल को गिरफ्तार कर थाना ले गई। जहां मोती मंडल ने अपना जुर्म कबूल लिया और जिस हथियार से मोहनदास ललवानी को मारा था, उसकी भी जानकारी पुलिस को दी। पुलिस के द्वारा हथियार बरामद कर लिया है। इस संबंध में पुलिस अधीक्षक एचपी जनार्दन ने बताया की हत्यारा मोती मंडल ने अपना जुर्म कबूल लिया है ।कानूनी कार्रवाई पूरी करते हुए हत्यारे को न्यायिक हिरासत में भेजा जाएगा। एसडीपीओ अजीत कुमार विमल नेतृत्व में टीम के साथ फॉरेंसिक टीम के पदाधिकारी, नगर थाना के एसआई संतोष कुमार, एसआई शुभम कुमार और नगर पुलिस बल शामिल थे।

अवैध बालू लदे ट्रैक्टर की टक्कर से चार वर्षीया बच्ची की मौत

दुमका। इन दिनों जिले के रामगढ़ के बासलोई नदी से दिन-रात सैकड़ों ट्रेक्टर से अवैध बालू की ढुलाई जारी है ।चालक द्वारा लापरवाही से बालू ढुलाई करने के कारण आये दिन लोगों की मौतें हो रही है। जिसे देखने वाला कोई नहीं है। वहीं शुक्रवार को कारुडीह पंचायत के बासलोई नदी से अबैध बालू उठाव कर आ रहे लाल रंग का ट्रेक्टर कारुडीह पंचायत के डमरथरी गांव के पास सड़क पार कर रही चार बर्षिय पहाडिया बच्ची को टक्कर मारी दी। जिससे घटना स्थल पर ही बच्ची की मौत हो गया।आक्रोशित ग्रामीणों ने ट्रेक्टर समेत चालक की जमकर पिटाई कर दिया। मृतक बच्ची का नाम शिवानी कुमारी है। उसके नानी का नाम ललिता देहरीन है।

केंद्रीय मंत्री अश्विनी चौबे ने केंद्र सरकार की योजनाओं को जनता के समक्ष रखा

खबर मन्त्र संवाददाता

गोड्डा। आज केंद्रीय मंत्री ने गोड्डा जिले के सुंदर पहाड़ी क्षेत्र में विकसित भारत संकल्प यात्रा' सुंदरपहाड़ी, प्रखंड के पहाड़पुर पंचायत में पहुंची। यहां केंद्र सरकार की योजनाओं की जानकारी देते हुए सुयोग्य लाभुकों को विभिन्न योजनाओं से लाभान्वित कराया गया। बतौर मुख्य अतिथि माननीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय एवं उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण राज्य मंत्री श्री अश्विनी कुमार चौबे इसमें शामिल हुए। कार्यक्रम की शुरूआत मुख्य अतिथियों सहित जिला स्तरीय पदाधिकारियों के द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। इस मौके पर मंत्री अश्विनी कुमार चौबे ने लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि 15 नवंबर 2023 को बिरसा मुण्डा की जयंती पर देश के माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विकसित भारत भारत संकल्प यात्रा का शुभारंभ रांची के खूंटी से किया गया है। बिरसा मुण्डा आजादी के नायक थे। देश की आजादी में उन्होंने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। मंत्री महोदय ने कहा कि जनजनताति गौरव दिवस के अवसर पर बिरसा मुण्डा की स्वाधीनता को स्मरण कर आजादी के आन्दोलन में जनजातीय समाज के संघर्ष को याद किया गया है। उन्होंने कहा कि 'विकसित भारत संकल्प यात्रा' का उद्देश्य है कि गांव व शहरी क्षेत्र में निवास करने वाले हर पात्र व्यक्तियों को सरकार द्वारा संचालित योजनाओं से जोड़ा जाए जो व्यक्ति योजनाओं से लाभान्वित हुए हैं, उनके जीवन स्तर में किस तरह का सुधार हुआ। यह जानकारी उनके जुबानी से ही सुनी जाए. देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने यह संकल्प लिया है कि 2047 तक देश को विकसित राष्ट्र बनाया जाएगा। पीएम ने भारत को विकासशील नहीं, बल्कि भारत को विकसित देश बनाकर एक विकसित राष्ट्र के रूप में बनाना चाहते हैं। उन्होंने उपस्थित जन समूहों को विकसित राष्ट्र बनाने में योगदान देने की शपथ दिलाई। इस दौरान माननीय मंत्री ने प्रधानमंत्री आवास योजना, टेरा फिल्टर, आयुष्मान कार्ड, एलपीजी गैस कनेक्शन, निशुल्क खाद्य सामग्री, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, एनआरएलएम समूह की महिलाओं चेक, मनरेगा जॉबकार्ड का वितरण व वृद्धापेंशन प्रमाण-पत्र का वितरण किया। मंत्री महोदय के द्वारा जानकारी दी गई कि जनजातीय नायक बिरसा मुंडा की जयंती के दिन, जनजातीय गौरव दिवस के मौके पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा झारखंड के खूंटी जिले से 'विकसित भारत संकल्प यात्रा' को हरी झंडी दिखाई गई है। सरकार के प्रमुख कल्याणकारी कार्यक्रमों के संदेश प्रचारित करने वाली 5 विशेष रूप से डिजाइन की गई आईईसी (सूचना, शिक्षा और संचार) वैन खूंटी जिले और आसपास के क्षेत्रों में स्थित बड़ी आदिवासी आबादी वाली विभिन्न ग्राम पंचायतों से रवाना की गईं है। उक्त कार्यक्रम के दौरान लाभूकों से सीधा संवाद स्थापित कर सफलता की कहानी को उनके वाणी के माध्यम से लोगों के बीच सुनाया गया। मौके पर उपस्थित विधायक गोड्डा अमित मंडल के द्वारा 'विकसित भारत संकल्प यात्रा' के संबंध में जानकारी दी गई, साथ ही साथ उपस्थित लोगों को केंद्र सरकार की योजनाओं से अवगत कराया गया। मौके पर भूतपूर्व विधायक, महागामा अशोक भगत, अपर समाहर्ता, गोड्डा स्मिता टोप्पो, अनुमंडल पदाधिकारी, गोड्डा मेघनाथ उरांव, कार्यपालक दंडाधिकारी, गोड्डा जेसी विनीता केरकेट्टा, प्रखंड विकास पदाधिकारी, सुंदर पहाड़ी सहित जिला स्तरीय पदाधिकारी, सुंदर पहाड़ी प्रखंड के कर्मीगण एवं ग्रामीण उपस्थित थे।

पेज एक का शेष

चाईबासा के हाथीबेड़ा ...

गुमला के रहने वाले थे संतोष : आइइडी ब्लास्ट में शहीद संतोष उरांव झारखंड के गुमला जिले के रहने वाले थे। वह सीआरपीएफ 60 बटालियन में बम निरोधक दस्ता में कार्यरत थे। वहीं धमाके में घायल सीआरपीएफ 60 बटालियन के सेकंड इन कमान एजेतो तिने और कॉन्स्टेबल जयंता नाथ की स्थिति खतरे से बाहर है।

आइइडी क्लीन करने निकले थे जवान : जानकारी के अनुसार सीआरपीएफ अधिकारी एजेतो तिने अपने साथ बम निरोधक स्कॉड को लेकर चाईबासा के गोईलकेरा थाना क्षेत्र के हाथीबेड़ा जंगल में आईईडी क्लीन करने के लिए निकले थे। सूचना मिली थी कि इस इलाके में नक्सलियों के द्वारा बड़े पैमाने पर आइइडी जमीन के नीचे लगा कर रखा गया है। इस सूचना पर कार्रवाई करते हुए आइइडी निकालने का काम चल ही रहा था कि अचानक एक में ब्लास्ट हो गया। इस ब्लास्ट की वजह से मौके पर मौजूद बीडीडीएस टीम के संतोष उरांव को गंभीर चोटें आई जबकि दो अन्य भी इसमें घायल हो गये।

व्रतियों को कोई...

छठ पूजा की दी शुभकामनाएं : सीएम श्री सोरेन कहा, महापर्व छठ पूजा के प्रथम अनुष्ठान नहाय-खाय की सभी को हार्दिक शुभकामनाएं और जोहार। भगवान भास्कर और छठी मैया आप सभी छठव्रतियों की मनोकामना पूर्ण करें। सभी का जीवन सुख, शांति और समृद्धि से परिपूर्ण हो, यही कामना करता हूं।

हटनियां तालाब पर आते हैं राज्यपाल और सीएम : राज्यपाल और मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन छठ के मौके पर सपरिवार हटनियां तालाब आकर भगवान भास्कर को अर्घ्य देते हैं। ऐसे में प्रशासनिक दृष्टि से भी इस छठ घाट का खास महत्व है जहां हजारों श्रद्धालु एक साथ छठ मनाते हैं।

चीफ जस्टिस ने किया ...

महिला वार्ड को लेकर निर्देश : मुख्य न्यायाधीश ने जेल में औचक निरीक्षण के दौरान जेल के अंदर बने महिला और पुरुष वार्ड को भी कायदे से खंगाला। खासकर महिला वार्ड को लेकर कई निर्देश जेल प्रशासन को मुख्य न्यायाधीश के द्वारा दिये गये हैं। जेल अधीक्षक हामिद अख्तर ने बताया कि मुख्य न्यायाधीश की तरफ से यह बताया गया है कि वे जल्द ही निरीक्षण के दौरान जो कमियां पायी गयी हैं उन्हें लेकर एक गाइडलाइंस जेल प्रशासन को भेजेंगे। जेल की कमियों को दूर कर रिपोर्ट सब्मिट करनी होगी।

मेरा ही वीडियो ...

इसे मनोरंजन के लिए प्रयोग किया जाये तो अलग बात है। एआई या डीप फेक की समस्या ही यही है कि सच क्या है, यही समझना बहुत कठिन हो जाता है। इसलिए मैंने इस विषय में जागरुकता के लिए मीडिया से आगे आने और अपनी भूमिका निभाने को कहा है। ऐसे में यह डीप फेक भविष्य के लिए बड़ा संकट खड़ा कर सकता है।

स्पीड न्यूज

मशहूर कला इतिहासकार बीएन गोस्वामी का निधन

नयी दिल्ली। मशहूर कला इतिहासकार और लेखक बीएन गोस्वामी का शुक्रवार को चंडीगढ़ के स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (पीजीआईएमईआर) में निधन हो गया। उनकी आयु 90 वर्ष थी। पारिवारिक मित्र और रंगकर्मी नीलम मान सिंह ने बताया कि गोस्वामी के फेफड़ों में संक्रमण था। उन्होंने कहा कि यह कोई लंबे समय से चली आ रही बीमारी नहीं थी। उन्हें बस बीते एक माह से सांस लेने में परेशानी हो रही थी। गोस्वामी का जन्म 15 अगस्त, 1933 को हुआ था। पद्म श्री और पद्म भूषण पुरस्कार विजेता को पहाड़ी शैली की चित्रकला में उनके काम के लिए जाना जाता है।

स्वच्छता व सुरक्षा का मानक बने छठ : योगी

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने छठ महापर्व को स्वच्छता और सुरक्षा के मानक पर्व के रूप में आयोजित करने के लिए सभी आवश्यक प्रबंध करने के निर्देश दिए हैं। शुक्रवार को एक बैठक में मुख्यमंत्री ने कहा कि छठ महापर्व पर पूजा/अनुष्ठान के दौरान पूरे प्रदेश में स्वच्छता का माहौल हो, इसके लिए नगर विकास और पंचायती राज विभाग द्वारा विशेष प्रयास किये जायें।

बंगाल में टीएमसी के पंचायत प्रधान की हत्या

कोलकाता। पश्चिम बंगाल के उत्तरी 24 परगना जिले में एक भीड़भाड़ वाले बाजार में हमलावरों ने तृणमूल कांग्रेस के एक पंचायत प्रधान की हत्या कर दी। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस अधिकारी ने बताया कि गुरुवार शाम सात बजे कामदेवपुर हाट में जब अमडंगा के रूपचंद मंडल फोन पर किसी से बात कर रहे थे तो हमलावरों ने उन पर बम फेंका।

स्वास्थ्य बीमा के नाम पर ठगी, 14 गिरफ्तार

नोएडा । उत्तर प्रदेश के गौतमबुद्ध नगर जिले की थाना फेज-वन पुलिस ने स्वास्थ्य बीमा कराने के नाम पर अमेरिका के लोगों से ठगी करने वाले कॉल सेंटर का पर्दाफाश करते हुए 14 लोगों को गिरफ्तार किया है। थाना फेस-वन के प्रभारी निरीक्षक ध्रुव भूषण दुबे ने बताया कि गुरुवार रात पुलिस को सूचना मिली कि सेक्टर-दो में एक कॉल सेंटर है, जिसमें अमेरिका में रहने वाले लोगों का स्वास्थ्य बीमा कराने के नाम पर ठगी की जा रही थी।

नैनीताल : खाई में गिरा वाहन, आठ की मौत

नैनीताल। पतलोट से अमजड़ जाने वाले मोटरमार्ग पर छीड़ाखान के पास शुक्रवार सुबह एक बाइक को बचाने में पिकअप वाहन खाई में गिरने से आठ लोगों की मौत हो गई है। दुर्घटना में तीन अन्य लोग घायल हुए हैं। मृतकों में दो महिलाएं हैं। मृतकों में दंपति और बेटा भी हैं, जबकि उनका दूसरा बेटा अस्पताल में भर्ती है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने दुर्घटना पर शोक जताया है।

बदरीनाथ धाम के कपाट आज होंगे बंद

बदरीनाथ/जोशीमठ। श्री बदरीनाथ धाम के कपाट शनिवार शाम शीतकाल हेतु बंद हो जाएंगे। शुक्रवार पूर्वाह्न रावल ईश्वर प्रसाद नंबूदरी ने लक्ष्मी माता को श्री बदरीनाथ मंदिर गर्भ गृह में विराजमान होने के लिए आमंत्रण दिया तथा धर्माधिकारी राधाकृष्ण थपलियाल सहित वेदपाठी रविंद्र भट्ट तथा लक्ष्मी मंदिर के पुजारियों ने मां लक्ष्मी की पूजा की तथा कढ़ाई भोग चढ़ाया।

ओडिशा : सड़क दुर्घटना में तीन लोगों की मौत

भुवनेश्वर। ओडिशा के शहर भुवनेश्वर में अंगुल जिले के बरगापाली इलाके में गुरुवार देर रात एक तेज रफ्तार ट्रक की चपेट में आने से तीन लोगों की मौत हो गई और एक गंभीर रूप से घायल हो गया।

टाइम 100 जलवायु सूची में बंगा सहित आठ भारतीय

एजेंसी

न्यूयॉर्क। टाइम पत्रिका में भारतवंशियों का बजा डंका। टाइम पत्रिका की जलवायु के क्षेत्र में योगदान को लेकर दुनिया के 100 सबसे प्रभावशाली लोगों की सूची में आठ भारतीय और भारतीय मूल के नागरिक (पीआईओ) जगह बनाने में कामयाब रहे हैं। इनमें विश्व बैंक के अध्यक्ष अजय बंगा और ओला इलेक्ट्रिक के सह-संस्थापक भाविश अग्रवाल भी शामिल हैं। टाइम 100 जलवायु सूची में दुनियाभर के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ), संस्थापक, परोपकारी, संगीतकार, नीति निर्माता और सरकारी

▸▸ दुनिया के 100 सबसे प्रभावशाली लोगों में ओला इलेक्ट्रिक के संस्थापक भवेश अग्रवाल को भी मिली जगह

अधिकारी शामिल हैं। यह सूची संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में 30 नवंबर से शुरू हो रहे संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन से पहले जारी हुई है सूची में बंगा और अग्रवाल के अलावा, द रॉकफेलर फाउंडेशन के अध्यक्ष राजीव जे शाह, बोस्टन कॉमन एसेट मैनेजमेंट की संस्थापक और अध्यक्ष गीता अय्यर, अमेरिकी ऊर्जा विभाग ऋण कार्यक्रम कार्यालय के निदेशक जिगर शाह, हस्क पावर सिस्टम्स के सीईओ और सह-संस्थापक मनोज सिन्हा, कैसर परमानेंट के लिए पर्यावरण प्रबंधन की कार्यकारी निदेशक सीमा वाधवा और महिंद्रा लाइफस्पेसेज के प्रबंध निदेशक (एमडी) और सीईओ अमित कुमार सिन्हा भी शामिल हैं। टाइम ने कहा कि जून में विश्व बैंक के अध्यक्ष बने बंगा (64) संस्था के लिए जलवायु परिवर्तन से लड़ते हुए गरीबी उन्मूलन के एक नए मिशन की शुरूआत कर रहे हैं। बंगा ने मोरक्को में 2023 की विश्व बैंक समूह-आईएमएफ की वार्षिक बैठक में कहा था कि यदि आप सांस नहीं ले सकते और साफ पानी नहीं पी सकते, तो गरीबी मिटाने का कोई मतलब नहीं है।

लंदन में सिख किशोर की चाकू मारकर हत्या

लंदन। दक्षिण-पश्चिम लंदन में सड़क पर हुए एक झगड़े में एक सिख किशोर की चाकू मार कर हत्या कर दी गयी है। लंदन की मेट्रोपॉलिटन पुलिस ने शुक्रवार को बताया कि किशोर की पहचान सिमरजीत सिंह नांगपाल के रूप में की गयी है। मेट्रोपॉलिटन पुलिस ने बताया कि सिमरजीत की हत्या के सिलसिले में चार लोगों को हिरासत में लिया गया है। सिमरजीत की हत्या बुधवार तड़के लंदन के हाउंस्लो क्षेत्र में हुई थी। पुलिस की विशेषज्ञ अपराध इकाई के जासूसों ने कहा कि वे 17 वर्षीय सिमरजीत की दुखद मौत से जुड़ी घटनाओं की जांच जारी रखेंगे और सिख समुदाय को इस हत्या के लिए जिम्मेदार लोगों को न्याय के कटघरे में लाने के लिए कड़ी मेहनत करने का आश्वासन दिया।

छत्तीसगढ़ में 68.15 और मध्य प्रदेश में 71.11 फीसदी वोटिंग

एजेंसी

नयी दिल्ली। छत्तीसगढ़ में 67.34 प्रतिशत और मध्य प्रदेश में 72 प्रतिशत मतदान हुआ। निर्वाचन आयोग ने कहा कि मतदान संबंधी दस्तावेज की जांच के बाद अंतिम आंकड़े शनिवार तक सामने आएंगे। छत्तीसगढ़ में विधानसभा चुनावों के दूसरे एवं आखिरी चरण की 70 विधानसभा सीटों पर मतदान सम्पन्न हो गया। इस आखिरी चरण में जिन प्रमुख लोगों का राजनीतिक भविष्य ईवीएम में कैद हो गया उसमें उनमें मुख्यमंत्री भूपेश बघेल (पाटन), उप मुख्यमंत्री टी.एस.सिंहदेव (अम्बिकापुर), विधानसभा अध्यक्ष डा.चरणदास महंत(सक्ती), भाजपा के प्रदेश अरूण साव (लोरमी),जनता कांग्रेस की अध्यक्ष डा.रेणु जोगी(कोटा),केन्द्रीय मंत्री रेणुका सिंह(भरतपुर सोनहत) ,पूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं सांसद विष्णुदेव साय(कुनकुरी) और विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष नारायण चंदेल (जांजगीर)मुख्य है। इसके अलावा भूपेश सरकार में मंत्री रविन्द्र चौबे(साजा)गृह मंत्री ताम्रध्वज साहू(दुर्ग ग्रामीण)मंत्री अमरजीत भगत (सीतापुर)मंत्री

▸▸ छत्तीसगढ़ में अंतिम चरण की 70 सीटों पर मतदान संपन्न
▸▸ मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ,उप मुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव और भाजपा के अरुण साव का भविष्य इवीएम में कैद
▸▸ मध्य प्रदेश के सभी विस सीटों पर हुआ मतदान
▸▸ मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान बुधनी से, पूर्व सीएम अध्यक्ष कमलनाथ छिंदवाड़ा से और केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर दिमनी से आजमा रहे हैं किस्मत

उमेश पटेल(खरसिया)भाजपा के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व मंत्री बृजमोहन अग्रवाल(रायपुर दक्षिण)पूर्व विधानसभा अध्यक्ष प्रेम प्रकाश पांडेय(भिलाई नगर)पूर्व मंत्री अमर अग्रवाल (बिलासपुर)एवं पूर्व मंत्री अजय चन्द्राकर (कुरूद) का भी राजनीतिक भविष्य ईवीएम में कैद हो गया। 70 विधानसभा क्षेत्रों में कुल 958 उम्मीदवार अपना भाग्य आजमा रहे हैं,जिनमें 827 पुरूष, 130 महिला और एक तृतीय लिंग हैं। कांग्रेस एवं भाजपा के अलावा जनता कांग्रेस,आम आदमी पार्टी, कम्युनिस्ट पार्टी,बसपा समेत कई दलों के उम्मीदवार भी इनमें शामिल है।

मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव के लिए शाम छह बजे मतदान समाप्त हो गया और लगभग पांच करोड़ 60 लाख मतदाताओं में से कम से कम 72 प्रतिशत मतदाताओं ने वोट डाले। इक्का-दुक्का घटनाओं को छोड़कर मतदान प्रायः शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हो गया और इस तरह 2533 उम्मीदवारों की किस्मत इलेक्ट्रानिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) में कैद हो गयी।

मतों की गिनती तीन दिसंबर को होगा। राज्य में सभी 230 सीटों के लिए मतदान एक ही चरण में हुआ है। शाम को मतदान समाप्ति के पहले अनेक मतदान केंद्रों पर भी लंबी कतारें देखी गयीं। राज्य में मतदान के प्रति लोगों में काफी उत्साह दिखायी दिया।

नक्सली प्रभावित बालाघाट जिले के बैहर, लांजी और परसवाड़ा विधानसभा क्षेत्र के सभी मतदान केंद्रों पर, मंडला जिले के बिछिया विधानसभा क्षेत्र के 47 और मंडला विधानसभा क्षेत्र के आठ मतदान केंद्रों तथा डिंडोरी जिले के डिंडोरी विधानसभा क्षेत्र के अधीन आने वाले 40 मतदान केंद्रों पर वोटिंग तीन बजे समाप्त हो गयी थी। नक्सली प्रभावित क्षेत्रों में भी मतदान शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुआ। सोलहवीं विधानसभा के गठन के लिए हो रहे चुनाव में कुल 2533 उम्मीदवार मैदान में हैं, जिनमें 2280 पुरुष, 252 महिलाएं और एक अन्य (थर्ड जेंडर) प्रत्याशी शामिल हैं।

मुख्यमंत्री एवं भाजपा नेता शिवराज सिंह चौहान बुधनी से, पूर्व मुख्यमंत्री एवं प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ छिंदवाड़ा से और केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर दिमनी से, प्रहलाद पटेल नरसिंहपुर से और फग्गन सिंह कुलस्ते मंडला जिले के निवास से अपनी किस्मत आजमा रहे हैं। इसके अलावा भाजपा महासचिव कैलाश विजयवर्गीय इंदौर एक क्षेत्र से तथा चार सांसद, राज्य सरकार के दो दर्जन से अधिक मंत्री और अन्य प्रमुख नेताओं की किस्मत भी मतदान के बाद ईवीएम में कैद हो गयी। कुल 2533 प्रत्याशियों में भाजपा और कांग्रेस के 230-230 के अलावा बसपा के 181, सपा के 71 और 1166 निर्दलीय प्रत्याशी भी शामिल हैं। मतदाताओं की कुल संख्या पांच करोड़ 60 लाख 58 हजार से अधिक में दो करोड़ 87 लाख 82 हजार से ज्यादा पुरुष और दो करोड़ 71 लाख, 99 हजार से ज्यादा महिलाएं शामिल हैं। अन्य मतदाता यानी थर्ड जेंडर की संख्या 1292 है। राज्य में पंद्रहवीं विधानसभा के गठन के लिए वर्ष 2018 में हुए विधानसभा चुनाव में किसी भी दल को स्पष्ट बहुमत (116 सीट) नहीं मिला था। उस समय कांग्रेस 114 सीटों के साथ सबसे बड़े दल के रूप में उभरी थी और उसने अन्य दलों के साथ मिलकर दिसंबर 2018 में सरकार बनायी थी। भाजपा को 109 सीटों पर ही संतोष करना पड़ा था।

हमास ने अपहृत एक इजराइली महिला को मार डाला, शव बरामद

एजेंसी

तेल अवीव। फिलिस्तीन के आतंकवादी संगठन हमास ने सात अक्टूबर को इजराइल में हमलाकर बंधक बनाए गए 240 लोगों में से येहुदित वीस नामक महिला की हत्या कर दी है। गाजा के सुरक्षाबलों ने युद्ध के 42वें दिन शुक्रवार को यह दावा किया। गाजा पट्टी में अल शिफा अस्पताल में इजराइल के धावे के बीच उस मीडिया रिपोर्ट्स में इजराइल डिफेंस फोर्सेज (आईडीएफ) के हवाले से यह जानकारी दी गई। आईडीएफ ने कहा कि गाजा पट्टी में 65 वर्षीय येहुदित को सात अक्टूबर के हमले के दौरान हमास के आतंकवादियों ने दक्षिणी इजराइल के किबुत्ज बेरी स्थित उनके घर से सात अक्टूबर को उनका अपहरण किया गया था। इस दौरान हमास ने उनके पति श्मुलिक वीस की हत्या कर दी थी। येहुदित वीस पांच बच्चों की मां थीं और किंडरगार्टन में काम करती थीं। बाद में आतंकवादियों ने गाजा पट्टी में येहुदित की हत्या कर दी। उसका शव अल शिफा अस्पताल से सटी एक इमारत में मिला है। अफसोस है कि सुरक्षाबल समय रहते उस तक नहीं पहुंच पाए। इजराइली सैनिक अल शिफा अस्पताल में मौजूद हैं। हमास के गुप्त ठिकानों पर धावा बोला गया है। एक अन्य रिपोर्ट में कहा गया है कि इस अस्पताल परिसर के आसपास ईरान समर्थित सशस्त्र समूह फिलिस्तीनी इस्लामिक जिहाद की सैन्य शाखा इजराइली सुरक्षाबलों को चुनौती दे रही है। इजराइल के सुरक्षा बलों ने अस्पताल के अंदर सुरंग से हमास की लगभग एक दर्जन बंदूकें, एक ग्रेनेड, सुरक्षात्मक जैकेट और वर्दियां बरामद की हैं। इस बीच आईडीएफ ने कहा है कि शिफा अस्पताल को 4,000 लीटर से अधिक पानी और 1,500 लोगों को भोजन उपलब्ध कराया गया

हमास के खिलाफ जारी कार्रवाई के बीच इजराइल ने अभियान का विस्तार करते हुए गाजा के दक्षिण भाग में व्यापक अभियान चलाने के संकेत दिए हैं। इस संबंध में इजराइली सैन्य बल ने दक्षिणी गाजा के कुछ हिस्सों से भागने की चेतावनी देते हुए पर्चे गिराए हैं। वहीं, इजराइली सैनिकों ने उत्तर में शिफा अस्पताल में तलाशी जारी रखी जो बुधवार तड़के शुरू हुई थी। इजराइली सैनिकों ने कुछ बंदूकें दिखाते हुए कहा कि ये एक इमारत में मिली। हालांकि उन्होंने अभी तक हमास के केंद्रीय कमान सेंटर होने का कोई सबूत जारी नहीं किया है। वहीं हमास और गाजा के सबसे बड़े अस्पताल के कर्मचारियों ने इन आरोपों से इनकार किया है।

हरियाणा : निजी क्षेत्र में 75 प्रतिशत आरक्षण रद्द

चंडीगढ़। पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय ने हरियाणा राज्य के निवासियों को निजी क्षेत्र की नौकरियों में 75 प्रतिशत आरक्षण प्रदान करने वाला हरियाणा सरकार का 2020 का एक कानून शुक्रवार को रद्द कर दिया।

फैसला न्यायमूर्ति जी एस संधावालिया और न्यायमूर्ति हरप्रीत कौर जीवन ने सुनाया। वरिष्ठ अधिवक्ता अक्षय भान ने कहा कि पीठ ने पूरे अधिनियम को रद्द कर दिया। याचिकाकर्ताओं के वकीलों में शामिल भान ने कहा कि यह दलील दी गई कि हरियाणा राज्य स्थानीय उम्मीदवारों का रोजगार अधिनियम, 2020 संविधान के अनुच्छेदों 14 और 19 का उल्लंघन करता है। अदालत ने राज्य के अभ्यर्थियों को निजी क्षेत्र की नौकरियों में 75 प्रतिशत आरक्षण प्रदान करने वाले अधिनियम के क्रियान्वयन के खिलाफ कई याचिकाएं स्वीकार की थीं। इसमें अधिकतम 30,000 रुपये तक के सकल मासिक वेतन या भत्ता देने वाली नौकरियां शामिल थीं।

अक्षरा सिंह का नया गाना छठी मईया करिहा दुलार रिलीज

मुंबई। भगवान भास्कर को समर्पित लोक आस्था का महापर्व छठ पर भोजपुरी सिंगर अक्षरा सिंह का गाना छठी मईया करिहा दुलार... रिलीज हो गया है। अक्षरा सिंह ने इस बार छठ गीत के जरिए उन्होंने एकबार फिर से अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन किया है। उन्होंने छठ व्रत की लोकधुन को पिरोते हुए गीत छठी मईया करिहा दुलार... लेकर आई हैं, जिसे कंपोज प्रजक्ता शुक्रे ने किया है। दोनों की जोड़ी ने इस गीत को और भी खास बना दिया। गाने में अक्षरा ने छठ मां की महिमा को नए अंदाज में प्रस्तुत किया है। इस गाने के लिए अक्षरा सिंह के साथ गीतकार मनोज यादव ने भी मेहनत की है।

पूर्व विधायक की 72 करोड़ की संपत्ति जब्त

नयी दिल्ली। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने शुक्रवार को कहा कि उसने एक धन शोधन जांच के हिस्से के रूप में उत्तर प्रदेश के पूर्व विधायक विनय शंकर तिवारी और उनके परिवार के सदस्यों की 72 करोड़ रुपये से ज्यादा की संपत्ति जब्त की है। ईडी कथित तौर पर 750 करोड़ रुपये की बैंक ऋण धोखाधड़ी से जुड़े धन शोधन मामले की जांच कर रही है। संघीय एजेंसी ने बताया कि धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के प्रावधानों के तहत उत्तर प्रदेश के लखनऊ, महाराजगंज और गोरखपुर जिलों में 27 अचल संपत्तियां अस्थायी रूप से जब्त की गई हैं। दिवंगत मंत्री और गोरखपुर के बाहुबली हरि शंकर तिवारी के बेटे विनय तिवारी ने बसपा की टिकट पर उत्तर प्रदेश विधानसभा की चिल्लूपार सीट का प्रतिनिधित्व किया था। हालांकि बाद में विनय तिवारी

बैंक धोखाधड़ी मामले में विनय शंकर तिवारी के खिलाफ इडी ने की कार्रवाई

समाजवादी पार्टी में शामिल हो गए थे। ईडी ने कहा कि जब्त की गई संपत्तियां पूर्व विधायक विनय तिवारी, उनके परिवार के सदस्यों और रिश्तेदारों के नाम पर पंजीकृत हैं, जो आरोपी कंपनी ह्यगंगोत्री एंटरप्राइजेज लिमिटेडह्ल के निदेशक, प्रवर्तक और गारंटर थे। ईडी ने बताया कि अस्थायी रूप से जब्त संपत्ति का कुल मूल्य 72.08 करोड़ रुपये है। ईडी केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) की प्राथमिकी पर जांच कर रही है। ईडी ने आरोप लगाया कि ह्यगंगोत्री एंटरप्राइजेज लिमिटेडह्ल ने अपने प्रवर्तकों, निदेशकों और गारंटरों की मिलीभगत से बैंक ऑफ इंडिया के नेतृत्व वाले सात बैंकों के समूह से धोखाधड़ी कर 1,129.44 करोड़ रुपये का ऋण प्राप्त किया था।

अमृतसर में एएसआइ की गोली मारकर हत्या

अमृतसर। पंजाब पुलिस के एक सहायक उपनिरीक्षक (एएसआई) की शुक्रवार को कुछ अज्ञात हमलावरों ने गोली मारकर हत्या कर दी।

पुलिस ने बताया कि एएसआई सरूप सिंह का शव खानकोट गांव में मिला और उनके सिर पर गोली लगने का निशान था। सिंह गुरुवार की रात अपने घर से कुछ आधिकारिक दस्तावेजों के साथ नवा-पिंड पुलिस थाने के लिए निकले थे जहां वह तैनात थे। पुलिस के अनुसार, एक व्यक्ति ने शुक्रवार सुबह शव पड़े होने की सूचना विभाग को दी। सिंह की मौत सिर में एक गोली लगने से हुई है।

टनल से श्रमिकों को निकालने के लिए आधी सुरंग तैयार

एजेंसी

उत्तरकाशी। यमुनोत्री राष्ट्रीय राजमार्ग पर चारधाम आलवेदर रोड परियोजना की सुरंग में छह दिन से फंसे 40 श्रमिकों को सकुशल बाहर निकालने के लिए शुक्रवार रात तक आधी निकासी सुरंग (30 मीटर) तैयार कर ली गई। श्रमिकों को बचाने के लिए 900 मिमी व्यास के स्टील पाइपों से करीब 60 मीटर लंबी निकासी सुरंग बननी है। इस कार्य में लगातार चुनौती पेश आ रही है, लेकिन त्वरित गति से उनका समाधान भी निकाला जा रहा है। बचाव अभियान रुकने न पाए, इसके लिए बैकअप के तौर पर मध्य प्रदेश के इंदौर से एक और औगर मशीन को एयरलिफ्ट कर सिलक्यारा लाया जा रहा है, जो शनिवार तक यहां पहुंच जाएगी। साथ ही बचाव कार्य में जुटी एजेंसियों ने सुरंग के अंदर पहुंचने

के लिए प्लान-सी के तहत वर्टिकल और हारिजांटल मार्ग बनाने की दिशा में भी काम शुरू कर दिया है। उत्तरकाशी के सिलक्यारा में निर्माणाधीन साढ़े चार किमी लंबी सुरंग में भूस्खलन के बाद रविवार सुबह से फंसे 40 श्रमिकों को बचाने के लिए नई दिल्ली से लाई गई अमेरिकन ऑगर ड्रिलिंग मशीन से गुरुवार सुबह निकासी सुरंग बनाने का काम शुरू हुआ था और देर रात तक 18 मीटर सुरंग तैयार कर ली गई थी।

शुक्रवार को ड्रिलिंग के दौरान बोल्डर आ जाने से कार्य प्रभावित हुआ। धीरे-धीरे बोल्डर को काटा गया, जिसके बाद कार्य ने फिर गति पकड़ी। शाम तक कुल 24 मीटर निकासी सुरंग तैयार कर ली गई थी, जबकि रात तक आधी सुरंग तैयार हो गई। राष्ट्रीय राजमार्ग एवं अवसंरचना विकास निगम लिमिटेड (एनएचआइडीसीएल) के निदेशक अंशु मनीष खलको ने बताया कि शाम तक छह-छह मीटर लंबे चार पाइप बिछाने के बाद

▸▸ बैकअप के लिए इंदौर से मंगायी गयी एक और मशीन

पांचवां पाइप जोड़ दिया गया था। इसके बाद मशीन में तकनीकी खराबी आ गई। उन्होंने बताया कि मशीन के बेयरिंग बार-बार क्षतिग्रस्त हो रहे हैं। तकनीकी टीम मशीन में आ रही खामियों को लगातार दूर कर चालू कर रही है। पाइप बिछाने का कार्य लगातार चलता रहे, इसके लिए इंदौर से दूसरी मशीन लाई जा रही है। एनएचआइडीसीएल के निदेशक अंशु मनीष खलको ने बताया कि प्लान-सी के अंतर्गत वर्टिकल और हॉरिजॉन्टल मार्ग के विकल्प तलाशने को भूविज्ञानियों की टीम ने सर्वे शुरू कर दिया है। उन्होंने बताया कि श्रमिक जिस स्थान पर फंसे हैं, वह हिस्सा वर्टिकल विकल्प के एक स्थान से 103 मीटर की दूरी पर है।

सेंसेक्स 188 अंक टूटा निफ्टी भी नुकसान में

मुंबई। शेयर बाजारों में शुक्रवार को दो दिन की तेज पर विराम लगा और बीएसई सेंसेक्स में 188 अंक की गिरावट आई। वैश्विक बाजारों में मिले-जुले रुख के बीच बैंक, वित्तीय और ऊर्जा शेयरों में भारी बिकवाली से बाजार नुकसान में रहा।

सेंसेक्स 187.75 अंक यानी 0.28 प्रतिशत की गिरावट के साथ 65,794.73 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान एक समय यह 342.74 अंक तक लुढ़क गया था। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी भी 33.40 अंक यानी 0.17 प्रतिशत की गिरावट के साथ 19,731.80 अंक पर बंद हुआ। स्टेट बैंक में सर्वाधिक 3.64 प्रतिशत की गिरावट आई। बजाज फाइनेंस, आईसीआईसीआई बैंक, बजाज फिनसर्व, इंडसइंड बैंक, इन्फोसिस, कोटक महिंद्रा बैंक, विप्रो और रिलायंस इंडस्ट्रीज भी नुकसान में रहे।

वर्मा प्रेस प्रा० लि० राँची
VERMA PRESS
Verma's® Today®
शृंखला की निम्न पुस्तकें सर्वत्र उपलब्ध हैं—

Class - X		Class - IX	
Hindi	₹ 140	Hindi	₹ 140
English	₹ 140	English	₹ 140
Mathematics	₹ 140	Mathematics	₹ 140
Science	₹ 140	Science	₹ 140
Social Science	₹ 140	Social Science	₹ 140
Sanskrit	₹ 120	Sanskrit	₹ 120
Hindi – B	₹ 140	Hindi – B	₹ 80
Hindi Vyakaran– II	₹ 120	Hindi Vyakaran– II	₹ 120
English Grammar II	₹ 120	English Grammar II	₹ 120
Sanskrit Vyakaran–II	₹ 100	Sanskrit Vyakaran–II	₹ 100
Hindi Practical	₹ 55	Hindi Practical	₹ 55
English Practical	₹ 55	English Practical	₹ 55
Maths. Practical	₹ 65	Maths. Practical	₹ 55
Science Practical	₹ 65	Science Practical	₹ 70
S. Science Practical	₹ 65	S. Science Practical	₹ 65
Sanskrit Practical	₹ 55	Sanskrit Practical	₹ 55
Maths. Practical (Combined)	₹ 90	Maths. Practical (Combined)	₹ 75
Science Practical (Combined)	₹ 90	Science Practical (Combined)	₹ 75
English Medium		English Medium	
Mathematics	₹ 200	Mathematics	₹ 130
Science	₹ 200	Science	₹ 200
Social Science	₹ 200	Social Science	₹ 130
Maths. Practical	₹ 80	Maths. Practical	₹ 80
Science Practical	₹ 80	Science Practical	₹ 80
S. Science Practical	₹ 80	S. Science Practical	₹ 80

मिलते जुलते नाम वाली नकली पुस्तकों से सावधान !